बैगा गीत

अवसरानुकूल पारम्परिक गीत

भागवती रठुड़िया
वसन्त निरगुणे

बैगा गीत

अवसरानुकूल पारम्परिक गीत

भागवती रठुड़िया
वसन्त निरगुणे

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – निदेशक
आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स
भोपाल-462002 फोन-0755-2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com,
mptribalmuseum@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

प्रकाशन – वर्ष 2013

मूल्य – रु. 50/- (रुपये पचास केवल)

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण – मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

- पुस्तिका से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल होगा।
- पुस्तक में छपी सामग्री के किसी भी माध्यम द्वारा उपयोग के पूर्व अकादमी से अनुमति लेना आवश्यक होगी।
- पुस्तिका में प्रकाशित समस्त सामग्री संकलनकर्ता, लेखक की अपनी है, आवश्यक नहीं है कि अकादमी इससे सहमत हो।

भागवती जब गाती है .....

भागवती गीत गाती है, नाचती है और एक बैगा जीवन भरपूर जीती है। वह रेडियो पर बैगा गीत गाने वाली पहली महिला है। भोपाल के सांस्कृतिक मंचों पर भागवती बैगा गीत गाती है। बैगानी करमा और परघौनी नाचती है। भागवती बचपन से नाचती-गाती है। उसने ये गीत और नृत्य अपनी माँ से सीखे हैं। माँ ने अपनी माँ से सीखे थे। इस तरह भागवती न जाने कब से गा रही है। न जाने कितने जन्मों की स्मृतियाँ भागवती का पीछा कर रही हैं। भागवती कहती है- मैं गोत्र से रठुड़िया हूँ। ससुराल का गोत्र सख्याम है। आगे कहती है- हमारी जाति में एक गोत्र में विवाह नहीं होते। एक गोत्र के लोग भाई-बहन होते हैं, जिसे 'दूधा भाई' कहते हैं। लेकिन मामा-बुआ के लड़के-लड़की में विवाह हो जाता है। बल्कि यह होता है कि पहला रिश्ता ही मामा या बुआ के यहाँ ढूँढा जाता है। भागवती कहती है- यह हमारी जाति की पुरानी परम्परा है। इसलिए बैगा गीतों में मामा के लड़के के बारे में अक्सर जिक्र आता है। भागवती बैगा गीत गा रही है। गीत के बोल एक राग के साथ उठाती है, बीच में रोककर कहती है- यह करमा आय साब। ये ददरिया है। ये रीना है। ये माटी खनौनी गीत आय। ये कलसा गोदानी। भागवती से किसी संस्कार गीत के बारे में पूछिये, एक पल में उसे गीत याद आ जायेगा और वह स्वर साधकर गाना शुरू कर देती है। मैंने उसे विवाह गीत गाने को कहा- उसने बैगा विवाह का एक ददरिया गाया। यह ददरिया गीत भाँवर के समय गाया जाता है। भागवती गाती है-

गावे गाना ला।
सीसे नागिन बहिस गा धरती माता ला।
धरती माता बहिस अनेदाई ला।
अनेदाई समोखिस सारी दुनिया ला।
चाँद सूरज नर-नारी दोनों देथय उजेला ला।
हौ रे हौ रे जलरानी, पवन वरोवय रे दोस।

भागवती इस गीत का अर्थ बताने लगती है- धरती माता को शेष नाग फन पर धारण किये है और धरती माता अन्नपूर्णा माई को धारण करती है, अन्नमाता सारी दुनिया को अपने में समेटे है, जीव मात्र को अन्न ही पोषित करता है। चाँद- सूरज दोनों स्त्री-पुरुष सारे संसार को प्रकाश देते हैं। पृथ्वी पर जलरानी देवी हवा को चलने के लिये मजबूर करती है। गीत का अर्थ कहते समय भागवती स्वयं में एक बैगा दर्प में दिपदिपाने लगती है, उसके चेहरे पर बैगाओं की वह आदिम चमक झलकने लगती है, उसके माथे के गुदने जैसे दमकने लगते हैं। उसकी आँखों में बैगाओं का जातीय गौरव प्रकट होने लगता है। इतना बैगानी ताप और ऊर्जा मैं भागवती में पहली बार महसूस कर रहा था। जैसे इस बैगा गीत की एक-एक पंक्ति मेरे भीतर उतर रही थी। इस गीत को जरा गौर से देखने की जरूरत है। भागवती ने इसे परम्परा से पाया है। कण्ठ से कण्ठ गीत सीखने की परम्परा आदिम काल से चली आई है। इसलिए इस गीत की अनुगूँजे बहुत पीछे के मनुष्य की स्मृति तक जाती है। संभवतया वैदिक संस्कृति के पूर्व के आदिम समय को स्पर्श करती है। यह गीत बैगाओं की ऐसी प्रार्थना है, जो सृष्टि की प्रथम कामना बन जाती है। मनुष्य के लिये धरती से बढ़कर कोई प्रार्थना नहीं हो सकती है। उसी पर तो मनुष्य के पैर टिके हैं। वही तो मनुष्य और जीवों के

लिये अन्न उपजाती है। चाँद-सूरज ही तो प्रकाश और ऊर्जा का स्रोत हैं। जल ही हवा चलने का कारक है। विज्ञान की दृष्टि से भी देखें तो आकाश, जल, पृथ्वी, सूर्य-चन्द्र, अग्नि एक अन्योन्याश्रित क्रम बनाते हैं। जहाँ धरती और अन्न की पहले पूजा और प्रार्थना की जाती हो, वह आदिम बैगा समाज आज भी अपनी उन स्मृतियों में जीता है। ये प्रार्थना मुझे वेदों की ऋचाओं की तरह लगती है। ऋग्वेद में सूर्य, पृथ्वी, आकाश के गीत गाये गये हैं। अन्न की कामनाएँ की गई हैं। संभवतया वैदिक ऋषियों ने आदिम गीतों की अनुगूँजें सुनी होगी और उसे ऋचाओं के रचने का आधार बनाया होगा। मैं भागवती से पूछता हूँ- तुमने वेदों का नाम सुना है। वह कहती है- मुझे नहीं मालूम वेद क्या है? पर, मैं इतना जानती हूँ, धरती पर कोई ऋषि-मुनी रहे होंगे, उन्होंने हमारे जंगल के गीत सुने होंगे, उन्हीं को उन्होंने लिख दिये होंगे। भागवती कितनी बड़ी बात सहजता से कह गई थी कि मैं आश्चर्य में पड़ गया। मैंने उससे पूछा- तुम स्कूल गई हो। उसने कहा- 'छठी-सातवीं तक पढ़ी हूँ साब। लिखना-पढ़ना जानती हूँ। बैगाओं के गीत लिख रही हूँ। एक-एक गीत गा-गाकर याद करती हूँ और लिखती हूँ। एक सौ से ऊपर गीत लिख दिये हैं, जैसे बने उनके अर्थ भी कर रही हूँ। मैं ज्यादा नहीं जानूँ साब। 'हम तो बैगा आय अरू कच्छू नाय।' भागवती गा रही है, मैं सुन रहा हूँ, उसकी आवाज में खास जादुई असर। एक आकर्षण। वह जबलपुर रेडियो पर बैगा गीत गाने जाती है। उसके साथ चार और बैगा महिलाएँ होती हैं। वह करमा, परघौनी, सुआ नाच में हिस्सा लेती है। नाचते-नाचते समूह में गाती है। हर पर्व-त्योहार पर वह गाती और नाचती है। गीतों को तरोताजा करती है। कण्ठ में सरस्वती बैठाती है। गीत उसका जीवन है। कोई आदिवासी बिना गाये और नाचे नहीं रह सकता। मुझे लगता है, वे बने ही गीत-गाने और नाचने के लिये। वे गाँव में माँदर की पूजा करते हैं, माँदर को जगाते हैं। विद्या की देवी माँ शारदा का सुमिरण करते हैं। उसे कण्ठ में विराजने की प्रार्थना करते हैं।

का मान सरेसती, तोरे जनामन करमा भाये।
एहे का मान लये, अवतरे करमा भाये।
कनठन सरसेती तोर जनामन करमा भाये।
एहे जीभियन लाये अवतारे करमा भाये।
माहोरिन सरसेती तोरे जनामन करमा भाये।
एहे करमा डाँण म लाये अवतारे करमा भाये।

भागवती कहती है- यह करमा एक गाँव से दूसरे गाँव नाचने जाते समय गाया जाता है। यह सुमिरन है, जिसमें सरस्वती देवी (महारानी) की जन्म कथा गाई गई है।

हे सरस्वती! तुम्हारा जग में बहुत मान-सम्मान है। हम तुम्हारा स्मरण करते हैं। हे माता! तुमने इस धरती पर किस तरह जन्म लिया। तुम्हारा अवतरण किस प्रकार हुआ। यह बताओ।

सरस्वती कहती हैं- मेरा जन्म माँदर से हुआ। मेरा अवतरण तुम्हारे नाचने के आँगन में गड़ी करम वृक्ष की डाल के आसपास हुआ।

करमा गाने वाले पूछते हैं- तुम हमारे करम वृक्ष के नाचने के आँगन में भली पधारी हो। पर तुमको इस 'खरना' (नाचने का स्थान) में कौन गायेगा। तुम कहाँ बैठोगी।

तब सरस्वती कहती हैं- अब मैं तुम्हारी जीभ पर उतरूँगी। कण्ठ में बिराजूँगी। जीभ पर खेलूँगी और गाने वाले कण्ठ से गायेंगे। इस तरह मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगी।

बैगा विवाह में सारी सृष्टि को शामिल करना चाहते हैं। दूल्हे की माँ कहती है- दोसी। तुम धरती माता को आमंत्रण देना भूल मत जाना। धरती ने हम पर बहुत उपकार किये हैं। ठाकुर देव को आमंत्रित करना। कोई छूट ना

जाय। सारे ग्राम और जंगल के देवी-देवताओं को आमंत्रित करना। आज हमारे यहाँ बेटे या बेटी का विवाह है। भागवती गाती है-

निवतो की निवतो दोसी धरती अर माता।
निवतो की निवतो दोसी ठाकुर देवता।
निवतो की निवतो दोसी खेरो महरानी।
तरी नानार नानी, तरी नानार नानी,
तरी नानार, नाना रे नान।।

सभी देवी-देवता, धरती माता ऐसा आशीर्वाद दें, जैसे दूल्हा और दूल्हन दो हंसों का जोड़ा हों, जैसे कबूतर और कबूतरी का जोड़ा हों। ऐसी जोड़ी सदैव बनी रहे। आदिम समाजों में देवी-देवता उनके सहपड़ोसी होते हैं। गाँव की सीमा पर, गाँव के बाहर, जंगल के मुहाने पर, जंगल के भीतर, नदी- पहाड़, पेड़-पौधे, घर-आँगन सब जगह उनके देवी-देवता विराजमान होते हैं। देवों का आकार-प्रकार नहीं, निराकार रूप में सारा आदिम देवकुल उनके आसपास ही उपस्थित रहता है। भागवती कहती है- हमारे देवी-देवता पेड़-पौधों में साँस लेते हैं। हम उनसे रोज बतियाते हैं। हमारे गुनिया-बैगा उनके प्रतिनिधि हैं। हम बैगा उन्हीं की आज्ञाएँ मानकर चलते हैं। पूरा समाज उनकी आज्ञाएँ मानता है। जब वे पूजा करने को कहते हैं, तब हम पूजा करते हैं। उत्सव मनाते हैं। बीमारियों और बाधाओं को दूर भगाने में उन्हीं की मदद लेते हैं। देवी-देवताओं के प्रकोप से डरते हैं और नाच-गाकर उन्हें प्रसन्न करने का यत्न करते हैं। हमारे धर्म का कोई नाम नहीं हैं। देवी-देवता ही हमारा धर्म है, वे जो कहते हैं, वही करते हैं। इसीलिए हमारे देवता सदैव साथ में रहते हैं। जब याद करो, तब हाजिर हो जाते हैं। एक बात और बताना चाहती हूँ कि हमारा पूरा बैगा समाज बाहरी बाधाओं पर विश्वास करता है। हर जगह भूत-प्रेत का वास हो सकता है, जो आदमी को पकड़ते हैं और हमारे गुनिया-ओझा उनको तंत्र-मंत्र से भगाने का काम करते हैं। इन बातों को सुनकर मुझे भागवती को अपनी जाति के बारे में निधड़क कहने और समझने की जबर्दस्त जिज्ञासा और साहस का पता लगता है और मैं मन ही मन उसकी मेधा को प्रणाम किये बगैर नहीं रहता।

भागवती कहती है- बैगा लड़की का मिजाज कुछ अधिक श्रृंगार प्रिय होता है। उसकी आँखों में कुछ प्रेम झलकने लगता है। तब उसका मन काम में नहीं लगता। वह दिन-रात अपने को सजने-सँवरने में लगाती है। मैं पूछता हूँ ऐसा कोई गीत तुम्हें याद है। हाँ, है ना साब, रीना गीत- भागवती चहककर कहती है। सुनाओ, भागवती सुनाने लगती है-

री-रीना- रीना रे मोर, बोलय चिरैया।
कि री-रीना-रीना रे मोर बोलय चिरैया।।
आग नहीं बारस नोनी
आल कुँवारी, बाल कुँवारी
पीठ मा लोरय बेनी।
आँखी मा काजर
माथे मा सिन्दूर
झमकाय पनेहारिन।
कि री-रीना रे मोर बोलय चिरैया।।

गीत पूरा गाने के बाद भागवती गीत का अर्थ बताने लगती है- पिंजरे का तोता बोलता है- अरे लड़की! तूने चूल्हे की आग नहीं जलाई। कुँए से पानी लेने नहीं गई। घर के बरतन नहीं माँजे। तुम तो श्रृंगार में मगन हो। तुम्हारी उम्र ही ऐसी है। आँख में काजल डालकर, माथे में सिन्दूर भरकर, पीठ पर नागिन जैसी चोटी गूँथकर इधर-उधर लहराती रहती हो। पूरा श्रृंगार करके जब तुम पानी भरने के लिये निकलती हो, तो तुम्हारा अंग-अंग झलकने लगता है। तोता बोल रहा है।

मैंने भागवती से पूछा- सबसे अधिक ददरिया गाया जाता है। घर में, रास्ते में, खेत में, हर जगह ददरिया गाया जाता है। जहाँ दो-चार महिलाएँ मिली, दो-चार लड़के मिले। ददरिया चालू हो जाता है। ददरिया इतना क्यों गाया जाता है। भागवती कहती है- ददरिया खूब गाया जाता है, क्योंकि उसमें प्रेम की बातें होती है। सवाल-जवाब होते हैं। दो लाईन में गाकर ददरिया पूरा हो जाता है। उसमें मन की बात कही जाती है। कहीं भी, कोई भी, किसी बात पर ददरिया बनाकर गा सकता है। खेतों में धान बोते समय लड़के-लड़की का ददरिया बड़ा मजेदार होता है। उसमें सारी बातें गीत में ही कही जाती हैं। तुमको भी ऐसे ददरिया याद होंगे - सुनाओ- मैंने कहा। भागवती हँसते हुए ददरिया गाने लगती है-

लड़का- *नहि खातेब मछड़ी, नहि तो खातेंव भात।*
तोर माया के जो मारे, बसी तो जातेंव रात।।
लड़की - *खाय लेबी मछड़ी, खाई तो लेबी भात।*
का होहि रे जवाँराय, बसी तो जाबी रात।।

ददरिया में बड़ी प्रेम भरी मनुहार होती है। लड़का कहता है- न मैं मछली खाऊँगा और न भात। मैं तो तुम्हारे प्यार के खातिर तुम्हारे घर में रात रूकना चाहता हूँ।

लड़की कहती है- अरे! तुम मछली भी खा लेना और भात भी खा लेना। कोई हर्ज नहीं है, पर तुम रात भी रूक जाओगे तो क्या होगा? कई बार ददरिया गाते-गाते लड़का-लड़की भाग जाते हैं। यह बात कहते-कहते भागवती थोड़ी शरमा जाती है। एक क्षण रूककर कहती है- प्यार तो ऐसा ही होता है। लड़का-लड़की रूक नहीं सकते।

मैंने पूछा- बैगा लड़के-लड़कियों के साथ ऐसा होता है। भागवती कहती है- तभी तो गीत कहता है, यदि ऐसा अनुभव नहीं होता, तो गीत कैसे बनता? मैं भागवती की आँखों में अनुभव का एक विशाल समुद्र हिलौरे लेता देखता हूँ।

मैं महसूस कर रहा था, भागवती के माध्यम से मेरे समक्ष एक आदिम बैगा संसार खुल जाता है। भागवती से बात करने का मतलब एक सम्पूर्ण बैगा जीवन से जैसे गुजरना होता है। वह बैगा जो समकाल में भी एक आदिम जीवन जीता है। यादों से भी पुरानी यादों में दिन-रात विचरता है। उसकी सुधियाँ अपनी हैं। उसकी स्मृतियाँ उसे न जाने कितनी पुरानी कालों की परतों में ले जाती हैं। बैगा जीवन की वे स्मृतियाँ उनके जंगल जीवन की है- प्रकृति के तादात्म्य की है। बैगाओं को अपनी परम्पराओं से प्यार है। तभी वे प्रकृति के गीत गाते थकते नहीं है। वे प्रकृति के लिये नाचते-गाते हैं। उसकी पूजा में अपनी आस्था समर्पित करते हैं। उनके आजा-आजी नाचते-गाते थे, वे आज भी नाचते-गाते हैं।

आज से कोई तीन दशक पहले बैगाओं पर काम करते समय मुझे धुरकुटा की बुजुर्ग आँधियारो बैगा से एक गीत सुनने को मिला था। उसे मैंने उसी समय नोट किया था। आज भागवती के बैगा गीतों को समझने का अवसर मिला, तो मैं उस गीत को आप तक पहुँचाने का लोभ संवरण नहीं कर पाया हूँ। परम्परा से व्यवस्था का प्रतिरोध बैगाजन प्रत्यक्ष में कभी नहीं करते हैं, लेकिन वे गीत, कथा, पहेली, कहावत आदि में विरोध दर्ज करते हैं। मुझे ऐसा लगता है, प्रत्यक्ष प्रतिरोध से केवल प्रतिरोध ही उपजता है। प्रतिरोध से कोई राग-अनुराग नहीं पैदा होता है, बल्कि अहंकार को ही वह पल्लवित करता है। बैगा मूल रूप से इस बात को जानते ही नहीं, जीते हैं। एक उदाहरण है-

चारों खूँट चौरासी फिरे
गीधन के सम्मान।

जहाँ बैठे राजवारे।
घोड़न के पहार देखे, ऊँटन की अटारी।
हाथिन के तो पंजा देखे, मते है लराई।।
सिंहासने बैठे राजवारे

युद्ध के बाद चौरासी लाख भूत-पिशाच घूम रहे हैं। गिद्धों का सम्मान हो रहा है। लाशों के ढेर लगे हैं। उस पर राजा सिंहासन जमा कर बैठा है। मरे हुए घोड़ों के पहाड़ लगे हैं। ऊँटों की तो अटारियाँ बन गई हैं। हाथियों के हजारों कटे हुए पैर पड़े हैं। राजा सिंहासन पर बैठा है। जंगल में रहने वाले बैगा की यह तीखी आवाज है। जो राज और राजा को कैसा अनुभव करता है। ऐसी कई अनूठी आवाजें भागवती बैगा के इन गीतों में महसूस की जा सकती है।

भागवती जब गाती है तो ऐसा लगता है, जैसे पूरा बैगा समाज गा रहा हो। आज भागवती बैगाओं की आवाज बन गई है। उसकी आवाज में बैगाओं की समस्त अनुगूँजें मुखर हो गई हैं। मुझे उन अनुगूँजों को सुनने-समझने का अवसर मिला। इसके लिये आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी का आभार ।

- वसन्त निरगुणे

एच. 7 उमा विहार, नयापुरा, कोलार रोड,
भोपाल (मध्यप्रदेश)
मो. 9479539358

अनुक्रम

अध्याय – 1
जन्म गीत / 17

अध्याय 2
विवाह गीत / 20

अध्याय – 3
मृत्यु गीत / 58

अध्याय – 4
पर्व गीत / 60

अध्याय – 5
करमा गीत / 78

अध्याय–6
ददरिया गीत / 117

अध्याय – 7
अन्य / 125

अध्याय - 1

जन्म गीत

नावा जीवन

खेलत कूदन हँवय आवय हो,
हाथे धरे गोटी गुलेल।।
नावा जीवन आवै हंसा,
नावा नाम धरावैं।
नोंहिक नाम कमावैं।
करत्थै खुलेल ।।
हाथे धरे गोटी गुलेल।।
मुठी बाँध के आये हंसा,
धरती मा पधारे।
अच्छा-अच्छा काम करबी।
अच्छा नाम कमाबी।
हाथे धरे गोटी गुलेल।।

शब्दार्थ- **हँवय** = हुआ, **गोटी गुलेल** = पत्थर और गुलेल, **करत्थै** = करते हैं, **खुलेल** = उल्लेख, **नोंहिक** = जो नहीं, **हंसा** = जीव, बालक, **मुठी बाँध के** = निश्चय करके, **करबी** = करेगा, **कमाबी** = कमायेगा, **छाका** = महलोन पत्ते का दोना।

यह बच्चे के जन्म का छठी गीत है। बैगा जनजाति बच्चे के जन्म के छठवें दिन 'छट्टी' मनाते हैं। उस दिन बैगा सुईन दाई आती है। आसपास की महिलाओ को घर वाले आमंत्रित करते हैं। इस समय परम्परा अनुसार खुशी से दारू बाँटी जाती है। जो पाँच बोतल दारू होती है, जिसे नेग की दारू कहते हैं। सभी महिलाएँ जिस स्थान पर बच्चा जन्म लेता है, उस स्थान को गोबर से लीपकर पवित्र बनाती हैं। उस पर जलता मिट्टी का दीया रखती हैं और उस जगह पर बोतल से दारू चुहाती है। सबको छाके में थोड़ी-थोड़ी दारू डालकर पिलाती हैं। तब यह गीत गाया जाता है।

यह जो नया जीव (हंसा) जन्म लिया है। माँ के पेट में नौ महीने खेलते-कूदते इस धरती पर आया है। हमें खुशी है। यह जब बड़ा होगा, तब हाथ में पत्थर और गुलेल रखकर जंगल में जायेगा और वहाँ चिड़िया का शिकार कर हमें खिलायेगा। इस धरती पर मुट्टी बाँधकर यानी निश्चय करके आया है तो अच्छा काम करेगा और अच्छा नाम कमायेगा। महिलाएँ यह गीत गाती जाती हैं और खुशी से दारू पीती जाती हैं।

करमा

मोर लालू गोदी मा बिराजय,
आँगन गली-खोर खेलय रे । टेक

आठ महना मोर लालू पेट भीतर खेलय।
नौ कहना मा मोर लालू गोदी मा बिराजय।।
आँगन गली खोर खेलय रे ... ।

चार महना मा मोर लालू छातिक भारे स लगय।
नौ महना मा मोर लालू बैठकी सीखय ।।
आँगन गली खोर खेलय रे ... ।

एक बैगा महिला के विवाह के बाद बहुत दिनों तक कोई बाल-बच्चा नहीं हुआ। उसने कई मान-मनौती की, तब भी उसकी गोद खाली ही रही। अंत में वह एक बैगा गुनिया के पास गई। गुनिया वेदाई की। उसे खाने के लिये जंगल की जड़ी-बूटी दी। तब उसे नौ महीने में प्रौढ़ावस्था में पुत्र प्राप्त हुआ। उसने उसका नाम 'लालू' रखा।

बैगा माँ नवजात शिशु से खेल रही है। कभी वह बच्चे को दोनों हाथों में लेती है और कभी छाती से लगाती है और कभी गोद में लेती है। ऐसा करके खुशी और प्यार से बच्चे को नचाती है और गीत गाती है।

मेरा लालू बेटा मेरी गोद में आ गया है। जब वह बड़ा जो जाएगा तो आँगन और गली में खेलने जाएगा। आठ महीने लालू मेरे पेट में रहा, वहाँ हाथ पैर चलाये। अब नौ महीने बाद मेरा लालू मेरी गोद में आ गया है। अब आठ महीने तक मेरा गोलू के पेट के बल चलेगा। और नौ महीने में तो वह बैठने लगेगा। इसी गीत को बच्चे के जन्म के तीन माह बाद 'बरहो' के समय बैगा महिलाएँ सामूहिक रूप से भी गाती हैं और मिलकर दारू पीती हैं।

अध्याय - 2
विवाह गीत

कोदई जगोनी

तरी नानी नानार नानी, तरी नाना रे नान।
तरी नाना नानार नानी, तरी नाना रे नान।।

का सबद सुनी दादी, तैंय चली आय-2,
आज नातिक उठे लगिन, लगिन देखन आएंव।
का सबद सुनी दादी, तैंय चली आय- 2
आज नातिक होथे बिहाव, बिहाव देखन आएंव।
निवतो की निवतो दाई, सातो ही दोसी-2
का दई निवती दाई, सातो ही दोसी-2
कोठी मा अन्न दाई, गाठे मा दाम।
दामोनी दय के निवते सातो ही दोसी।।
निवतो की निवतो दाई, सातो ही टेढ़ा,
का दई निवती दाई, सातो ही टेढ़ा,
कोठी मा अन्न दाई, गाठे मा दाम।
दामोनी दय के निवती सातो ही टेढ़ा।।
निवतो की निवतो दाई, सातो गीत कारिन,
कोठी मा अन्न दाई, गाठे मा दाम।

दामोनी दय के निवती सातो गीत कारिन।।
निवतो की निवतो दाई, सातो ही हंडेरिन,
का दई निवती दाई, सातो ही हंडेरिन,
कोठी मा अन्न दाई, गाठे मा दाम।
दामोनी दय के निवती सातो हंडेरिन।।
सातो सुवासा, सातो सुवासिन,
निवतो की निवतो दाई, सातो सुवासिन,
का दई निवती दाई, साते सुवासिन,
कोठी मा अन्न दाई, गाठे मा दाम।
दामोनी दय के निवती सातो सुवासिन।।
निवतो की निवतो दाई, सातो सुवासा,
का दई निवती दाई, साते सुवासा,
कोठी मा अन्न दाई, गाठे मा दाम।
दामोनी दय के निवती सातो सुवासा।।
बिहाव के नाने कोदय सूचेंव, समधिन लय गय चोर।
मैं नयको लय जौं समधिन, मूसा लय गय चोर।।
उन्जुर मूसा, झुंझुर मूसा लय गय चोर।
धरो मूसा काटो मूड़े कलसा बनाओ- 2
बिहाव के नाने दाड़ सूचेंव, समधिन लय गय चोर।
मैं नयको लयजौं समधिन, मूसा लय गय चोर।।
धरो मूसा काटो काने, दीवा बनाओ।
बिहाव के नाने हड़द सूचेंव, समधिन लय गय चोर।
मैं नयको लयजौं समधिन, मूसा लय गय चोर।।
धरो मूसा काटो नड़ी, सेहनाय बनाओ।
बिहाव के नाने मिरिच सूचेंव, समधिन लय गय चोर।
मैं नयको लयजौं समधिन, मूसा लय गय चोर।।

धरो मूसा काटो पूछी, बाती बनाओ।
बिहाव के नाने पलड़ी सूचेंव, समधिन लय गय चोर।
मैं नयको लयजौं समधिन, मूसा लय गय चोर।।
धरो मूसा छालो खाले, नगारा बनाओ।
निवतो की निवतो दोसी, तरी नाना रे नान।
तरी नानी नानार नानी, तरी नाना रे नान।
निवतो की निवतो दोसी, ठाकुर देवता।
निवतो की निवतो दोसी, खेरो महरानी।
तरी नानार नानी नानी, तरी नानार नानी।
तरी नानार नाना रे नान।
यसी वचन देवी, यसी वचन देबी,
दोसी जीवे लाखो वारिस।
नीको वचन देबी, नीको वचन देबी
जीवे लाखो बारिस।
हंसा जोड़ी, हंसा जोड़ी।
हंसा जोड़ी, हंसा जोड़ी।
दोसी परिवा जोड़ी।।

शब्दार्थ- **निवतो** = आमंत्रण, **दाई** = माता, **गीतकारिन** = गीत गाने वाली महिलाएँ, **हंडेरिन** = खाना बनाने वाली महिलाएँ, **बिहाव** = विवाह, **सूचेंव** = बनाया, **दाड़** = दाल, **मूसा** = चूहा, **दीवा** = दीपक, **मूड़ी** = गला, **मुंडी मिरिच** = मिर्च, **बात्ती** = बत्ती, **नगारा** = नगाड़ा, **परेवा** = कबूतर, **सुवासा** = दूल्हा-दुल्हन के कार्य करने वाला पुरुष या दूल्हे का सहयोगी, **सुहासिन** = दूल्हा-दुल्हन के कार्य करने करने वाली सुहागिन स्त्री या दुल्हन की सहेली, **टेढ़ा** = विवाह के सारे कार्य करने वाली पुरुष। जिनकी संख्या सात होती है, **दोसी** = विवाह के मांगलिक कार्य करने वाले पुरुष जिनकी संख्या सात होती है। (कभी-कभी टेढ़ा और दोसी एक ही आदमी होता है।)**मोर** = मेरा, **बिराजय** = आ गया- शोभा देता है, **गली-खोर** = आँगन-गली, **छातिक भारे** = छाती के बल से, **सलगय** = चलेगा, **बैठकी** = बैठना, **सीखय** = सिखेगा।

कोदई जगोनी बैगानी विवाह गीत है। यह आमंत्रण पाती गीत है, जिसे हल्दी भिंगोते समय गाया जाता है। इसमें दोसी-टेढ़ा से लगाकर देवी-देवताओं तक विवाह में शामिल होने का निवता (आमंत्रण) दिया जाता है।

'तरी नानी नानार नानी' प्रारंभिक लय है, जिस प्रकार सैला और रीना गीत में 'तर नाना ना मोर नानार' प्रारंभिक धुन या लय होती है। इसका कोई अर्थ नहीं होता है। पर इससे गीत का प्रारम्भ लय के साथ होता है। यह धुन या लय अत्यन्त मधुर होती है।

दूल्हा कहता है- ओ आजा और आजी! तुम लोग यहाँ कैसे पहुँचे? किस लिये आये हो। आजा-आजी कहते हैं- आज हमारे नाती का विवाह शुरू होने वाला है। हमने सुना और उसके लगन देखने के लिये हम दौड़ पड़े। हम तो आ गये, लेकिन लगन लगाने वाले सातों दोसी और विवाह का सारा कार्य करने वाले सातों टेढ़ाओं को, जिनको पहले से ही नियुक्त किया है, उनको सबसे पहले आमंत्रण देकर विवाह घर लाओ। उनको पत्तल में दाल-चावल, रुपये आदि रखकर एक अद्धी दारू पिलाकर स्वागत करो। (आदिवासी समाजों में महुवा की दारू उनके रीति-रिवाज और अनुष्ठान निभाने का अनिवार्य अंग है।)

विवाह हँसी-मजाक और खुशी मनाने का अवसर होता है। ऐसे में समधी-समधन तो सबसे पहले निशाने पर होते हैं। इसलिए गीत में कहा गया है कि विवाह घर में बोरों में दाल-चावल भरा हुआ था। उसे मेरी समधिन चुरा के ले गई है। यह बात दूल्हे की दाई यानी माता कहती है। गीत में समधिन कहती है। इस बात का जवाब देती है। समधिन मैंने चोरी नहीं की है। यह काम तुम्हारे घर के चूहों ने किया है, वे बोरों के दाल-चावल चट कर गये हैं।

इस पर दूल्हे की माँ गुस्सा होकर कहती है- घर के चूहों को पकड़ो और उनके सिर काटकर 'कलश' बनाओ।

कान काटकर 'दीपक' बनाओ।
पूंछ काटकर 'बाती' बनाओ।
गला काटकर 'शहनाई' बनाओ।
और चमड़ा उधेड़कर 'नगाड़ा' बनाओ।

फिर सभी दोसी (विवाह में नियुक्त जातीय पुरोहित), माता महारानी, ठाकुरदेव, चाँद-सूरज और बैगाजाति के समस्त देवतागणों को बुलाओ। सारे देवियों को शीघ्र बुलाओ और उनसे कहो-वे दूल्हा-दुल्हन को आकर आशीर्वाद दें। ताकि ये जिन्दगी भर अच्छा जीवनयापन करें। सातों टेढ़ा विवाह में आमंत्रण आदि का कार्य करने वालों को बुलाओ। वे सबको आमंत्रण दें। तुम चिंता मत करो। बोरी का अन्न नहीं बचा तो कोठियों में खूब अनाज भरा है, और गाँठ में बहुत सा रुपया पैसा भी बँधा है। दोसी और टेढ़ाओं को पहले नगद नेग चुकाओ और सबसे पहले उनको बुलाओ, ताकि शुभ-विवाह का कार्य प्रारम्भ हो।

सातों गीत गाने वाली 'गीतकारिन' को आमंत्रित करो।
सातों खाना बनाने वाली हंडेरिनों को आमंत्रित करो।
सातों सुवासा और सातों सुहासिनों को आमंत्रित करो।

विवाह के लिये कोदो बनाया, लेकिन समधिन चोरी करके ले गई। इस पर समधिन कहती है- मैं नहीं ले गई हूँ। कोदो तो उन्जुर और झुंझुर नाम के चूहे खा गये। विवाह के लिये दाल बनायी। समधिन कहती है- मैं नहीं ले गई हूँ। दाल तो चूहे ले गये हैं। विवाह के लिये हल्दी पिसाई है। समधिन कहती हैं- मैं नहीं ले गई हूँ। दाल तुम्हारे घर के चूहे ले गये हैं। विवाह के लिये 'मिर्ची' पिसाई है। समधिन कहती है- मैं नहीं ले गई हूँ।

मिर्च तो चूहे ले गये हैं। विवाह के लिये महलोन के पत्तों से पत्तल बनवाई है। समधिन कहती है- मैं नहीं ले गई हूँ। पत्तल तुम्हारे घर के चूहे कुतर गये हैं।

दूल्हे की माता कहती है- दोसी! तुम धरती माता को आमंत्रण देना मत भूल जाना। ठाकुर देव को पहले आमंत्रित करना। खेर माई महारानी को आमंत्रित करना। सारे ग्राम देवताओं को आमंत्रित करना। कोई छूट न जाय। सारे मेहमान और देवी -देवता दूल्हा-दुल्हन को ऐसा आशीर्वाद दें कि वे लाखों वर्ष जीवित रहें। जैसे हंस-हंसनी की जोड़ी होती है। वैसे दूल्हा-दुल्हन की जोड़ी हमेशा बनी रहे। जैसे कबूतर की जोड़ी होती है। वैसे ही दूल्हा-दुल्हन की जोड़ी बनी रहे।

तिकसा चढ़ौनी

तरी नानी नानी नानरी नानी, तरी नानी नाना रे नान ... ।
तरी नानी नानी नानरी नानी, तरी नानी नाना रे नान ... ।
दैया दैया अंगरिया -अंगरी चढ़ जारे,
तिकसा दबरीना सिल चढ़ही जाय। दाई 2
घुटवाना - घुटवा चढ़ जा रे।
तिकसा जंगहियाना सिल चढ़ही जाय। दाई 2
कनिहा ना - कनिहा चढ़ जारे,
तिकसा छतिया ना सिल चढ़ही जाय। दाई 2
छतिया ना- छतिया चढ़ जा रे,
तिकसा माथे मा सिल चढ़ही जाय। दाई....2
कहाँ है तिकसा तोरे जनामन,
कहाँ तोरे थान दाई। दाई 2

कोयली काछारे तोरे जनामन,
सिल समदूर है तोरे थान दाई। दाई...2

शब्दार्थ- **सिलचढ़ही** = अच्छी तरह से लग जा, **घुटवाना** = घुटने, **कनिहा** = कमर, **जंगहियाना** = जाँघों पर, **जनामन** = जन्म, **थान** = स्थान, **कोयली कछार** = बहुत दूर।

तिकसा चढ़ौनी दूल्हा-दुल्हन को तिकसा लगाने का गीत है। इस गीत में सहेली सुआसिन महिलाएँ सामूहिक रूप से गीत गाते हुए अंगों के नाम ले-लेकर उन अंगों पर हल्दी लगाती हैं।

ऐ तिकसा! सबसे पहले तू दुल्हन के पैर की ऊँगलियों पर चढ़ जा। फिर पैर पर, घुटनों पर, फिर जाँघों पर, फिर कमर के हिस्सों पर, फिर छाती पर, इसके पश्चात् माथे पर चढ़ जा। इस प्रकार एक-एक अंग पर तिकसा सुवासिनों द्वारा लगाया जा रहा है।

एक सुवासिन पूछती है- ऐ हल्दी! तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ है। तुम्हारा जन्म स्थान कहाँ है? दूसरी सुवासिन गाती है- अरी सहेली! हल्दी का जन्म कोयली कछार में हुआ है, उसका जन्म स्थान समुद्र के पार दूर देश में है।

पानी भरावन

तरी नानी नानर नानी नानार रे नान,
आधी रातक बीचे दाई का चिरैया बोलय।
आधी रातक बीचे दाई का चिरैया बोलय।
ढप ढपा ढप ढप दाई सोने मिर्गा बोलय।
सोने मिर्गा बोलत दाई, होथय बिहान।
उठो कि उठो संघी, लूगरा समहारो।
लूगरा समहारत संघी, बड़ा झेलो लागय।

काहिन लागे गघरी दाई, काहिन लागय गुठरी।
सोने की लागे गघरी दाई, रूपे लागे गुठरी।
एक डगा सारय दाई दूवय डगा सारय।
पहुँचन लागे दाई, सातो ही समदूर।
सातो ही समदूर दाई, मारे हिलोरा।
तरी नानी नानार नानी नाना रे नान।
सोन टेटकी सोन भेजकी, पानी भरन देय।
ककड़ा मन कुँवर दाई, पानी भरन देय।

शब्दार्थ- **सुई चिरैया** = पपीहा, **सोन मिर्गा** = सोने का मुर्गा (स्वर्ण मुर्गा जिसका रंग सोने जैसा हो), **संघी** = सहेली, **लूगरा** = साड़ी, **झेलो** = देर, **टेटकी/भेजकी** = मेंढक, **समदूर** = समुद्र (नदी), **ककड़ामन कुँवर** = केकड़ा, **सारय** = चले, **डगा** = पग, **गुदरी** - चोमल।

दुल्हन अपनी माँ से पूछती है- ए माँ! आधी रात को यह कौन सी चिड़िया (पक्षी) बोलती है। माँ कहती है- आधी रात को बारह- एक बजे सुई नाम की चिड़िया (पक्षी) बोलती है। उसके बोलने का यही समय होता है। रात तीन-चार बजे बाद 'ढपढपा ढप ढप' माँ सोन मुरगा क्यों बोलता है। सोन मुर्गा (सोन कुकड़ी) के बोलने से बेटी सुबह होती है। दुल्हन की सहेली बोली- उठो सहेली, जल्दी उठो। सोन मुर्गा बोल रहा है। सुबह होने वाली है। जल्दी से अपनी साड़ी (लूगरा) सम्भालो। ठीक कर लो और जल्दी तैयार हो जाओ।

तब दुल्हन कहती है- मुझे साड़ी सँवारने में थोड़ी देर लगेगी। जरा ठहरो। ऐ माँ! पानी भरने जाने के लिये किस चीज की मटकी और किस चीज की गुडरी यानी चोमल लगेगी।

ऐ बेटी! घर में सोने की गगरी और चाँदी की चोमल रखी है। चोमल को सिर पर रखकर सोने की गगरी में पानी ले आओ। दुल्हन सहेलियों के

साथ पानी लेने चल दी। एक पग दो पग धरते-धरते वे समुद्र के तट पर पहुँच गई। (गीत में सातों समुद्र के तट की बात कही गई है। पुराख्यानों में भी पृथ्वी पर सात समुद्र होने की बात आती है। सम्भवतया गीत के अर्थ को व्यापकता देने की गरज से यह कल्पना की गई है। समुद्र का अर्थ यहाँ बड़े जलाशय या नदी के अर्थ में गाँव की समीपता को देखते हुए ले सकते हैं।)

ऐ माँ! सातों समुद्रों में बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही हैं। समुद्र के तट पर पहुँचकर गीत गाने वाली महिलाएँ और साथ में आये दोसी ने वहाँ चौक पूरा। उस पर नेग के रूप में पैसे रखे। कंडे की आग जलाई। हूम-धूप दिया। दीप जलाया। अगरबत्ती जलाई। उस पर दारू चुहाई। गीतकारिनों को तीन छाके (एक पत्ते का दोना) दारू पिलाई। फिर गीत गाते हुए महिलाओं ने समुद्र से पानी देने की प्रार्थना की।

हे सोने की मेंढक रानी! हे ककरामल कुँवर केकड़े! हमें शुभ विवाह के लिये समुद्र से जल भरने दो। तब सोने के कलश में दोसी और महिलाएँ दुल्हन के साथ पवित्र जल लेकर घर आये।

गाई डारे झिर-झिर, नंदी नय भरे घयला रे हाथ।
पापी है नंदी आगू, पवन पाछू पानी रे।
पानी ला पीवय पसर करी के, तय जो गावस ददरिया।
कसर करी के...धीरे गाईले।
कुआ के पानी झीकी-झीका होय,
दूरिहा के माया देखी के देखा होय।
धीरे गाई ले...।

शब्दार्थ- **नन्दी** = नदी, **नय भरे** = न भरे, **घयला** = गागर, **आगू** = आगे, **पाछू** = पीछे, **पीवय पसर करी** = खूब पानी पीना, **दूरिहा** = दूर के।

दुल्हन की सहेली पानी भरके लौटते समय यह ददरिया गाती है। अरे सहेली! समुद्र के पानी में बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही थी। पानी बहुत हिल-डुल (झिलमिला) रहा था। लहरें पानी ही भरने नहीं दे रही थी। पानी में गागर डूब ही नहीं रही थी। क्योंकि पापी पवन बहुत तेज गति से चल रहा था, उसके पीछे-पीछे पानी लहर बन के चल रहा था।

पानी तो खूब पीना चाहिए और ददरिया गाने में कोई कमी या कसर नहीं रखना चाहिए। कुएँ से पानी भरते समय भी कुएँ के पानी को झकेलना या हिलाना-डुलाना पड़ता है। इसी प्रकार देखा-देखी भी मन में हिलोरे या माया पैदा होती है। दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

गाई डारे झिक लोटा, झिक पानी गोड़ धोइले रे
काहै हम परदेसी पराई पाहुना पानी पानी दई दे ।
लोटा के पानी गरम करी ले,
तोर चढ़ती जवानी धरम करी ले।
काँसे की थाली कसाई रखेना,
मोर गाये ददरिया रसाई रखेना ।
धीरे गाई ले ।।

शब्दार्थ- **झिक लोटा** = लोटा भर पानी, **गोड़** = पैर, **पाहुना** = मेहमान।

घर के समीप पहुँचने पर सहेली एक और ददरिया गाती है। सहेली! तुम घर में से पाँव धोने के लिए लोटा भर पानी ले आओ और हमारे पैर धुलाओ। हम सब नदी से सोने के कलश में पवित्र जल लेकर लौट आये हैं। सहेली घर में से लोटे में पानी लाई और सबके आँगन में पैर धुलाये। फिर सबको घर के भीतर ले गई।

पवित्र जल के कलश को घर के कोने में सुरक्षित जगह में रख दिया।

अब इसी पानी से दुल्हन के लिये तिकसा (हल्दी का उबटन) और बेवर खेती के अनाज के (मंड्या) के आटे को घोलेंगे और दुल्हन के अंग-अंग में लगायेंगे। फिर मिट्टी खोदने जायेंगे। इसके बाद लड़के-लड़की में ददरिया सवाल-जवाब होने लगते है।

लड़का कहता है - ऐ लड़की! लोटे का पानी थोड़ा गर्म करके लाना और तुम्हारी चढ़ती जवानी थोड़ी सी दान कर देना। हम तुम्हारे यौवन पर निछावर हैं।

लड़की कहती है- काँसे की थाली में खट्टी चीज भी कसैली नहीं होती। इसी प्रकार मेरा ददरिया भी तुम्हारी बात का बुरा नहीं मानता। पर ददरिया थोड़े धीरे से गाना।

माटी खनौनी

तारी नानी नानर नानी, तारी नानारे नान।
तारी नानी नानर नानी, तारी नानारे नान।
पूरो कि पूरो दोसी, चार खूटक चौंका ...दाई
पूरो कि पूरो दोसी, चार खूटक चौका।
देवयो कि देयो दोसी, हुमे गरास ....दाई
देवयो कि देयो दोसी, हुमे गरास।
तरपो कि तरपो दोसी, फुल मंद के छाक...दाई
तरपो कि तरपो दोसी, फुल मंद के छाक।
निवतो कि निवतो दोसी, कारी बीमोरा...दाई
निवतो कि निवतो दोसी, कारी बीमोरा।
का सबद सूनी दीमी, तै केंवरी दै दै ....दाई
का सबद सूनी दीमी, तै केंवरी दै दै।
माटी माँगे आँही, कहके तैं केंवरी दै दै....दाई

माटी माँगे आँही, कहके तैं केंवरी दै दै।
खोलो कि खोलो दीमी, कूची केंवरिया....दाई
खोलो कि खोलो दीमी, कूची केंवरिया।

शब्दार्थ- **हुमेगरास** = होम/ धूप/ दीप, **फुल मंद छाक** = दारू से भरा दोना, **तरपो** = तर्पण करो, **निवतो** - आमंत्रित करो, **बीमोरा** = बमीठा, **केंवरी** = दरवाजा।

माटी खनौनी माँगर माटी रस्म का एक अंग है, जिसमें सुआसिने और दोसी पूर्व दिशा की ओर घर से गाँव बाहर जाकर मिट्टी खोदकर लाते हैं। पूर्व दिशा में दीमकों द्वारा बनाया गया बमीठा है। उस बमीठा के समीप पहुँचकर दोसी और गीतकारिन महिलाएँ जुवार के आटे से चौक पूरती हैं। धूप, दीप-अगरबत्ती जलाती हैं। धरती माता, ठाकुर देवता और माता महरानी का सुमिरण किया जाता है। मंद (दारू) चुहाई जाती है। मड़िया के आटे की रोटी चढ़ाई जाती है और कोरा धागा लपेटा जाता है। फिर सब लोग हाथ जोड़कर विनती करते हैं- हे धरती माता, ठाकुर देव, माता महरानी! आज हम लोग विवाह के लिये माँगर माटी लेने आये हैं। माटी खोदने आये हैं। तुम हमें कुदाल चलाने की अनुमति दो।

दोसी तुम चारों कोनों में कुदाल चलाओ और मिट्टी खोदो। दोसी हमने हूम-धूप, दीप-अगरबत्ती से सबकी पूजा कर दी है। मंद भी चुहा दी है। अब तुम दीमक के बनाये हुए बमीठे को भी विवाह में आमंत्रित कर लो। दीमक तुम हमें मिट्टी लेने दो। अपने दरवाजे बंद मत करो। हम तो शुभ कार्य के लिये थोड़ी सी नेग की मिट्टी लेने आये हैं। हम तुमसे मिट्टी माँग रहे हैं। दीमक कहती है- मेरे द्वार खुले हैं, तुम जितनी चाहो, उतनी मिट्टी ले जाओ।

गाई दारे मंगरोही माटी, गोड़ धोई ले रेऽऽ।
कहय धन रे उमरडारा, सातो जनमला सुधारेऽऽ।

जोड़नी : *सेमी के ढेखरा तुम्हारे अंगना चीन्ही लयहेन रेऽऽ।*
दाऊ जवानी रेंगना, धीरे गायलेऽऽ।
मंगरोही माटी, गोड़ धोई ले रेऽऽ।
कहय धल रे उमर डारा, सातो जनमला सुधारेऽऽ।
पथरा के मीढ़ी माटी के नहाडोर, गारी बोली भला दयले।
माया ला झिना टोर, धीरे गाय लेऽऽ
मंगरोही माटी, गोड़ धोई ले रेऽऽ
कहय धन रे उमरडारा, सातो जनमला सुधारेऽऽ।

शब्दार्थ- **उमरडारा** = अमर वृक्ष की डाल, **ढेखरा** = सूखी लकड़ी, **चीन्ही** = पहचान, **मीढ़ी** = दीवार, **नोहडोर** = मिट्टी से बने अलंकरण, **टोर** = तोड़।

माँगर माटी लाते समय दुल्हन की सहेलियाँ ददरिया गाती हैं, जो रास्ते में चलती हैं। कहती है- माँगर माटी ददरिया गा दिया है, माँगर माटी ले आये हैं। अब सब सहेली, पानी से अपने पैर धो लो। हम कहते हैं, इस डूमर के वृक्ष की डालियाँ धन्य है, जो मंडप में काम आती हैं। ये सातों जन्मों का उद्धार करने वाली हैं। सेमी वृक्ष की सूखे ठूँठ भी आँगन में गाड़ दिया है। उसी के सहारे हमारे आँगन में सेमी की बेल चढ़ेगी। उसको हमने अच्छी तरह से जान लिया है, पहचान लिया है। जैसे- जैसे बेल ठूँठ पर लपेटती चली जायगी। बढ़ती चली जायगी। वैसे-वैसे दुल्हन की जवानी निखरती जायगी। बेल चढ़ने के लिये सहारे की जरूरत होती है।

पत्थर की दीवार में मिट्टी से नोहडोरा (उभरे भित्ति उद्रेखण) सुन्दर लगते हैं। मैंने पत्थरों की दीवार में नोहडोरा डाल दिये हैं, मुझे गाली भले ही दे देना। लेकिन तुम मुझसे माया ममता का रिश्ता मत तोड़ना।

यह ददरिया गाते-गाते 'माँगरमाटी' को आँगन में एक कोने में रख देते हैं।

मंडवा कटोनी

तरी नानी नानर नानी, तरी नानारे नान।
तरी नानी नानर नानी, तरी नानारे नान।
काहिन लागय टंगली दाई, काहिन लागय बेंट।
काहिन लागय टंगली दाई, काहिन लागय बेंट।
सोने लागय टंगली दाई, रूपे लागय बेंट।
सोने लागय टंगली दाई, रूपे लागय बेंट।
दुई बोतल दारू दाई, जाँवर सोंहारी।
दवड़ी भरे बासी दाई, तबेला भर दाड़।...2
हलबूर की तलबूर, दोसी होओ लियारी।...2
होवत तियारी दोसी, बड़ा झेलो लागय।...2
एके डगा सारय दोसी, दूवय डगा सारय।...2
पोंहचना लागय दोसी, भौंरा- पहाड़े।
निवतो कि निवतो दोसी, सारई को मढ़ो।...2
निवतो कि निवतो दोसी, दोसी साल्हे को साजन।...2
निवतो कि निवतो दोसी, बासीन कन्या।...2
साड़ै नी काहय दाई, मय मढ़ो होहूँ।...2
साल्हेनी काहय दाई, मैं साजन हो हूँ।...2
बासीन कन्या काहय मैं संग होहूँ।...2

शब्दार्थ- टंगली = कुल्हाड़ी, **बेंट** = बेंत/ डांड/ मूठ, **जाँवर** = जोड़ा, **सोंहारी** = पूड़ी, **बासी** = भात, **दाड़** = दाल, **हलबर-तलबर** = जल्दी-जल्दी, **सारई** = सरई, **साजन** = मगरोही।

लोहे की कुल्हाड़ी जिसमें लकड़ी की बेंत लगी है। दो बोतल मंद (दारू) रखी। बाँस की एक टोकनी में दाल-भात और दो पूड़ी रखी और वे वृन्दावन भौंरा पहाड़ पर मंडप की लकड़ी काटने चल पड़े। वहाँ पहुँचकर

दोसी ने मड़िया के आटे से चौक पूरा, होम-धूप-दीप जलाया। अगरबत्ती जलाई। पूड़ी चढ़ाई और मंद चुहाई। हाथ जोड़कर जंगल के सारे देवी-देवताओं का स्मरण किया। मंडप के काटने की अनुमति माँगी। आते और लौटते समय किसी प्रकार की कोई बाधा न आये, इसके लिये देवी-देवताओं से प्रार्थना की।

गीत में कहा गया है- हे माँ! कुल्हाड़ी किससे बनी है और उसकी बेंत (मूठ) किस वस्तु की लगी है। माँ कहती है- तुम लोग जिस शुभ कार्य के लिये जंगल जा रहे हो, वह कुल्हाड़ी सोने की बनी है और उसकी बेंट चाँदी की लगी है। साथ में एक दौनी (मटकी) भरकर बासी भात और तबेले में दाल तुम्हारे खाने के लिये रख दी है। ऐ दोसी! तुम भी जल्दी-जल्दी करो। तैयार होने में देर लगती है, इसलिये फटा-फट तैयार हो जाओ। हम सब लोग मंडप की लकड़ी काटने को जाने के लिए तैयार हैं। तब दोसी जल्दी करता है और बड़े-बड़े डग भरता चलता है। गीत में तो यहाँ तक कहा गया है कि एक पैर निकालते ही, दोसी दूसरे पैर में भौंरा पहाड़ पर पहुँच गया।

गीत गाने वाली महिलाएँ दोसी से आग्रह करती हैं कि तुम सबसे पहले सरई, साल्हे और बासीन कन्या (बाँस को) आमंत्रित करो। तब सरई, साल्हे (जिसका साजन मंगरोही बनाया जाता है,) और बासिन कन्या कहती है- हम तुम्हारे आमंत्रण को स्वीकार करते हैं और तुम्हारे साथ चलते हैं। तब मंडप काटने वाले लकड़ी काटकर काँधे पर रखकर घर ले जाते हैं।

बैगा आदिवासियों का जंगल और वनस्पति से कितना गहरा और सम्मानीय रिश्ता है। यह इस गीत में देखने योग्य है। पेड़ को काटने के पहले उसकी पूजा और उससे काटने की अनुमति ली जाती है। यही नहीं उन्हें विवाह में शामिल होने का आमंत्रण तक दिया जाता है। यही कारण है कि हजारों सालों से जंगल बचे रहे।

नाहोनी

तरी नानी नानी नानरी, नानी तर नानी नाना रे नान।
आनोओ संगही बनिया क कइया कोरय संगही हमार... ।
माई नर्बदा सोने बहादूर, जोइला मा करै असनान । दैया ....
आनो ओ संगही लिख लिखा कपड़ा पेहरय संगही हमार, दैया...

शब्दार्थ – **संगही** = सखी/ सहेली, **ककइ** = कंघी, **कोरय** = बाल ओछना, **लिख लिखा** = चमकदार छपा हुआ/ कढ़ाई किया हुआ, **पेहरय** = पहने।

जब दूल्हा – दुल्हन को नहलाया जाता है। तब इस गीत को गाया जाता है।

दुल्हन रोती हुई कहती है– हे सहेलियों! बाल धोने की मिट्टी जल्दी लाओ। बाल ओछने की सुन्दर कंघी लाओ। जल्दी से एक घड़ा गरम पानी लाओ। नहाने के बाद पहनने के लिये चमकदार वस्त्र भी लाओ।

हमारे दूल्हा और दुल्हन माता नर्मदा, बहादुर नद सोनभद्र और जोहिला नदी के पवित्र जल से स्नान कर रहे हैं।

कलसा गोदोनी

तरी नानी नानी नानरी, नानी तरी नानी नाना रे नान।
तरी नानी नानी नानर नानी, तरी नानी नाना रे नान।
कोने नगर के माजना माटी, कोने नगर के कुम्हार। दैया ....
कोने नगर के माजना माटी, कोने नगर के कुम्हार।
आँजना गढ़ के माजना माटी, कुँजना गढ़ के कुम्हार। दैया....
आँजना गढ़ के माजना माटी, कुँजना गढ़ के कुम्हार।
सबखा तो गढ़बे अैसाना–तैसाना, मोर नाने मना चित लगाय। दैया....
कारी गैयन के गोबरी मँगावय, कलसा के चिन्हे बनाय । दैया.....

साते सुआसा साते सुआसिन, सोयगने मोर दाई।
कलसा कोन गोदय तोर, नानो यो संगही गुँगची।
को दाना रिंगी–रिंगी कलसा गोदाय ऽऽ । दाई .....
आनो यो संगही लकड़ी को बीजाऽ, रिंगी रिंगी कलसा गोदाय। दाई..
आन यो संगही लोड़ा को दाना रिंगी रिंगी कलसा गोदाय। दाई....
दूल्हा कर बहिन बहोतय मयासुर, कलसा ला यो ही आनयो,
संग हो मनरूपी धाने कलसा ला वही गोदाय ऽऽ।
तोर दैया कलसा ला ओही गोदाय तोरे ।

शब्दार्थ – **माजना माटी** = पवित्र जगह की मिट्टी, **गढ़बे** = गढ़े, **अैसाना–तैसाना** = ऐसे–वैसे, **चिन्हे** = अलंकरण, **संगही** = सखि/ सहेली, **रिंगी–रिंगी** = धीरे–धीरे, **मयासुर** = ममतालू।

दुल्हन की माँ कुम्हार की दूकान पर गई और कुम्हार से पूछती है– कुम्हार भाई तुम कहाँ के रहने वाले हो और कहाँ से कलश (घड़ा) बनाने के लिये मिट्टी लाते हो।

कुम्हार ने कहा– माँ मैं कुँजनगढ़ का रहने वाला हूँ और अंजनीगढ़ से कलश बनाने की मिट्टी लाता हूँ। माँ ने कहा– यह तो अच्छा है। लेकिन मेरे लिये ऐसा वैसा साधारण कलश मत गढ़ना, ऐसा तो औरों के लिए गढ़ना। मेरे घर शुभ विवाह है। अच्छा मन लगाकर सुन्दर कलश गढ़ना।

कुम्हार कहता है – हाँ बाई! मैं मन लगाकर ही कलश घड़कर दूँगा। लेकिन पैसे भी अच्छे लूँगा। दुल्हन की माँ कहती है– भैया अच्छे पैसे दूँगी। तेरा नेग भी दूँगी। दुल्हन की माँ कलश लेकर लौटी। सुआसा–सुआसिन और दोसी को बुलाया। एक बाटल दारू और काली गाय का गोबर मँगवाया। पत्तल में लाल सफेद घुँगची, ककड़ी खीरा के सूखे बीज, पीली–सफेद मक्का के दाने रखे और लाल मिर्च भी रखी। फिर कहती है– सुआसिन

जल्दी से कलश को गोबर आदि से सजाओ। गीत गानेवालियों को माँ ने कहा–तुम गीत गाओ। कलश दूल्हे की बहन ही घर में लाई है। सुआसिनों ने कहा– तुम कलश को गोबर की रेखाएँ बनाकर सजाओ। उस पर घुँगची, दाल, ज्वार, मक्का और खीरा के बीज के दानों से अलंकरण करो। ऊपर से मिर्ची के बीज भी लगाओ। कहीं–कहीं लाल मिर्च भी चिपका दो। एक पंक्ति में खीरा के बीज, दूसरी पंक्ति में घुँगची और एक लाईन में धान के बीज लगाओ। जिससे कलश सुन्दर ढंग से सज जाए। लाल मिर्ची के कारण कलश को किसी की नजर नहीं लगेगी। सुआसिने इसी प्रकार कलश को अलंकृत करती हैं।

तेल कुटोनी

तरी नानी नानर, नानी तरी नानार नानी।
तरी नानी नानर, नानी तरी नानार नानी।
काहिन काट मुसारी काहिन काट सेंझी। दैया...
काहिन काट मुसारी, काहिन काट सेंझी। दैया...
खैर काट मुसारी, लोहन काट सेंझी।
खैर काट मुसारी, लोहन काट सेंझी। दैया...
खैर काट मुसारी, लोहन काट सेंझी। दैया...
बड़े दूल्हा तेल कूटय, झंकारो देय। दैया...
बड़े दूल्ही तेल कूटय, झंकारो देय। दैया...
तरी नानी तरी नानी नानर रे नान।
नानर नानी अर तरी नानी नानर रे नान।
दादर ऊपर, दादर घानी चलत है रे,
पेड़ों तेलया राई सरसोक तेल।।

शब्दार्थ– **मुसारी** = मूसल, **सेंझी** = सेमी का फल, **झंकारो** = झंकार, **घानी** = तेल घानी, **दादर** – पहाड़, **पेड़ों** = निकालना/ पेरना/ कूटना।

दुल्हन की माँ उसे गोदी में बिठाकर जगनी और तिल्ली को सूपे में रखकर उससे कुटवाने का कार्य करवा रही है। तब दुल्हन पूछती है– हे माँ! मूसल किस लकड़ी से बनता है और किस चीज से मूसल की सेमी बनती है। माँ कहती है– बेटा! खैर की लकड़ी से मूसल बनता है और उसमें लगी सेमी लोहे से बनती है। इसी से जगती या तिल्ली को कूटकर तेल निकाला जाता है। माँ आगे कहती है– लो बेटा! अब तुम इसको कूटो और विवाह की रस्म का निर्वाह करो। जीवन में बहुत छोटी चीजों का भी उतना ही महत्त्व है। दुल्हन मूसल पकड़कर तेल कूटती है। उसके कूटने से उसके हाथ के गहने और मूसल के ऊपर लगे घुँघरू झन–झन की आवाज करते हैं। इसी तरह जगनी, सरसों, रमतिला को कूटा जाता है।

तेल पेड़ोनी

तरी नानी तरी नानी तरी तरी नानी,
नानर नानी, नानर नानी, तरी नानर नाना रे नान।
दादर ऊपर दादर ऊपर घानी चलत है रे।
अर पेड़ों तेलया राई सरसोक तेल, दैया मोरे ...
पेड़त–पेड़त–पेड़त–पेड़त। 2
कनिहा लरख गय। 2
टूटी गये घानी के रे खाम, दैया मोरे...
घानी के टूटे–टूटे जुड्यो जाहीं रे
घानी के टूटे–टूटे जुड्यो जाहीं रे

शब्दार्थ– **दादर** = पठार, ऊँचे स्थान पर, **घानी** = तेल पेरने का यंत्र, **तेलिया** = तेली, **कनिहा** = कमर, **लरख** = कुसका, **खाम** = खम्ब।

तेल पेड़ोनी एक रस्म भी है और एक हँसी–मजाक का अवसर भी है। पठार पर तेल घानी चलती है। तेल पेरने वाले तेली से कहा जा रहा है– अरे भाई! तू जल्दी से राई–सरसों, जगनी तिल्ली का तेल पेर दो। तेली

कहता है- तेल पेरते-पेरते मेरी कमर में कुसका लग गया है, कमर अकड़ गई है। दूसरा घानी का खम्बा भी टूट गया है। अब तेल पेरना मुश्किल है।

अरे भाई! तेरी टूटी घानी ठीक हो जाएगी। तेरी कमर भी ठीक हो जायेगी। तू जल्दी तेल निकाल दे। हमें देर हो रही है। तब तेली कहता है- टूटी घानी में तेल पेरूँगा तो सारा तेल जमीन में गिर जायेगा। तुम्हारे हाथ में कुछ भी नहीं लगेगा। यह गीत चलता रहता है और इसी समय हँसी-मजाक के लिये दोसी, टेड़ा और सुआसा एक स्वांग तमाशा करते हैं। छेर घास की बनी झाड़ू को उठाकर दो आदमी दोनों तरफ से कसकर पकड़ते हैं। एक तरफ दोसी दूसरी तरफ सुवासा। उसे पकड़कर ऐंठते हैं, खींचा-खाची करते हैं, जैसे तेल निकाल रहे हों। ऊपर से एक आदमी पानी डालता है। तब ऐंठने वाले कहते हैं- देखो! तेली तो तेल नहीं निकाल रहा है। हम जमकर तेल पेर रहे है। इतना कहते ही सारे उपस्थित बैगा बच्चे बूढ़े और महिलाएँ हँस-हँसकर लोट-पोट हो जाते हैं।

हड़द चढ़ौनी

तरी नानी नानी नानरी नानी,
तरी नानी नाना रे नान। दैया...
कहाँ है हरदी तोरे जनामन,
कहाँ है तोरे थान। दैया ...2
घैली कछारे तोरे जनामन,
सिल समदूर है तोर तोर थान। दैया ...2
अंगरी-अंगरी चढ़ जा रे हरदी,
दबरीना सिल चढ़ही जाय। दैया...2
जंगिहा जंगिहा चढ़ जा रे हरदी,
कनिहा न सिल चढ़ही जाय। देया...2

छतिया छतिया चढ़ जा रे हरदी,
माथेना सिल चढ़ही जाय। दैया...2
माथे मा सिल चढ़ही जाय।

शब्दार्थ- **जनमान** = जन्म, **थान** = स्थान, **गाँठी** = गले की, **सिल** = भींगना, **अंगरी** = ऊँगली, **जांगहा** = जाँघ, **घैली कछार** = एक जंगल का नाम, **कनिहा** = कमर।

दोसी सुआसिन एक थाली में हल्दी और नारियल-अगरबत्ती रखते हैं। साथ ही एक बोतल मंद (दारू) के साथ दुल्हन के गले की भँवरी माला, लाल मोती की गाठी माला, चाँदी की सुतिया माला रखते हैं। घर के देवी-देवता का सुमिरण करते हैं और कहते हैं- आज इस घर में विवाह होने जा रहा है। देखना हमसे कोई छल छिद्र नहीं करना। हे धरती माता! ठाकुर देवता! माता महरानी! चाँद-सूरज देवता! दस ऊँगली की विनती, पाँच ऊँगली की सेवा है। 'देख जात रवा आगू आत रवा पाछू, संकट में सहारे रहबे। कुछ बाधा ना आय।' ऐसे वचन करते हुए हल्दी दूल्हा-दुल्हन सुआसिन लगाती हैं। गीत में आये शरीर के अंगों पर क्रमशः हल्दी चढ़ाई जाती है।

हल्दी कहती है- घैली कछिया के घर मेरा जनम हुआ है और समुद्र मेरा स्थान है। हे हल्दी! तू पहले मेरी दुल्हन की अँगुली में लग जा। एक-एक ऊँगली में लग जा। बाँह, छाती, जाँघ, कमर और माथे पर चढ़ जा। सिल चढ़ जाओ यानी पूरे शरीर में भींग जाओ। फैल जाओ। इससे हमारे दूल्हा और दुल्हन का शरीर चमक जायेगा। हल्दी लगाने के बाद दोसी आशीष वचन कहता है- दूल्हा-दुल्हन की हंस जोड़ी, परेवा (तोता-मैना) जोड़ी सारस जोड़ी सदैव बनी रहे। जैसे वे जीते हैं, वैसे हमारे दूल्हा-दुल्हन की जोड़ी जीती रहे।

बरात तैयारी

तरी नानी नानर नानी।
तरी नानी नानर नानी।
तारी नाना रे नान। दैया मोरे ...2
काहिक नाने रोथस कुँवर,
काहिक नीता रोथस,
कुँवर झुर-झुर रोथस, कुँवर मोरे ...2
झैं रो की झैं रो कुँवर,
झैं रो की झैं रो कुँवर,
तोर मोजा बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतक की सूनय कुँवर,
ऊतक की सूनय कुँवर,
झुर झुरी रो थै, दैया मोरे ...2
काहिक नीता रोथस कुँवर,
काहिक नीता रोथस कुँवर,
झुर झुरी रोथस कुँवर, दैया मोरे...2
झैं रो की झैं रो कुँवर,
झैं रो की झैं रो कुँवर,
तोर नाने जूता बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतक की सूनय कुँवर,
झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
काहिक नीता रोथस कुँवर,...2
झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
तोर नाने झंगा बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतकी सूनय कुँवर...2

झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
झैं रो की झैं रो कुँवर...2
तोर नाने कमीज बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतकी सूनय कुँवर...2
झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
झैं रो की झैं रो कुँवर...2
तोर नाने हवाल बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतकी सूनय कुँवर...2
झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
झैं रो की झैं रो कुँवर...2
तोर नाने फेटा बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतकी सूनय कुँवर...2
झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
झैं रो की झैं रो कुँवर...2
तोर नाने सरूता बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतकी सूनय कुँवर...2
झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
झैं रो की झैं रो कुँवर...2
तोर नाने तलवार बेयास देहूँ, कुँवर... मोरे..2
ऊतकी सूनय कुँवर...2
झुर झुरी रोथस कुँवर, मोरे...2
झैं रो की झैं रो कुँवर...2
तोर नाने कन्या बेयास देहूँ, कुँवर मोरे..2
ऊतकी सुनै कुँवर...2
खुद खुदी हाँसय कुँवर, मोरे...

खुद खुदी हाँसय।
तरी नानी नानर नानी,
तरी नानी नानर नानी,
नाना रे नान। दैया मोर 2

शब्दार्थ- **मटूक** = फेंटा, **सटका** = कोडा, **झुर-झुरी** = झुर-झुर के/ करूणा करके, **ऊतक की सूनय** = ऐसा सुनकर, **झंगा** = बाना, **अंगरखा** = कुर्ता, **हवाल** =सिक्कों की माला, **बेसाय** = लाकर देना, **खुदखुदी**= खद-खद, **हाँसय** = हँसता है, **मनरूसी** = मन पसंद।

यह बैगा बारात की तैयारी का गीत है। जब बारात निकलने के पहले दूल्हे को सजाते हैं। उसी समय दूल्हा कुछ कमी देखकर गुस्सा हो जाता है और रोने लगता है। तब गीत गाने वाली सुहासिनें पूछती हैं- अरे कुँवर! दूल्हे राजा तुम इतना झुर-झुर के क्यों रो रहे हो? क्या कमी रह गई है? तुम्हें और क्या चाहिए? तुम व्यर्थ रो रहे हो। तू मत रो दूल्हे राजा। तेरे माता-पिता ने तेरे लिये मोजे-जूते, नया बाना, कमीज, पेंट-शर्त फेंटा, सोने की मोहर, चाँदी की सुतिया-हवाल आदि सब मँगवाये हैं। दूल्हे का सरोता और तलवार भी मँगवाई है। और तूझे क्या चाहिए। गीत गाने वाली बूढ़ी महिलाएँ दूल्हे के मन की बात ताड़ लेती हैं और कहती हैं- कुँवर! तू मत रो, तेरे लिए सुन्दर कन्या ले आयेंगे। तेरा विवाह बहुत सुन्दर लड़की से हो रहा है।

यह सुनकर रोता दूल्हा खद-खद हँसने लगता है और दूल्हे का सारा श्रृँगार खुशी-खुशी पहनने लगता है। दूल्हा तैयार होता है, तब तक दूल्हे के पिता और आजा दूल्हे के लिये सुन्दर हष्ट-पुष्ट घोड़ा ले आते हैं। वे अपने हाथों से घोड़ा सजाने लगते हैं। पहले घोड़े को अच्छी तरह नहलाया-धुलाया गया। फिर उसे तेल फुलेल लगाया। घोड़े के पैरों में लोहे और पीतल के बजने वाले पैंजन पहनाएँ। बजने वाले घुँघरू बाँधे। उसे चाँदी की लगाम, सोने की टोपी और सोने का ही हार पहनाया। घोड़े पर मखमली जीन कसी।

इसके बाद दोसी और महिलाओं ने सूपे में चने की दाल, मनरूसी धान और काँस थाली में रखी। एक ताम्बे का लोटा रखा। फिर उस घोड़े के पैर धुलाये। चने की दाल और मनरूसी धान के चावल खिलाये। इसके बाद सोने का सटका (कोड़ा) रखा। दूल्हे के हाथ में सुन्दर सरोता दिया और बगल में तलवार बाँधी। अब दूल्हे राजा बारात जाने को पूरी तरह से तैयार हो गया।

उसी समय गीत में कहा जा रहा है- कुँवर! तुम जाओ, कन्या को बिहाकर लाओ। महिलाएँ फिर गाती है- देखना कुँवर! जरा धीरे लड़ाई करना। कन्या राजा सिंधोला की सुन्दर बेटी है। गोरी है। रूपवान है। कुँवर कहता है- हाँ, मैं जीतकर आऊँगा। हार के नहीं। दूल्हा घोड़े पर चढ़ता है और बारात विदा हो जाती है।

धंधा पड़ोनी और छोड़ोनी गीत

तरी नानी नानर नानी, तारी नानारे नान।
तरी नानी नानर नानी, तारी नाना रे नान।
जाम पाकय जम्नी दाई, बेहड़ा पाकय नीम।
चार पैर के मिर्गा, अठारा कोड़ी सींग।
एहू धंधा जान बरथिया, तबै खाबी भात।

शब्दार्थ- **पाकय** = पक गई, **मिर्गा** = मुर्गा, **कोड़ी** = एक कोड़ी बीस के बराबर, **एहू** = इस, **धन्धा** = पहेली, **बरथिया** = बाराती, **तबै** = तब।

बारात जब दुल्हन के गाँव पहुँच जाती है। पहुँचते ही सबसे पहले जनवासा दिया जाता है। यानी बारातियों और दूल्हे को किसी अच्छे घर में ठहराया जाता है। सबको पानी पिलाया जाता है। इसके बाद दुल्हन के माता-पिता सुआसा-सुआसिन दोसी एक बाटल दारू, नारियल, अगरबत्ती कंडे की आग और गीत गाने वाली महिलाएँ एक दौरी (मटकी) में भात,

बाल्टी में दाल, पानी से भरा लोटा, दतून, दीप प्रज्ज्वलित कलश लिये बारातियों के पास आते हैं। जोहार (रामरामी) करके समधी-समधन से मिला भेंटी होती है। तब गीत गाने वाली महिलाएँ धंधा-पड़ोनी और छोड़ोनी गीत गाती हैं।

गीत में कहती हैं- हे दाई! जामुन पक गये हैं। बहेड़ा भी पक गया है। नीम पर निम्बोली लग गई है। ऐसे पके पकाये मौसम में इस 'धन्धा' पहेली का उत्तर दीजिए।

चार पैर के मुर्गा के अठारह कोड़ी (360) सींग हैं। बाराती इस पहेली का उत्तर देंगे, तभी सब बाराती भोजन करेंगे। यदि बहुत देर तक बराती उत्तर नहीं दे पाते हैं, तो एक बोतल दारू और पिलाई जाती है।

पहेली का उत्तर 'सेही' जानवर है, जिसके पीठ पर अनेक तीर जैसे काँटे होते हैं। अपने बचाव में सेही इन्हीं तीरों को चलाकर अपनी रक्षा करती है। सेही के तीरों (काँटों) के वार से शेर तक डर कर भाग जाता है। कोई न कोई बाराती इस अबूझ पहेली को बूझने में समर्थ हो ही जाता है और सबको भोजन नसीब हो जाता है। वास्तव में यह बारातियों की बुद्धि परीक्षा की ही रस्म है। इसके कारण समधियों से थोड़ी मजाक भी हो जाती है।

लाई फोड़ोनी

तरी नानी नानी नानरे नानी, तरी नानी नानारे नान।
तरी नानी नानी नानरे नानी, तरी नानी नानारे नान।
ढिमीरिना टुरिया होतेंव, ओ दाई फोड़तेव चना को लाई।
हो एव, ओ दाई, भुमनिया टुरिया फोड़ थौं लोड़ा को लाई।।

नय तिपाय दाई खपरी तुम्हारे, नय फूटय को लाई।
नय फूटय लोड़ा को लाई।

शब्दार्थ - **टुरिया** = लड़की, **होतेंव** = होती, **लाई** = धानी/ तिली/ बिओरी चने का फूटा/ मक्का की धानी या लाई जो भाड़ में सेकी जाती है।

दुल्हन माँ की गोद में बैठती है। और लाई फोड़ रही है। माँ से कहती है- अगर मैं ढीमर की लड़की होती तो चना की लाई फोड़ती, लेकिन मैं तो बैगा लड़की हूँ, इसलिए मुझे मक्का की लाई (धानी) फोड़नी पड़ रही है। ऐसा कहते वह रोने लगती है। उसे देखकर दुल्हन की माँ भी रोने लगती है। माँ कहती है- बेटी! यह बताकर तूने मुझे भी रूला दिया। तू फिक्र मत कर, तेरा विवाह अच्छे तरीके से होगा। तेरे पिता तेरे विवाह की सारी व्यवस्था कर रहे हैं। तुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है।

पैली भरोनी गीत

तरी नानार नानी पे तरी नानार नानी।...2
बाय खूदन पैली सोहग पुरक तेली।...2
दाई ओ दाई ये, मोय भूख लागीस,
दाई ओ दाई ये, मोय भूख लागीस,
मोर सी नैको तोर बाबा सी जा,
मोर सी नैको तोर बाबा सी जा,
बाबा रे, बाबा रे पे मोय भूख लागीस.. बाबा रे...
मोर सी नैको तोर दादी सी जा...मोर सी ....
दादी रे दादी पे मोय भूख लागीस...2
मोर सी नैको तोर आजी सी जा...2
दाई ओ दाई पयली नहीं भराय...2
सैला उधा करबी पयली भार देबी...2

दुल्हक बाबा चोरहा पे चोर चोर खाय...2
दुल्हक दादी चोरहा पे चोर-चोर खाय...2
दुल्हक आजी चोरही पे चोर-चोर खाय...2
दुल्हक बहन चोरही पे चोर-चोर खाय...2

शब्दार्थ - **पयली** = आधा किलो का माप, **नैको** = मुझे नहीं, **चोरटा** = चोर, **मोर सी** = मेरे पास।

पैली (पयली) भरोनी एक रस्म है। एक सूपे में जगनी और तिल्ली रखकर दूल्हा-दुल्हन की माँ उसे अपनी गोदी में बिठाकर दूल्हा या दुल्हन के हाथों से पयली (माप) में जगनी और तिल्ली (दोनों तिलहन) भरवाती है। तब यह गीत गाया जाता है। गीत दोसी! को सम्बोधित है।

दुल्हन की माँ कहती है- दोसी इन दूल्हा-दुल्हन को जगती और तिल्ली उधार दिलवा दो। इतना कहते ही वहाँ उपस्थित सारी महिलाओं को थोड़ी-थोड़ी जगनी और तिल्ली बाँट दी जाती है। फिर गीत गाकर-जगनी और तिल्ली वापस माँग ली जाती है। तब गीत के माध्यम से दुल्हन कहती है- हे माँ! मुझे भूख लगी है। माँ बोली -बेटा! मेरे पास कुछ नहीं है, तुम अपने बाबा या पिता के पास जाओ। बाबा बोले- बेटी! तुमने जो उधार दिया है,उसे वापस लो। तुम्हारी भूख शांत हो जायेगी। तब तुम्हारी पयली भर जायेगी। तुम चिन्ता मत करो। इस समय गीत चलता रहता है और जिनको जगनी-तिल्ली दी गई, वे वापस करते जाते हैं। आगे गीत में आजी और दादा से मजाक करते हैं, कुछ ने जगनी या तिल्ली वापस नहीं लौटाई है। तब कहा गया है- दूल्हा या दुल्हन के पिता चोर हैं, उन्होंने जगती और तिल्ली चुरा ली है। इसी प्रकार आजा-आजी, बहन आदि भी चोर हैं, जिन्होंने तेरे हिस्से की जगनी और तिल्ली चुरा ली है। इसलिए तेरी पयली पूरा भराई नहीं है, खाली रह गई है।

रस्म और गीत के माध्यम से दूल्हा और दुल्हन को व्यवहारिकता की

जो सीख दी गई है, वह अत्यंत करूणामयी है। दूल्हा-दुल्हन को जीवन में जितना मिले, उसी से काम चलाना है, किसी से कोई अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अपनों से भी नहीं। तब ही अपना परिवार सुखी और स्वाभिमानी रह सकता है।

बिनोखी फिरावन

तरी नानी नानर नानी, तरी नानारे नान।
तरी नानी नानर नानी, तरी नानारे नान।
भिख्यारिन टूरी दाई, भीख माँगत फिरय।
भिख्यारिन टूरी दाई, भीख माँगत फिरय।
ठोमा भर कोदै दाई, चिमटी भर दाड़।
ठोमा भर कोदै दाई, चिमटी भर दाड़।
तरी नानी नानर नानी, तरी नानारे नान।
तरी नानी नानर नानी, तरी नानारे नान।

शब्दार्थ : भिख्यारिन = भिखारी की तरह, **ठोमा** = मुठ्ठी, **कोदौ** = चावल, **दाड़** = दाल, **चिमटी** = थोड़ी सी।

यह दूल्हा-दुल्हन के बिनोखी (बाना) फिराने का गीत है। दोसी, सुआसा और टेढ़ा मिलकर दुल्हन को बिनोखी फिराने ले जाते हैं। इस अवसर पर टेढ़ा एक बाँस की सिकोशी और झाँपी को कंधे पर रखता है, जिसमें भाड़ में फोड़े गये चना-मक्का की लाई रखते हैं। बिनोखी तीन घर फिराते हैं। उसी समय यह गीत गाया जाता है।

गीत में गाया गया है- हे दाई! आज तुम्हारी बेटी या दुल्हन भिखारी की तरह सुहाग की भीख माँगने निकाली है। हे दाई! मुझे आशीर्वाद दो। आशीर्वाद में एक मुठ्ठी चावल और बहुत थोड़ी (चिमटी भर) दाल दे दो। यही मेरे लिये तुम्हारा आशीर्वाद है। तीनों घरों से धान, मक्का का दुल्हन को नेग दिया जाता है।

हाथी पड़घौनी

कोने बनावै हथिया रे घोरिया, कोने चढ़ै असेवार...दाई
कोने बनावै हथिया रे घोरिया, कोने चढ़ै असेवार।
बैरी बनावै हथिया रे घोरिया, दादा चढ़ै असेवार...दाई ...2
कोने बनावै हथ घोरिया सम्हारो, कोने हाथे तलेवार...दाई ...2
धीरे-धीरे लड़बी रे दादा, पाँवक पनही बिछल झैं जाय।

शब्दार्थ- **हथिया** = हाथी, **कोने** = कौन, **असेवार** = असवार, **डेरीना** = बायें, **जौनी** = दायें, **लड़बी** = लड़ना, **पनही** = जूते।

बारात आने के बाद हाथ पड़घौनी की रीत है, जिसमें तीन खटिया कम्बल, रस्सी आदि से हाथी बनाया जाता है। इस इस हाथी को चार लोग कंधे पर उठाकर चलते हैं। जिसके ऊपर दुल्हन के भाई को बैठाया जाता है। जिसे हाथी पर नचाया जाता है। तब यह पड़घौनी गीत गाया जाता है। गीत में दुल्हन पूछती है- हे दाई! इस हाथी को किसने बनाया है। इस पर कौन बैठा है। किसने सवारी की है। किसी दुश्मन ने इस हाथी को बनाया है। मेरा भाई इस पर सवार हुआ है।

हे भाई! तुम कौन से हाथ से हाथी सम्हालोगे और कौन से हाथ में तलवार रखोगे। भाई कहता है- बहन मैं बाँयें हाथ से हाथी पकडूँगा और दायें हाथ में तलवार पकडूँगा। दुल्हन कहती है- देख भाई! जरा धीरे से लड़ना। तुम्हारे पैर का जूता कहीं फिसल न जाय।

खाना खयोनी

काटो रे बाबा हरा को नागर, काटो बीजा जुआँड़ी।
फाँदो रे बाबा कारी बैलन को नागर जोतो कयली- कछार।
एक खूटे बोयो मनरूसी धाने, एक खूटे मूँगा उरीदा।
एक पाना हो गय मनरूसी धाने, दुई पाने मूँगा उरीदा।

बालेनी निकड़य मनरूसी धाने, फाड़य मूँगा उरीदा।
होवाना लागय मनरूसी धाने, होवाय मूँगा उरीदा।
नो यो दाई मनरूसी धाने, नो यो मूँगा उरीदा।
बोझानी बाँधो मनरूसी धाने, बाँधो मूँगा उरीदा।
मीड़ो रे बाबा मनरूसी धाने, मींड़ो मूँगा उरीदा।
उड़वायो बाबा मनरूसी धाने, उड़वायो मूँगा उरीदा।
रासीनी बाँधाय मनरूसी धाने, उड़वायो मूँगा उरीदा।
रासेनी डूमों मनरूसी धाने, डूमो मूँगा उरीदा।
कोठी मा भरो मनरूसी धाने, भरो मूँगा उरीदा।
हेड़ो ओ दाई मनरूसी धाने, हेड़ो मूँगा उरीदा।
घाँटो यो दाई मनरूसी धाने, निमाड़ो मूँगा उरीदा।
कूटो दाई मनरूसी धाने, दाड़ो मूँगा उरीदा।
मनरूसी धानाक भाते रंधाबी, मूँगा उरीदा के दाड़।
तूमा फूलेयस भाते रंधाबी, कुमढ़ा फूलस दाडे रंधाबी।
झैं नानबी संगही गरबादक, पानी तोर संगहीक हाथे धूमलाही।
नान बयो संगही दुदमरीक, पानी तोर संगही हाथे उजड़ाही।
कोनेना हाथे केंवरी उठाबी, कोने हाथे आँसुनी पोचकी।
जौनी ना कौर हाथे केंवरी उठाबी डेरी हाथे आँसूना पोछनी।।

शब्दार्थ- **पाना** = पत्ता, **मींडो** = गहाई/ उड़ाकर, **रास** = ढेर, **निमाड़ो** = बिन लो, **तूमा** = लौकी।

थाली में हर प्रकार का बैगा भोजन परोसा और माँ दुल्हन को बड़े प्यार से खाना खिला रही है। दुल्हन माँ से कहती है- माँ पिताजी को कहो। हर्रा की लकड़ी को काटें। उसका हल बनाएँ। बीजा की लकड़ी का जुआ बनाएँ। काले बैलों को जोतकर खेत में हल चलाएँ। अपना खेत कयली-कछार में है। उसी खेत में परिवार के लिये फसल उगाये। माँ! तुम पिताजी से कहना- हल जोतने के बाद खेत में एक कोने में मनरूसी धान (चावल)

बोएँ। एक-एक कोने में मूँग और उड़द बोएँ। दुल्हन के पिता ने वैसा ही किया। खेत में बोये मूँग, उड़द और धान के पौधों में पहले अंकुर फूटे। फिर तने से एक पत्ता, दूसरा पत्ता, इस तरह पौधों की बालियों में बीज भर गये। तब बेटी कहती है- माँ! जाओ, तुम खेत घूम आओ। धान, मूँग, उड़द उग आये हैं। उनमें दाने बैठ गये हैं। अब जल्दी करो। फसल को काटकर ले आओ। बेटी के कहने पर माँ खेत में फसल देखने गई। उसने देखा फसल उग गई है। उसने फसल कटाई की। उसके पिता फसल का बोझ बाँधकर घर ले आये। सभी अनाज की उन्होंने जल्दी से गहाई की। अनाज निकल आया। सारा अनाज कोठियों में भर दिया गया। तब बेटी कहती है- माँ! अब तुम जल्दी से धान की कुटाई करो। मूँग, उड़द की दाल बनाओ। और जल्दी से खाना बनाओ। माँ ने जल्दी-जल्दी सारा काम किया और खाना बनाया। चावल-दाल बनाई। आँगन में कई तरह की सब्जियाँ लौकी-कुम्हड़ा भी फली है। उनकी सब्जी बनाओ। माँ ने दुल्हन को भोजन परोसा। भोजन करने के लिये एक सहेली ने दुल्हन के हाथ नर्मदा के पानी से धुलाये। तब दुल्हन कहती है- नहीं सखि! मेरे हाथ नर्मदा के पानी से नहीं धुलेंगे। मेरे हाथ तुम दूध से ही धुलवाओ। तब उसकी सहेली दुल्हन के हाथ दूध से ही धुलवाती है। फिर दुल्हन अपने हाथ से रूचि पूर्वक भोजन करती है।

बन्दोनी

तरी नानी नानी नान रे, नानी तरी नानी नाना रे नान।
दूध-दूध मा गोड़े धोबायबे, घीवय मा पाव परवारबे।
कोने बन्दाबे हथियार रे,
घोरिया कोने बन्दावे श्रृंगार रे।
दाई बन्धावे हथिया रे घोरिया,
बाबा बन्दावय श्रृंगार।
कैय दिना पूजही हथिया रे घोरिया,

कैय दिना पूजहीं श्रृंगार।
तरी नानी नानी नान रे, नानी तरी नानी नाना रे नान।
दूध-दूध मा गोड़े धोबायबे, घीवय मा पाव परवारबे।

शब्दार्थ - **गोड़े** = पैर, **धीवय** = घी, **हथिया** = हाथी, **घोरिया** = घोड़ा, **कैय** = कितने, **पूजहीं** = पूरेंगे/ रहेंगे।

दुल्हन जब अपने माता-पिता से विदाई के समय आशीर्वाद लेने जाती है- तब दुल्हन कहती है- हे माँ -पिता! आज तुम मेरे पैर पानी से मत धोना। आज तुम मेरे पैर दूध और घी से धोना। तुम आज मुझे आशीर्वाद या मेरी विदागी क्या दोगे? माँ कहती है- बेटी! तुम्हें मैं क्या विदाई दूँगी। तुझे मैं एक हाथी और एक बड़ा घोड़ा बिदागी (विदाई) में दूँगी। उन पर सारा श्रृँगार (सजावट की सामग्री) तुम्हारे पिता देंगे। बेटी कहती है- माँ! ये हाथी-घोड़ा मुझे कितने दिन साथ देंगे या ये कब तक मेरे साथ रहेंगे।

तब माँ कहती है- तुम्हारा कहना ठीक है। एक चीज मैं और देना चाहती हूँ। मेरा पहनने का सारा श्रृँगार सोने-चाँदी के आभूषण वस्त्रादि सब मैं तुझे देना चाहती हूँ। बेटी ने कहा- ये भी कितने दिन साथ देंगे? तब माँ कहती है- बेटी! तू चिंता मत कर, हाथी-घोड़े जब तक हैं, तब तक तो तेरे साथ रहेंगे। यह श्रृँगार (सुहाग) तेरे सब दिन साथ रहेगा। इससे बढ़कर हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ हमेशा रहेगा।

भाँवर

काट करीला रे गाधे बिजना,
काट करीला रे गाधे बिजना,
ले उत्तर के किंजर भँवरी आँगना मा रे ।
सीचे ला जावय पकड़य धीवरी चेनी अँगरी।
सीचे ला जावय पकड़य धीवरी चेनी अँगरी।।

किंजर भँवरी अँगना मा रे।
पथरा के भीठी माटी के नहाडोर।
गारी बोली दय ले माया ला झिना तोर।
काट करीला रे गाधे बिजना ले।
काट करीला रे गाधे बिना ले।
ले उतर के किंजर भँवरी अँगना मा रे।

शब्दार्थ – **करीला** = एक बाँस का नाम या हरा बाँस, **गाधे बिजना** = पर्रा-बिजना, **किंजर** = घूमना, **भँवरी** = भाँवर/ फेरे, **धीवरी** = मछली, **चेनी अंगरी** = छोटी ऊँगली, **भीठी** = भीत या दीवार, **माटी के नहाडोर** = मिट्टी के बने चिन्ह या अलंकरण, **माया** = ममता, **झिना** = मत।

भाँवर (फेरे) लगाते समय इस ददरिया गीत को गाया जाता है। गीत गाने वाली महिलाएँ गा रही हैं- हे दूल्हा-दुल्हन! तुम करीला बाँस से बने पर्रा बिजना (बाँस का गोल आसन) से उतरकर आँगन में बने मंडप के नीचे घूमो। भाँवर फिर लो।

मछली पकड़ने गये और चेनी अँगरी यानी सबसे छोटी ऊँगली के बराबर मछली पकड़ी। अरे! दूल्हा-दुल्हन तुम पर्रा बिजना से उतरकर भाँवर फिर लो।

देखो पत्थर की दीवार पर मिट्टी के नोहडोर यानी मिट्टी से सुन्दर-सुन्दर उद्रेखण अलंकरण बनाये गये हैं। दूल्हा-दुल्हन पर्रा-बिजना से उतरकर जरा भाँवर फिर लो। मुझे भले ही गाली दे लो, लेकिन इस प्रेम या ममता को मत तोड़ना या भूलना। बहन जरा इस गीत को धीरे-धीरे से गाना। प्यार से ही गाना।

अरे! दूल्हा-दुल्हन पर्रा- बिजना से उठकर अपने भाँवर पूरे कर लो। गीत चलता रहता है और दूल्हा-दुल्हान दोसी और सुआसा की मदद से भाँवर पूरा करते हैं। इस समय दोसी, दूल्हा और सुआसा पर्रा-बिजना में

दुल्हन को बैठाकर फेरा घूमाते हैं। इसे 'कुँवारा-कुँवारी भाँवर' कहते हैं, जिसमें दूल्हा हाथ लगाता है।

विवाह

गावे गाना ला।
सीसे नागिन बहिस गा धरती माता ला।
धरती माता बहिस अने दाई ला।
अने दाई समोखिस सारी दुनिया ला
चाँद सूरज नर नारी दोनों देथय उजेला ला।
हौ रे-हौ रे जल रानी पवन बरोवय रे दोस।
कच्चा सुपाड़ी फोड़े मा फोटाहीं।
लगे हरा माया छोंड़े मा छुटाहीं।
पानेला खावय खैर नहीं आय।
तैं तो गाय ले ददरिया बैर नहीं आय।

शब्दार्थ – **सीसे** = सिर पर, **बहिस** = ढोना, थामना, **अनेदाई** = अन्नमाता, **समोखिस** = पोषित, **बरोवय** = बहना, **फोटा ही** = फूटे, **छुटा ही** = छूटे, **बैर** = दुश्मनी, **गाय ले** = गा ले, **आय** = है।

यह भाँवर गीत है। इसे भाँवर फिराते समय गाँव की और बारात में आई महिलाएँ एक साथ गाती हैं। महिलाएँ गीत में कहती हैं- धरती माता को शेष नाग अपने फन पर धारण किये हुए हैं। और धरती माता अन्नपूर्णा माई को धारण किये हुए हैं। अन्नमाता सारी दुनिया को अपने में समेटे है। पोषित करती है। चाँद-सूरज दोनों स्त्री-पुरुष सारे संसार को प्रकाश देते हैं। उजाला भरते हैं। जल रानी हवा को चलने के लिये मजबूर करती हैं। उसी से ठंडी-ठंडी हवा बहने लगती है। उसी से पानी में लहरें पैदा होती हैं।

कच्ची सुपारी को फोड़ने में कोई देर नहीं लगती है। लेकिन पक्की सुपारी को फोड़ना जरा मुश्किल लगता है। इसी तरह तुम्हारी माया-ममता

(देश-प्रेम) भी बड़ी मुश्किल से छूटती है। जिस प्रकार पान खाने से होंठ लाल हो ही जाता है, उसी प्रकार प्रेम के ददरिया गाने में कोई रोक-टोक नहीं है, कोई दुश्मनी नहीं है। इसी गीत को सारे बाराती आँगन में बैठकर सुनते हैं और गाने वालों को 'वाह-वाह' करके शाबाशी देते हैं। फिर उत्साह में एक-एक ददरिया झड़ते लगने हैं।

विवाह

राज तिलक ही समय कैकही
दो वरदान मँगाई, कि दो वरदान....
मँगाई हो राम।
राज तिलक भरत को भाये,
राम लखन वन को जाई।
मोरे राम चले बनवास रे दोस।
पुत्रे सोहग में राजा दसरत दिये पराण।
गँवाई दिये पराण गँवाई हो राम
भीतर रोवे माता कौसलिया
बहार भरत भाई, मोरे राम
चले वनवासे से दोस।
राम चले लक्ष्मण संग साथे
परजा भई भिखारी कि परमा,
भई भिखारी हो राम।
आ बरजन सो माने नहीं सीता
भये तैयारी मोरे राम।
चले बनवासे रे दोस।
चौदह बरस बिताये बनसा।
दुष्टों को संघाड़े कि,

दुष्टो को संघाड़े हो राम।
रामा दुष्टों को संघाड़े हो राम
आ दुनिया को सुख दिये
राम ने भूमि का भार उतारे मोरे राम।
चले बनवासे रे दोस।।

शब्दार्थ - **मँगाई** = माँगे, **पुत्रे सोहग** = पुत्र के वियोग का शोक, **परान** = प्राण, **गँवाई** = गँवाना, **बरजन** = रोकना, **संघाड़े** = संहारे, **भूमि का भार** = पृथ्वी पर फैले पाप का भार, **उतारे** = उद्धार किये।

राज तिलक के दिन ही कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वरदान माँग लिये। राम को वनवास और भरत को राज तिलक। राम जब अयोध्या से वनवास के लिये सीता और लक्ष्मण के साथ निकले तो इधर पुत्र वियोग में राजा दशरथ ने अपने प्राण त्याग दिये। दोहरा दु:ख अचानक आ पड़ने के कारण राजमहल में माता कौशल्या रो रही हैं। भरत को मालूम पड़ा तो उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगी। जब राम-लक्ष्मण और सीता अयोध्या से निकल गये। सारी प्रजा भिखारी हो गई। सब लोग सीता को रो-रो कर रोक रहे हैं। फिर भी सीता बिना कुछ बोले राम के पीछे-पीछे वन में चली जा रही है। राम ने चौदह वर्ष वन में बिताये। वन में कई दुष्ट राक्षसों का संहार किया। लंका के रावण जैसे महा अहंकारी दुष्ट को मारा, इस तरह राम ने अपनी त्याग, तपस्या और वीरता से दुनिया को सुख दिया और इस धरती से दुष्टों को मारकर उसके भार को उतार दिया।

विदाई

गवाये गाना ला, धीरे गाय ले दाई तो।
कहाय लढ़ाना बेटी, दादा कहाय हुसिया।
भाई तो कहाय पिंजड़ा का मैना।
का बोली दैके निकल गय।
पानी ला पीवत पीवत भरा ले।

तैं तो आवाजाही करबे जीवत भरा ले।
कौन बना आमा, कौने तो बना जाम।
कौने बन खा निकले लखन सिया राम।
धीरे गाय ले दाई तो कहाय।
लढ़ाना बेटी दादा कहाय हुसियार।
भाई तो पिंजरा का मैना का बोली
दै के निकल गय।

शब्दार्थ – **लढ़ाना** = लाड़ली, **बोली** = वचन, **पीवत-पीवत** = पी-पीकर, **आवा-जाही** = आना जाना, **जीवत भरा** = जीवन भर, **बना** = वन/ जंगल।

विदाई के समय माँ-पिता और भाई कहते हैं। पहले माँ कहती है- गीत जरा धीरे गाना। आज मेरी लाड़ली इकलौती बेटी तू मेरी गोदी छोड़कर कहाँ जाती हो? पिता कहते हैं- मेरी होशियार बेटी! आज तुम ससुराल जा रही हो। भाई कहता है- ओ मेरी पिंजरे की मैना बहन! तू आज मुझे क्या वचन (आशीर्वाद) देकर जा रही हो।

बेटी कहती है- इस घर का पानी-पीते मैं इतनी बड़ी हुई हूँ। तुम लोगों ने मुझे अच्छा खिला-पिलाकर कर बड़ा किया है। अच्छे संस्कार दिये है। जिंदगी में आना-आना तो लगा रहेगा। कौन से वन में आम का पेड़ लगता है और कौन से वन में जाम के फल लगते हैं। यह न आम के और न जाम के पेड़ को मालूम है। आम और जाम को क्या मालूम था कि एक दिन राम जैसे राजा सीता-लक्ष्मण सहित वन में आकर वन के फल आम, जाम और बेर खायेंगे। राम-सीता और लक्ष्मण को भी वनवास जाना पड़ा। इसी तरह मुझे कभी न कभी ससुराल जाना ही पड़ता। इसलिए तुम सब फिक्र मत करो। मुझे खुशी-खुशी विदाई दे दो। विदाई का समय है, जरा धीरे-धीरे भरे गले से विदाई गीत गाना। मेरे भी आँखों में आँसू थम नहीं रहे हैं। तुम सब सुखी रहना।

अध्याय – 3
मृत्यु गीत

हाय तैं तो मार दारे राम,
हेड़ के कटार बैरी मार दारे। टेक
दाई रोवे गोड़ेसा, भाई रोवे मुड़ेसा।
बेटी तो रोवे छतिया कतार।
हेड़ के कटार बैरी मार दारे।
हाय तैं तो मार दारे राम,
हेड़ के कटार बैरी ..... ।
के ला तोरे आगी देंथय, केला तोर माटी।
केला तोर गंगाजी सिराँय ।
हेड़ के कटार बैरी मार दारे।
हाय तैं तो मार दारे राम,
हेड़ के कटार बैरी ..... ।
धर्मी चोला ला आगी देथंस, पापी चोला ला माटी।
भागे पुरूसला गंगाजी सिराँय।
हेड़ के कटार बैरी मार दारे।
हाय तैं तो मार दारे राम,
हेड़ के कटार बैरी.... ।

हे राम! आज हम पर बहुत भारी विपत्ति आ गई है। आज घर का मुखिया मृत्यु के मुख में चला गया है। उस पुरुष की पत्नी पति के पैर छू-छूकर रोती है और कहती है- हे पतिदेव! तुम मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो। बेटा मृत पिता के सिर को छू-छूकर रोता है और कहता है- हे पिता! तुम छोड़कर कहाँ चले गये। हम तुम्हारे बिना कैसे जी सकते हैं। बेटी पिता की छाती पर अपना सिर पटक-पटक कर रोती है और कहती है- हे पिता! तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गये हो। मुझे कुछ बताया भी नहीं। जाते समय मैं तुमको कुछ बोल भी नहीं पायी। मुझे आशीर्वाद भी नहीं दे पाये।

बेटा पूछता है- माँ किसको आग में जलाते हैं, किसको मिट्टी देते हैं और किसको गंगाजी ले जाते हैं।

माँ कहती है- बेटा! मैं इतना ही जानती हूँ कि जो अच्छे कर्म करके पुण्य (धर्म) कमाते हैं। असली धार्मिक जीवन जीवन जीते हैं। उसी को अग्नि में जलाते हैं। जो पाप कर्म करके पाप कमाते हैं, जो पापी कहलाते हैं, उसे धरती के अंदर गड़ा खोदकर मिट्टी में गढ़ाते हैं। और भाग्यवान पुरुष की अस्थियाँ गंगाजी ले जाई जाती हैं। उसे 'फूल सिराना' कहा जाता है।

आग- दाग या मृतक को दफनाने के बाद सब लोग घर आते हैं। शरीर पर तेल लगाते हैं। सगे-सम्बन्धी घर जाते हैं और एक बाटल दारू दाल-चावल लाते हैं। मृतक परिवार को दारू पिलाते हैं और खाना खिलाते हैं। तब यह गीत गाते हैं।

अध्याय -4
पर्व गीत

दशहरा

तरी रे हनी तरी, तरी रे हनी तरी ...सुआ रे
तरी रे हनी तरी, तरी रे हनी तरी ...सुआ रे
राछत - पूछत हमु आयन भूली, कुकरा भूकी देय ...सुआ रे
निकल पटेलिन आँगना मा, दर्शन देखो हमार...सुआ रे
कैसे के निकालव आँगना, कोरा है बालका पूत ...सुआ रे
जोगी मंगोता निशेदिना, हमें देखो बरह है आन ...सुआ रे
पटेल बैठय सोने माँची, पाटोलिन बैठय ओसार...सुआ रे
झफीया मा हौवय सुवा बेली, शोई देखो माझे द्वार...सुआ रे
हाथे हर्दी धरी-धरी माथे मा टीका देय...सुआ रे
हरदी के टीका धूमे-धूमे, घीवे के टीका देय ...सुआ रे

शब्दार्थ- **राछत** = रास्ता, **पूछत** = पूछते, **हमु आयन** = हम आये, **कुकरा** = कुत्ते, **भूकी** = भूकन, **कोरा** = नवजात/ छोटा, **जोगी** = साधु-सन्यासी, **मंगेता** = माँगने आना/ भीख माँगना, **झपिया** = झाँपी।

बैगा महिलाएँ पूस माह की पूर्णिमा के दिन एक गाँव से दूसरे गाँव नाचने जाती हैं। यह नृत्य प्रायः रात्रि में देर तक चलता है। सबसे पहले महिलाएँ पटेल के घर जाती हैं। तब महिलाएँ यह सुआ गीत गाकर नृत्य करती हैं। गीत सुआ को सम्बोधित होते हैं।

गीत में महिलाएँ कहती हैं- हम तुम्हारा घर का पता पूछते हुए यहाँ आये हैं। हमको देखकर तुम्हारे गाँव के कुत्ते भूकने लगे। पटेलिन जरा निकलकर आँगन में आओ। हमारे दर्शन करो। हमको देखो तो सही। पटेलिन घर के आंदर से ही कहती है। बहिन! मैं कैसे निकलकर आँगन में आ सकती हूँ। मेरी गोदी में छोटा सा बच्चा है।

साधु संन्यासी तो माँगने घर के सामने रोज ही आता है। लेकिन हम लोग तो साल भर में एक ही बार आते हैं। पटेल-पटेलिन तुम आँगन तक नहीं आ सकती हो तो कम से कम ओसारी (बरामदे) तक तो आ जाओ। ओसारी में पटेल सोने की माची पर और तुम चाँदी की माची पर बैठो। हम तुम्हारे द्वार दशहरा सुआ गीत गाने और नाचने आये हैं। पटेलिन अंदर से कहती है- झाँपी (बाँस की टोकनी) में मिट्टी का सुआ और बेलफूल रखे हैं। मैं उन्हीं की सेवा में ही लगी हुई हूँ। ऐसा न हो कि उस पर किसी की नजर लग जाय, कोई उसे चुराकर न ले जाय। पटेलिन घर से बाहर निकली और हाथ में हल्दी और आरती में जलता दिया रखकर सबको माथे पर हल्दी का टीका लगाया। रीति अनुसार स्वागत किया। इस पर महिलाओं ने कहा- अरे पटेलिन! हल्दी का टीका तो घूमिल हो जायेगा। हमें घी का टीका लगाओ।

अमूहा

री रीना री रीना अमूहा री रीना री रीना अमूहा।
कौन से बोवय न अमूहा।
बैगा सा बोवय न अमूहा।
बैगा सा बोवय न अमूहा न।
अमाना लागय न अमूहा।
जमाना लागय न अमूहा।

एक पाना होय गय न अमूहा न।
फूलन लागय न अमूहा।
पाकन लागय न अमूहा।
पाकन लागय न अमूहा।
तोरन लागय न अमूहा न।
काही काटाबो न अमूहा।
काही काटाबो न अमूहा।
काही काटाबो न अमूहा।
हसिया काटाबो न अमूहा न।
खावन लागे न अमूहा।
खावन लागे न अमूहा।
कैसन लागे न अमूहा न।
मीठ-मीठ लागे न अमूहा।
मीठ-मीठ लागे न अमूहा।
बैगा सा बोवय न अमूहा न।

शब्दार्थ - **बोपय** = बोया, **अमूहा** = आम, **पान** = पत्ता, **फूलन** = फूलने फलने लगा, **पाकन** = पकने लगा, **मीठे** = मीठा।

बैगिन लड़की कहती है- यह आम किसने बोया है, उगाया है। बैगा लड़का कहता है- यह आम बैगिन लड़की ने बोया है और उगाया है। अब आम के पेड़ की जड़ें जमीन में गड़ गई हैं और धीरे-धीरे बढ़ने लगा है। आम के पौधे पर पहले एक पत्ता निकला, दूसरा निकला, फिर तीसरा निकला। इस तरह कई पत्ते निकले। फिर आम पर 'बौर' यानी फूल आये और बाद में फल लगे। आम पर फल लद गये तो वे पकने लगे। आम पक गये तो बैगा लड़के पके आम तोड़कर खाने लगे।

बैगा लड़की कहती है- आम के पेड़ से पके आम फल कैसे तोड़ेंगे?

तब बैगा लड़का कहता है- हसिया से सारे आम काटेंगे या बेड़ेंगे। जब लड़की आम खाने लगी तो लड़के ने पूछा- तुझे आम कैसा लगा। लड़की कहती है- आम बहुत मीठे लगे। तब बैगा लड़का कहता है- तुम मुझसे विवाह करोगी तो जीवन भर ऐसे ही मीठे-मीठे आम खिलाऊँगा। आम के पेड़ उगने और आम के मीठे फल के बहाने बैगा लड़के-लड़की के जवान होने और दोनों के मन में प्रेम अंकुरण को समझा जा सकता है।

रीना दशहरी

री रीना, माय ओ, री रीना रे माय मैया मोरे।
री रीना, माय ओ, री रीना रे माय मैया मोरे।
पहली मैं गायेंव रे माय, मैया मोरे, धरती क सेवा माय। मैया...
दूसरा मैं गायेंव रे माय, मैया मोरे, ठाकुरदेव सेवा रे माय। मैया...
तीसरा मैं गायेंव रे माय, मैया मोरे, खेरीमाई सेवा रे माय। मैया...
चौथे मैं गायेंव रे माय, मैया मोरे, चाँद-सूरज सेवा रे माय। मैया...
पाँचवा मैं गायेंव रे माय, मैया मोरे, चारों खूटक देवता सेवा रे माय। मैया...
भरहूवा नी काटय रे माय, मैया मोरे, नागा बैगा रे माय। मैया...
खूटन काटे रे माय, मैया मोरे, खूटल पुरी नागर रे माय। मैया...
सान्तनी काटे रे माय, मैया मोरे, सातन पुरी नागर रे माय। मैया...
सरैनी काटे रे माय, मैया मोरे, शरणपुरी नागर रे माय। मैया...
छावनी काटे रे माय, मैया मोरे, धवलपुर नागर रे माय। मैया...
तीनसना काटे रे माय, मैया मोरी, तिसलपुर नागर रे माय। मैया...
हरनी काटे रे माय, मैया मोरी, हरनपुरी नागर रे माय। मैया...
बीजनी काटे रे माय, मैया मोरी, बजलपुर नागर रे माय। मैया...
भरहुवा मोड़ी बैठे रे माय, मैया मोरी, नागा बैगा रे माय। मैया...
तेखर पाछू बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय किसाने रे माय। मैया...
ओखर पाछू बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय अगरिया रे माय। मैया...

ताखर पाछू बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय अहीरा रे माय। मैया...
ओखर पाछू बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय पनिका रे माय। मैया...
ताखर पाछू बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय पठारी रे माय। मैया...
ताखर पाछू बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय पठारी रे माय। मैया...
ओखर पाछू बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय पठारी रे माय। मैया...
छव नगरी बैठे रे माय, मैया मोरे, जातय तेली तमेरी रे माय। मैया...
तेली तमेरी रे माय, मैया मोरे, बहोतय चिवड़ई रे माय। मैया...
चारोनी खूटे रे माय, मैया मोरे, खीला ठोकाए रे माय। मैया...
बसी गय बसी गय रे माय, मैया मोरे, अवधपुरी शहर रे माय। मैया...

शब्दार्थ- **गायेंव** = गाते हैं/ स्मरण करते हैं, **भरहुआ** = एक पेड़, **साजन** = सजन का वृक्ष, **नागा बैगा** = बैगाओं का पूर्वज, **धावनी** = धावड़ा, **तेखर** = उसके, **चारोनी खूँट** = चार दिशाएँ, **खीला** = कील।

हे माँ! सबसे पहले हम धरती माता का सुमिरण करते हैं। उसके बाद गाँव और गाँव की सरहद की रक्षा करने वाली देवी खेरमाई का स्मरण करते हैं। गीत गाते हैं। चौथे स्थान पर हम चाँद और सूरज को याद करते हैं, जो सबका अंधकार दूरकर प्रकाश देते हैं। पाँचवे स्थान पर चारों दिशाओं के रखवाले दिक्पाल देवताओं को स्मरण करते हैं। गीत गाते हैं। उनकी सेवा करते हैं।

इसके पश्चात् नागा बैगा ने पेड़ काटकर धरती जोतने के लिये साधन बनाया। उसी से हल और उस की बची हुई लकड़ी के खूँटे से औजार बनाये और धरती में बीज उगाना प्रारम्भ किया। जिन लोगों ने सजन का पेड़ काटा, उन्होंने सजन का सुन्दर हल बनाया। जिन्होंने सरई का पेड़ काटा उन्होंने सरई का देवरूप हल बनाया। कईयों ने धावन के पेड़ को काटकर कठोर हल बनाया। कई ने हरनी वृक्ष को काटकर हरनी जैसा हल्का हल बनाया। बीजनी के पेड़ काटकर बीजा जैसा मजबूत हल बनाया। बीजा की

लकड़ी से ही हल का जुआ बनाया। भरूआ का पेड़ काटकर नागा बैगा ने पहले-पहल घर बनाया। गाँव बसाया इसके बाद गोंड जाति के किसान लोग बसे। फिर लोहे के औजार बनाने वाले अगरिया बसे। इसके बाद गाय-भैंस चराने वाले अहीर, कपड़े बुनने वाले पनिका, मेहनत -मजदूरी करने वाले पठारी, फिर बाजे बजाने वाले ढुलिया बसे। इसके बाद नगर में घोड़े पालने वाले आये, और सबसे अंत में तेल पेरने वाले तेली तथा पान उगाने वाले तम्बोली बसे। तेली-तम्बोली भी नगर के लिये बहुत आवश्यक जातियाँ हैं। इनके बिना कोई गाँव नहीं बस सकता। फिर गाँव या नगर के चारों कोनों में नागा बैगा ने गाँव की सुरक्षा के लिये अभिमंत्रित लोहे की कीले ठोक दी। इस प्रकार अवधपुरी की तरह पूरा सुरक्षित बैगा गाँव बस गया। आवश्यकता के अनुरूप पृथ्वी पर कर्म के मुताबिक जातियाँ बनती चली गई।

वार झूलनी

री रीना रीहल रीना, री रीना रीना हो, कि
री रीना रीहल रीना, री रीना रीना हो ... ।
दे दाई गोड़ चुटकी जाव मड़ीला हाट हो। ...2
तैं कहाँ जाबी पूतो आ रे अर भोरे हो। ...2
दे दाई दबरी पैरी जाव मड़ीला ना हाट हो। ...2
तैं कहाँ जाबी पूतो आ रे अर भोरे हो। ...2
दे दाई कमर करधन जाव मड़ीला हाट हो। ...2
दे दाई हाथ के गुजरिया, जाव मड़ीला हाट हो। ...2
दे दाई बाँह का बहंकर, जाव मड़ीला हाट हो। ...2
दे दाई गले का सुतिया, जाव मड़ीला हाट हो। ...2
दे दाई कान के ढार, जाव मड़ीला हाट हो। ...2

शब्दार्थ- **मड़ीला** = मंडला के, **भोरे** = सुबह, **जाबी** = जाना, **हाट** = बाजार।

एक बैगिन लड़की माँ से कहती है- माँ! मुझे तुम्हारे गहने दे दो। मैं गहने पहनकर मंडला के हाट घूमने जाऊँगी। माँ बोली- तुम मंडला क्यों जा रही हो। लड़की कहती है- माँ पहले मुझे गहने तो दे दो। फिर मैं बताऊँगी। इस पर माँ कहती है- तुझे क्या चाहिए - मैं पैर की ऊँगली से लगाकर सिर तक के गहने दे दूँगी। तुम सुबह से तैयार हो गई हो। अच्छा तुम गहनों के नाम बताओ। तब लड़की कहती है- माँ मुझे पैर की उँगलियों की चुटकी, पाँव की पैरी, कमर की करधनी, हाथ के गुजरिया, बाँह का बहुँटा, गले की सुतिया और कान का सोने का ढार दे दो। मैं इनको पहनकर सहेलियों के संग मंडला शहर के बाजार में घूमने जाऊँगी।

शरीर के विभिन्न अंगों के आभूषणों के नाम उनके पहनने के अनुसार इस बैगा गीत में बहुत खूबसूरती से पिरोये गये हैं। स्त्री के आभूषण की चाह को भी व्यक्त किया गया है।

फागुन

बन्दानी-बन्दानी, बन्दानी-बन्दानी, बन्दानी-बन्दानी
बन्दानी बनोरा झूमे रे।
काहिन काट ढोलकी, काहिन काट डाँग, बनोरा झूमे...
बीजा काट ढोलकी, सेमहड़ काट डाँग, खनोरा झूमे...
काँहिक हेलर झूमर, काहिन डाँग, बनोरा झूमे...
बीरन मालक हेलर झूमर, मरगा झूलक डाँग, बनोरा झूमे...
कोन धरेय ढोलकी, कोन धरय डाँग, बनोरा झूमे...
ढोलकार धरय ढोलकी, नचगार धरय डाँग, बनोरा झूमे...
कोन खेलय हरदी, कौन खेलय गुलाल, बनोरा झूमे...
टूरी तो खेलय हरदी, टूरा खेलय गुलाल, बनोरा झूमे...

शब्दार्थ- **बन्दानी** = गाने की प्रारंभिक धुन, **बनोरा** = जूड़े में लगी माला, **डाँग** = झाल जो मोर पंख से बनाई जाती है जिसे बाँस में बाँधा जाता है, **हेलर** = हिलना-डुलना/ झूलना, **नचकार** = नाचने वाला।

फागुन माह में महिलाएँ एक गाँव से दूसरे गाँव नाचने जाती हैं। उसी समय का यह फागुन गीत है। बैगा महिलाएँ नाचते समय नृत्य श्रृंगार में अपने जूड़ों में बीरन मालाएँ बाँधती हैं। जिससे उनकी सुन्दरता बढ़ जाती है। उसी को लक्ष्य करके गीत की रचना हुई। कौन सी लकड़ी से ढोलक बनाई गई है और कौन सी लकड़ी की डाँग (मोरपंख की झाली) बनाई गई है।

बीजा की लकड़ी की ढोलक और सेमल की लकड़ी से डाँग बनाई है। झूमने (लटकने) वाली बीरनमाला किस चीज से बनाते हैं और किस चीज से डाँग यानी झाल बनाई गई है। बीरन घास से बीरन माला बनाते हैं और मोरपंख से झाल बनाई जाती है।

कौन ढोलक बजाता है और कौन डाँग को संभालता है। ढोलक बजाने वाला कमर में ढोलक बाँधता है और नाचने वाले हाथ में डाँग रखते हैं। कौन हल्दी से होली खेलता है और कौन गुलाल लगाता है। लड़की हल्दी से होली खेलती है और लड़का गुलाल लगाता है। लड़की का पीला रंग और लड़के का गुलाबी रंग होली में छा जाता है।

उतारू

तरी नानार नानी, तरी नानार नानी,
तर नार नानी, खेल रे गजबेल खेलन हम रे।
केखर आँगन झलरी,
केखर आँगन झलरी,
केखर छीतल छाय...खेल रे...
राजा के आँगन झलरी,
राजा के आँगन झलरी,
रानी क छीतल छाय...खेल रे.

दै हो सास कुदरी,
दै हो सास कुदरी,
हम हड़द खनन जान...खेल रे
दै हो सास मुसरी,
दै हो सास मुसरी,
हम हड़द कटन जान...खेल रे
दै हो सास सुपरी,
दै हो सास सुपरी,
हम हड़द पछनन जान...खेल रे
दै हो सास खोरली,
दै हो सास खोरली,
हम हड़द खेलन जान... खेल रे।
तरी नानार नानी, तर नार नारी,
खेल रे गजबेल खेलन हम रे।।

शब्दार्थ– **केखर** = किसके, **झलरी** = झिल मिल, **छीतल** = शीतल, **कुदरी** = कुदाली, **हड़द** = हल्दी, **मुसरी** = मूसल, **सुपली** = सूपा, **खोरली** = कटोरा, **गज बेल** = पिचकारी, होली।

हम भर–भर पिचकारी होली खेल रहे हैं। आज किसका घर आँगन खुशियों से झिलमिला रहा है। किसके आँगन में आज ठण्डी छाँव गहरा गई है। अरे! यह तो अमुक राजा का आँगन खुशियों से झिल मिला रहा है, उसकी रानी के आँगन में ठण्डी छाँव फैली है। यहीं होली खेलने का मन है। बहू कहती है– सासूजी! हमें कुदाली दे दो। हम हल्दी खोदने जायेंगे। हमें मूसल दे दो। हम हल्दी कूटने–पीसने जायेंगे। हमें सूपा दे दो, जिससे हल्दी को पछिटेंगे, बुहारेंगे। सासूजी! हमें कटोरी दे दो। उसमें हल्दी घोलकर होली खेलने जायेंगे।

लोधा

रीर नाओ रीना माय मोरे रीर नाओ रीना की। ...2
पहली मैं गायो माय मोरे माय धरती के सेवा
दूसरा में गायो माय मोरे–ठाकुर देव का सेवा
तीसरा में गायो माय मोरे– खेरो मायक सेवा
चौथा में गायो माय मोरे– चाँद सूरज की सेवा
पाचेमा गायो माय मोरे– चार खूटा की देवता
झूर–झूर माय मोरे बैहर बहय ...2
सुर सुर माय मोरे चले पुरवेया ...2
घट घट माय मोरे बदल सिरजय ...2
गरजय घूमड़य माय मोरे कारी बदलिया ...2
चारोन खूटे माय मोरे कारी बदलिया ...2
बरसय रातय माय मोरे मेगो बरसय ...2
भर गय भरीगय माय मोरे ताला डोबरिया ...2
मारे हिलोर माय मोरे ताला, डोबरिया ...2
फुट गय फूटी गय माय मोरे ताला डोबरिया
बह गय वही गय माय मोरे ताला डोबरिया
एक धारो बहय माय मारे दूदन के धारो ...2
एक धारो बहय माय मोरे रक्तिनको धारो ...2
एक धारो बहय माप मोरे गोबरिन को घारो ...2
एक धारो बहय माय मारे चिखलिन को धारो ...2
एक धारो बहय माय मोरे चारो चौवरासी ...2
एक धारो बहय माय मोरे सातों ही धारो ...2
बह गय बहीगय माय मोरे धरती पतालो ...2
सातो ही समदुर माय मोर मारे हिलोरा ...2

सातो ही समदुर माय मोरे कारी औपटपर ...2
कारी औपटपर माय मोरे बरीसा पीपर
बरीस पीपर माय मोरे बारोही खूदर
ऊ हैय जनमय माय मोरे बारा भाई लोधा ...2
केखर पाघू जनमय माय मोरे दूध कोड़ी लोधा
ओखर पाछू जनमय माय मोरे रक्ती बीरो लोधा।
ऊ हैय जनमय माय मोरे गोबरी बीरो लोधा ...2
ऊहैय जनमय माय मोरे चिखली बोरो लोधा ...2
ओखर पाछू जनमय माय मोरे हड़कोड़ी लोधा ...2
ऊहैय जनमय माय मोरे चिलोचिलो लोधा ...2
तेखर पाछू जनमय माय मोरे नोनी लोधा ...2
कहर कहर रोथय माय मोरे नीनी औवढेरिन
काभूतो रोथय माय मोरे काभूतो रोधय ...2
छाती के मारे सलगय माय मोरे बारा भाई लोधा
टेंघरा के मारे ढूकय माय मोरे बारा भाई लोधा
डेखन लागे माय मोरे बारा भाई लोधा
कहा के भूतो होतिस माय मोरे नानी औवढेरिन
उठे के बहीलिन माय मोरे बारा भाई लोधा
धामेय रूड़ावैय माय मोरे पौनैय पूरावैय
मनमना सोचेय माय मोरे बारा भाई लोधा
का खाना खाबो माय मोरे का पानी पीबो
सोने के धनुषबाण माय मोरे सोने पनीच
सोने के सेरैय माय मोरे सोने बिसाड़ी
होय गईन है तियारी माय मोरे बारा भाई लोधा
पूछन लागे माय मोरे नोनी औवढेरिन
तुम कहाँ जाथो माय मोरे बारा भाई लोधा

हम वनवास जाथन माय मोरे बारा भाई लोधा
तै इही रहबे माय मोरे नेनी औवढेरिन
रेगन लागे माय मोरे बारा भाई लोधा
आगू के पैईया माय मोरि पलंग देसारिन कि माय मोरे लूहंग औरेगय ना
पहुँचन लागे माय मोरे भौवरा पहार
लगयन घटनिया माय मोरे बारा भाई लोधा
खेदत लयजैय माय मोरे चिलो-चिलो लोधा
एकेला मोरे माय मोरे बारा गिरावय
सरैय के कावर माय मोरे धनहू के टेका
लौटन लागे माय मोरे बारा भाई लोधा
आगू के पैया माय मोरे लूहंगी रेगय ना
पहुँचने लागे माय मोरे बारा भाई लोधा
उतकी देखय माय मोरे नोनी औवढेरिन
छाय छूई खोजे माय मोरे नोनी औवढेरिन
कहाँ है दीया माय मोरे कहाँ बाती
सोने के दीया माया मोरे सोने की बाती
सोने गडुवा माया मोरे सोने पिड़ोली
गोड़ धवाथय माय मोरे नोनी औवढेरिन
मड़ावन लागे माय मोरे बारा जीवादे
रीठा लकड़ी कबाड़े माय मोरे बारा भाई लोधा
भूजन लागे माय मोरे बारा जिवादे
काटन लागे माय मोरे बारा भाई लोधा
मूड़े के बाड़ा माय मोरे रूण्ड के खड़ही रक्तिन के धार
मूड़ फोड़ गूदी माय मोरे आँख फोड़ पानी
आलो का भोजन माय मोरे सूखा दतून

शब्दार्थ- **चार खूटा** = चार दिशा, **बैहर** = हवा, **सिरजय** = बनना, **मेगो** = मेघ/ बादल, **डबरिया** = डबरा, **ताला** = तालाब, **रक्तिन** = खून, **गोबरिन** = गोबर, **चिखलिन** = कीचड़, **बरीसा** = वृक्ष, **पीपर** = पीपल, **बारोही** = धूल उड़ना, **दूध कोड़ी** = दूध से उत्पन्न, **रक्तीवीरो** = रक्तभाई, **सलगय** = सरकना, **टेंघरा** = घुटने चलना, **धनहू** = धनुष, **पनीच** = प्रत्यंचा, **बिसाड़ी** = बाण। **वनवास** = जंगल, **लूहँगी** = लम्बे डग, **घटनिया** = धनुष पर बाण चढ़ाना, **चिलो** = जरख, **रीठा** =लकड़ी, **मूड़े** = सिर, **सूखा दतून** = नाश्ता, **आलोकर** - ताजा खाया, **जीवादे** - जानवर, **पिड़ोली** = पीढ़ा, **धवावय** = धोये, **गडुवा** = कलश/ लोटा, **मड़ावन** = रखना।

सबसे पहले हम सबको आधार देने वाली धरती माता के गुण गाते हैं। उसकी वंदना करते हैं। पूजा करते हैं। इसके बाद गाँव के रक्षक देवता ठाकुरदेव का सुमिरन करते हैं। तीसरे क्रम में हम गाँव की सीमा की रक्षक देवी खैर माई का स्मरण करते हैं। चौथे क्रम में सबको प्रकाश देने वाले सूरज और चाँद की वंदना करते हैं। पाँचवें क्रम में चारों दिशाओं के देवताओं के गुणगान करते हैं, क्योंकि वे ही पृथ्वी के रक्षक प्रहरी हैं।

हे माँ! धीरे-धीरे ठण्डी हवा बहने लगी है। झूर-झूर हवा धीरे-धीरे बहती है, लेकिन वह तन बदन को लगकर थोड़ी झुर-झुरी यानी कंपकपी पैदा करती है। इसके पश्चात् माघ पूस में 'सुर-सुर' करके पूर्व की ओर से चलने वाली 'पुरवैया' हवा चलने लगती है। पुरवैया की 'सुर-सुर' हवा शीतल तो होती है, लेकिन तन बदन को छूकर वह एक प्रकार का आनंद उल्लास पैदा करती है। इसलिये गीतों में प्राय: 'पवन पुरवैया' कहावत का अधिक उपयोग किया जाता है। चाहे जनजातीय गीत हों या लोक बोलियों के गीत हों।

हे माँ! आकाश के कोने-कोने से बादल उठने लगे हैं। काली बदलियाँ इधर-उधर से उमड़-घुमड़ रही हैं। गरज-तरज रही है। चारों दिशाओं में बिजलियाँ कड़क रही हैं। चमक रही हैं। पानी से भरे काले-काले बादल बरसने लगे हैं। सारे नदी, तालाब, पोखर पानी से लबालब हो गये हैं। वे

हिलोरें ले रहे हैं। छोटे-छोटे पोखरों और डबरों ने अपनी सीमा तोड़ दी है। कुछ ताल -डबरे नदी की तरह ऊपर से बहने लगे हैं। वर्षा ऐसी हो रही है, जैसे बूँदों की लड़ियाँ टूटती नहीं है। बूँदों की जल धारा ही बन गई है। एक यह बूँदों की धारा हैं, जो पृथ्वी को तृप्त करती है, दूसरी तरफ शरीर में रक्त की धारा हैं, जो निरंतर बहकर मनुष्य को जीवन और जीवन्तता प्रदान करती है। एक धारा गोबर-कीचड़ की है।

एक धारा ऐसी है, जो पूरी सृष्टि की है। एक धारा ऐसी भी है, जो धरती से पाताल तक जाती है। कई धाराओं से मिलकर पृथ्वी पर सात बड़ी जल धाराएँ बनी। जिन्हें सात समुद्रों के नाम से जाना जाता है, जिसमें अथाह जलराशि हिलोरे लेती हैं। सातों समुद्रों के मध्य धरती स्थित है। धरती पर एक काला पहाड़ (पत्थर) है। जिस पर पेड़-पौधे वनस्पतियाँ फैली हैं। उस काले पहाड़ में एक पीपल का वृक्ष भी है। उस पीपल से धूल मिट्टी से भरी कुँवारी धरती पर बारह भाई लोधियाओं ने जन्म लिया। इनके पश्चात् दूध की धारा से निकले दूधिया लोधा आये। इनके बाद रक्त की धारा से उपजे रक्त भाई लोधा। फिर वहीं गोबर से पैदा हुए गोबरिला भाई लोधा। फिर कीचड़ से चिखली भाई लोधा। उसके बाद हड्डियों से उत्पन्न हड़कोड़ी भाई लोधा आये। चिलो चिली से चिलो चिली भाई लोधा। इनकी देखभाल के लिये कोई नहीं था। इनके बाद एक लड़की 'अवढेरिन देवी' पैदा हुई, जो पैदा होते ही जोर-जोर रोने लगी, जो ढसक-ढसक कर रोती ही रही।

इधर बारह भाई लोधा छाती के बल खिसकने लगे। धीरे-धीरे घुटने के बल चलने लगे। कुछ दिन बाद बारह भाई लोधा पाँव-पाँव चलने लगे। घर-आँगन में दौड़ने लगे। वे चारों ओर देखने-भालने लगे। वे बड़े हो गये। बोलने लगे। वे पूछने लगे- अरे छोटी लड़की! तुझे क्या हो गया, जो तू रोये जा रही है।

उस रोती हुई बहन को बारह भाई लोधा गोद में उठाकर समझाने लगे। उसे सूर्य के प्रकाश में (घामेय) घुमाया। हवा में (पौनैय) झुलाया। उन्होंने बहन को बहला लिया। वे बारह भाई लोधा अब अपने मन-मन में सोचने लगे। हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे। इसकी खोज में वे निकल पड़े।

उन्होंने अपने हाथ में धनुष बाण ले लिया। उनके हाथ में सोने का धनुष है और उसकी प्रत्यंचा भी सोने की है। सोने का तरकश और उसमें सोने के ही बाण हैं। इस तरह बारह भाई लोधाओं ने पूरी तैयारी योद्धा जैसी कर ली। फिर छोटी बहन औवढेरिन देवी पूछती है- हे बारह भाई लोधियों! तुम कहाँ जा रहे हो। भाईयों ने कहा-बहन! हम जंगल में खाने-पीने की खोज में जा रहे हैं। हमारी छोटी बहन तुम यहीं रहना।

यह कहकर बारह भाई लोधा जंगल की तरफ जाने लगे। एक कदम चले, फिर दो कदम और फिर लम्बे-लम्बे डग भरते हुए जंगल में ओझल गये। चलते-चलते वे भँवरा पहाड़ के किनारे पहुँच गये। अब वे अपना धनुष निकालकर प्रत्यंचा पर बाण चढ़ाने लगे। शिकार करने लगे। वे सब भाई एक जंगली सूअर का पीछा करने लगे। खदेड़ते-खदेड़ते उस सूअर का आखिर शिकार कर ही लिया। सरई पेड़ की डाल की उन भाईयों ने एक कावड़ बनाई और उसपर शिकार को धनुष के सहारे टाँग लिया। इसके साथ ही हिरण, चूहे, चिड़िया आदि का भी शिकार किया। शिकार करने के बाद वे बारह भाई जंगल से वापस लौटने लगे। वे सब एक-एक पैर बढ़ाते हुए एक के पीछे एक चलते जा रहे हैं। चलते-चलते वे जहाँ बहन को छोड़कर गये थे, वहाँ पहुँचने लगे। बहन ने भाइयों को दूर से देखा तो वह पेड़ की छाया ढूँढने लगी और ढूँढकर उसे साफ करने लगी।

वह उजाला करने के लिए दिया और बत्ती ढूँढने लगी। कहने लगी-

दीया कहाँ है और कहाँ बत्ती है? उसे पता लगा कि मेरे पास ही सोने का दीया है और सोने की बत्ती है। दीये में तेल डाल उसमें बत्ती लगा प्रकाश करने लगी। अरे! मेरे पास तो भाईयों को बैठाने के लिये सोने के पीढ़े भी हैं। पैर धुलाने के लिये सोने का कलश (गडू) लोटा भी है।

बारह भाई लोधा वहाँ बहन के समीप पहुँच गये। बहन कलश में पानी भरकर उनके पैर धुलाने लगी, फिर भाईयों ने शिकार को एक जगह रख दिया। अब बारह भाई लोधा लकड़ी जमाने लगे। उसे जला दिया और उसमें शिकार को भूँजने लगे। भूँजने के बाद शिकार को साफ-सूफ करने लगे। काटने-पीटने लगे। जानवर के सिर को अलग कर दिया। धड़ के भूँजे माँस के टुकड़े-टुकड़े कर लिये। रक्त को साफ कर लिया। सिर को तोड़कर उसका गूदा निकाल लिया, आँख का पानी मार दिया यानी आँखें निकालकर अलग रख दी। पहले साथ में चलने वाले देवता को भोग लगाया। फिर बारह भाई लोधा ने बहन अवढेरिन देवी सहित मिलकर भोजन किया। जो माँस बचा, उसे सुखा लिया, उसे सुबह के दतून यानी नाश्ते के लिये रख लिया। गीत में प्रारंम्भिक मानव की शिकार कथा का वर्णन अत्यंत सजीव और आदिमता के साथ हुआ है।

हाथे सरूता बगल तलेवार रोई-रोई के।
रोई रोई के खोजय अपन परिवार खोजे,
नय मिलाय।।
सेमी के संगमा टोरेला भजेरा।
ताना मनला मिलाय के झैं करबे उजेरा।।
पाने ला खावय मुँह मला कारे लाल।
जादा माया झैं तो करबे ,
होय जाही जीव के काल

धीरे गाये ले,
हाथे सरूता बगल तलेवार रोई-रोई के।।
रोई-रोई के खोजय अपन परिवार खोजे,
नय मिलाय।।

शब्दार्थ- सरूता = सरोता, **बगल** = बाजू में, कमर में, **रोई-रोई** = रो-रोकर, **सेमी** = सेमफली, **संगमा** = साथ में, **टोरेला** = तोड़ना, **भजेरा** = छोटा बैंगन, **तना** = तन, **मन ला** = मन को, **करबे** = करना, **उजेरा** = उजेला, धोखा देना, तोड़ना, **माया** = प्यार।

दुल्हन की सहेली कहती है- अरे दूल्हे! तुमने कमर में सरोता खोसा है और हाथ में तलवार रखी है। तुम तो आज के दिन राजा हो। फिर क्यों रो-रोकर तुम अपने माता-पिता आदि परिवार को ढूँढ रहे हो। क्या वे तुम्हें नहीं मिल पा रहे हैं। सहेली दुल्हन को अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहती है- देखो! सेमफली के साथ छोटे आकार के बैंगन को तो तुम तोड़ सकते हो। दोनों की भाजी बनाई जा सकती है। लेकिन तुम मन और तन मिलाकर मत तोड़ना। किसी को अधर में छोड़ मत देना। बहुत आघात लगेगा।

जिस प्रकार पान खाने से होंठ लाल हो जाते हैं। इसी तरह ओंठों की लाली के समान तुम ज्यादा प्यार मत करना, क्योंकि अधिक प्यार जताना भी जी का जंजाल हो जाता है, यानी कष्ट प्रद हो जाता है। हे सहेली! इस बात को अच्छी तरह से समझ लेना।

बेवड़ करमा

कोने उजाड़े धरती पताल रे,
कोने रूखा राये। एहे राम कोने...
गोड़ेवा उजाड़े धरती पताल रे
बैगा उजाड़े रूखा राये। एहे राम कोने...

शब्दार्थ- उजाड़े = करे, **धरती पताल** = धरती पाताल, **रूखा** = वृक्ष, **गोड़ेवा** = गोंड, **कौने** = कौन।

कौन लोग धरती की छाती पर हल चलाते हैं। और कौन लोग बिना हल चलाये पेड़ों को काटकर खेती करते हैं।– गोंड लोग धरती की छाती पर हल चलाते हैं। यानी हल बैल से खेती गोंड लोग करते हैं।– हम बैगा लोग परम्परा से धरती की छाती पर हल नहीं चलाते। हम धरती को बेटी मानते हैं। उसकी छाती पर हल कैसे चला सकते हैं। यही कारण है कि हम बेवड़ या बेवर खेती करते हैं। पेड़ काटकर मैदान तैयार करते हैं। फिर पेड़ों को सुखाकर जला देते हैं। पेड़ जलकर राख हो जाते हैं। वर्षा होने के बाद सभी तरह के बीज मिलाकर उस खेत में छींट देते हैं। इसे बेवर खेती कहते है। जल्दी आने वाली फसल पहले काट लेते हैं। जिसमें कोदो, कुटकी, सावा, मक्का आदि प्रमुख हैं। आजकल बेवर खेती प्रतिबंधित हो गई है। अब बैगा भी खेत में हल चलाने लगे है।

अध्याय –5
करमा गीत

दादर मा बोएला राहोरा,
मना रोवय, मना पसताए।

आधा ला तो बंदरा खाय गय,
आधा तो गाय।
आधा ला खाय गय नरवारक भैंसा,
मना रोवय, मना पसताए।।
कहाँ ले मैं बाढ़ी माँगेव,
कहाँ ले बिजाही।
कहाँ मैं बीज दहूँ,
बुड़ित बिजाही,
मना रोवय, मना पसताए।।

शब्दार्थ– **दादर** = खेत, **बोएला** = बोने के लिये, **राहोरा** = अरहर, **मना** = मन, **नरवारक** = अहीर का नाम, **बिजाही** = बोने के बीज, **बुड़ित** = कहाँ।

एक बैगा ने बेवड़ (बेवर) खेती की। उसमें राहर (अरहर) बोई। राहर अच्छी उग आई। उसमें फल भी लग गये। लेकिन आलस्यवश रूँधाई–बँधाई यानी बागड़ आदि से खेत की सुरक्षा नहीं की। एक दिन उस बैगा की बेवर फसल को गाय, भैंस और बंदर खा गये और वह बैगा रोता रह गया।

रोते हुए बैगा कहता है- मैंने कहाँ-कहाँ से कोशिश करके मुश्किल से खेत को तैयार किया। कहाँ-कहाँ से बीज इकट्ठे किये और उन्हें खेत में बोया। फसल भी तैयार हो गई, लेकिन नरवारक अहीर की गाय-भैंसें और बंदर मेरे खेत में घुसकर सारी फसल खा गये। अब मैं बीज का कर्ज कहाँ से दे पाऊँगा। रो-रोकर अपनी करनी पर बैगा पछता रहा है- मैंने खेत की रखवाली ठीक से नहीं की है।

तैं तो रे बनाय लए हीरा,
या चोला बिरान पार दये। टेक
आँख राहाय देख लेती,
कान राहाय सुन लेती।
गली बैठार दये हीरा,
या चोला बिरान पार दये।।
कोन मोर संगमा रेंगही,
कोन मोहे साथ दही ।
कोन लही जिंदगी कऽ भारा।
या चोला बिरान पार दये।।

शब्दार्थ- **चोला** = तन, **बिरान** = उजाड़, **पार दये** = बना दिया, **बैठार** = बिठा, **रेंगहो** = चलेगा, **भारा** = उत्तर दायित्व।

एक लड़के को ददरिया (प्रेम गीत) गाते-गाते एक लड़की से प्यार हो जाता है। दोनों ने विवाह कर लिया। दो महिने तक दोनों अच्छे रहे। तीसरे महिने में लड़का काम-धन्धा करने के लिये उसे घर पर अकेला छोड़कर दूसरे गाँव चला गया। इधर लड़की बिचारी घर में अकेली रह गई। उधर लड़के ने दूसरा विवाह कर लिया। उसे घर ले आया और इसको घर से भगा दिया। अरे दगाबाज! तूने दूसरी लड़की से प्यार कर लिया और उसे ब्याह करके घर ले आया। मुझे निराधर छोड़ दिया। मेरे सारे अरमान उजाड़ दिये।

पहले मुझसे प्यार किया। मैं वहाँ रहती तो अपनी आँखों से देख लेती। कानों से सारी बातें सुन लेती। मुझे किस कारण से छोड़ दिया। मुझे अकेली गली-कूँची में फेंक दिया। अब मैं किसके साथ आऊँगी-जाऊँगी। मुझे अब सुख-दुःख में कौन साथ देगा? अब कौन मेरे जीवन निर्वाह का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लेगा। तुमने मेरे साथ विश्वासघात किया है। मैं तुम्हें माफ नहीं करूँगी। तब लड़की मायके में रो-रोकर कहती हैं इस गीत को बरहों में भी गाते है।

हाय भगल नै बचै परान,
भगत नै बचै पराने।
उरूम करय, जुरूम करय,
झिंगरन-झिंगरन कस तार बाजय।
उरूम करय, जुरूम करय
झिंगरन-झिंगरन कस तार बाजय।
कृष्ताल राज करय,
भगवत के छः परान।
भगत नै बचै पराने।।

शब्दार्थ- **परान** = प्राण, **उरूम**- **जुरूम** = ऊपर-नीचे, **झिंगरन** = झिंगुर, **कृष्ताल** = पुत्र का नाम, **भगवत** = पति का नाम।

एक बैगा की पत्नी बीमार हुई तो बैगा ने पूछा- तुम्हें कैसा लग रहा है। पत्नी ने उत्तर दिया- अब मैं जी नहीं पाऊँगी। अब मैं मरने वाली हूँ। मेरे हाथ की नाड़ी को छूकर देखो। कभी उछलती है, कभी बैठती है। वह चलते-चलते धीमी पड़ जाती है। ऐसा लगता है जैसे झिंगुर बोलता है, उसी प्रकार मेरी नाड़ी ताल दे रही है, अब इसी ताल का मुझ पर कब्जा हो रहा है। अब तो मेरे प्राण केवल भगवान ही बचा सकते हैं। इसके बाद तो भगवत सिंह अमदरिया (पति का नाम) नहीं बच पाऊँगी। अब तो हमारे बेटे 'कृष्ताल' का ही घर में राज होगा।

झरती माँदी

संकट बाजा बाजय, बजाने वाले हाय
या चोला कोई बचाने वाले कोहि नई आय रे।
जार संकट बाजा बाजय बजाने वाले या चोला... ।
चारों रे चौरासी फिरेंव, बारा रे देवारी,
इन्द्रलोक बाँध फिरेंव, मंडल भाग आयेंव।
या चोला बचाने वाले कोई नई आय रे .... ।

शब्दार्थ- **संकट बाजा** = मृत्यु का संकेत/ बाजे की आवाज, **बाजय** = बजता है, **चोला** = शरीर, **चौरासी** = चारो खूँट दुनिया, **फिरेंव** = घूमे।

यह संकट का बाजा यानी मृत्यु का संकेत मनुष्य को पहले होने लगता है। इसको बजाने वाला वह सृष्टिकर्त्ता ही है, जिसने मनुष्य को जन्म दिया है। जब उसे किसी का जीवन लेना होता है, तो मौत उसके द्वार आ खड़ी होती है। उस मनुष्य को फिर कोई बचाने वाला नहीं होता। चाहे फिर वह पृथ्वी के चारों कोनों में क्यों न चला जाय, चाहे इन्द्रलोक में शरण ले ले। यह मंडला, जबलपुर, भोपाल कहीं भी चला जाय, या अपने आपको बारह दीवारों में बंद कर ले। गुनिया, ओझा या वैद्यों के पास चला जाय। मृत्यु का कोई इलाज नहीं है। जिसने जन्म लिया है, शरीर धारण किया है, उसे अन्त समय में मृत्यु आती ही है। यह सबसे बड़ा सच है। हर जीव की मृत्यु सुनिश्चित है।

यह गीत रात के समय मेहमानों की उपस्थिति में दसगात्र (मृत्यु संस्कार) के भोजन के पश्चात् घर की महिलाएँ गाती हैं, जिसे मृत्यु गीत या 'झरती माँदी का करमा' कहते है।

करमा

धन रे तैं बैगा भुछ डोंगर देख,

कैसे घुस काँदा खूसा
खाके बिझाये सारी भूख रे।
कनिहा काँदा खवावय नहीं खाये मा मिठावय,
बैचांदी काँदा मा माहूर डाले सुघर दिखय भाई,
ओखर रूप काँटा खूसा खाय के बिझाये सारी भूख रे।
कडू गीट कडू लागय मूड़य मा कन्दावय,
रौवी काँदा करच कूरच महूँ मा मिठावय भई,
काँदा खूसा खाय के बिझाये सारी भूख रे।

शब्दार्थ- **भुछ** = कम अकल, **डोंगर** = जंगल, **काँदा खूसा** = कंदमूल, **बिझाये** = बुझाये।

यह बहुत पहले की बात है। जब बैगा लोग शहरी लोगों से डर जाते थे। बाहर के लोगों को आता देखकर प्राय: बैगा जंगल में भाग जाते थे। वे डर के मारे कई-कई दिन जंगल में ही रह जाते थे। तब वे जंगल के दुर्लभ कंद मूल फल खाकर समय व्यतीत करते थे। उन्हीं कंदमूल की स्मृति का यह गीत है।

धन्य है बैगा! जो किसी बाहरी व्यक्ति को देखकर जंगल में भाग जाता है। वहीं जंगली कंदमूल खाकर रह जाता है। कनिहा काँदा ऐसा है, जिसे कमर-कमर तक खोदकर निकाला जाता है। जो खाने में बहुत मीठा होता है। बैचाँदी काँदा देखने में सुन्दर और खाने में मधुर होता है। कडू काँदा मुँह में ही घुल जाता है और रौंवी काँदा मुँह में कचर-कचर लगता है। बैगा जंगल में ही कंद मूल खाकर अपनी भूख मिटा रहा है।

गढ़ लंका मा आग लागय,
देवनगढ़ कुम्हलाय ।। ...2
अस्सी लाख बनसपत्ती रोवत रे।।
जारगढ़ लंका मा आग लागय,
देवनगढ़ कुम्हलाय ।। ...2

अस्सी लाख बनसपत्ती रोवत रे।।
धर्मी गुरू धरम कमावय,
पापी आग लगावय ।।...2
अस्सी लाख बनसपत्ती रोवत रे।।
धर्मी गुरू पानी छीचे आगी ला बिझाय,
धर्मी गुरू पानी छीचे आगी ला बिझाय।।...2
अस्सी लाख बनसपत्ती रोवत रे।।

शब्दार्थ- **मा** = में, **देवनगढ़** = स्वर्ग, **कुम्हलाय** = जल गया, **बनसपत्ती** = वनस्पति, **धर्मी** = अच्छे आचरण वाले/ धर्म पर चलने वाले, **कमावय** = कमाते है, **छीचे** = सींचे।

गढ़ लंका (पृथ्वी) में ऐसी आग लगी, जिससे पूरा जंगल जलने लगा। अस्सी लाख प्रजाति के पेड़-पौधे जल गये। यहाँ तक कि इन पेड़-पौधों की आग की लपटें स्वर्ग तक पहुँच गई, जिससे सारे देवी-देवता चिंतित हो उठे। उनके मन भी उसकी आँच से कुम्हला गये। किस पापी यानी दुष्ट ने यह दुष्कर कार्य किया है। ऐसा काम कोई धर्मी व्यक्ति नहीं कर सकता। धर्म पर चलने वाले लोग तो हमेशा पुण्य कार्य करते हैं। अब तो पृथ्वी की इस आग को केवल अच्छे आचरण वाले (धर्मी) लोग ही बचा सकते हैं। दुष्ट व्यक्ति कितने ही बुरे कार्य कर ले, किन्तु अच्छे कर्म करने वाले धर्मीजनों से ही इस पृथ्वी पर सबका कल्याण होता है। पृथ्वी इन्हीं के कारण बची रहती है।

बघानी रेंगे एतो बारी के नीरस नीर बघानी,
रेंगे बारी के नीरय नीर बघानी रेंगे।
कौन रेंगय थबक-थुबुक,
कौन रेंगय पाँव फैलाय।
कौन रेंगय पाँवे दबाय के,
राम बघानी रेंगे।

एतो बारी के नीरस नीर बघानी रेंगे।
भालू रेंगय थबक थैया,
चीता रेंगय पाँव फैलाय।
बाघ रेंगय पाँवे दबाय के,
राम बघानी रेंगे।
एतो बारी के नीरय नीर बघानी रेंगे।

शब्दार्थ- बघानी = जंगल के जानवर बाघ आदि, **बारी** = बाड़ी (खेत), **नीरय-नीर** = किनारे-किनारे, **रेंगय** = चलना।

एक दिन बैगा ने अपने खेत की बाड़ के किनारे जाते हुए भालू, चीता और शेर को देखा। उसने अपनी पत्नी और दो बच्चों को भी दिखाया। घर जाकर उसने बैगिन से पहेली में पूछा- अरे! बताओ, कौन सा जानवर थबक -थुबुक यानी धीरे चल रहा था, कौन सा जानवर पाँव फैलाकर और कौन सा जानवर पैर दबाकर रेंग रहा था। इस पर बैगिन कहती है- भालू थबक थैया यानी पैर पटक-पटक कर धीरे-धीरे चल रहा था। चीता तेज कदमों से पैर फैलाकर चल रहा था और बाघ यानी शेर चोर जैसे अपने पैर दबाकर चल रहा था। ऐसे बाड़ी (खेत) के किनारे-किनारे तीनों जानवर चलकर नदी की ओर पानी पीने चले गये।

इस गीत में जंगल के जानवरों के चलने के स्वभाव को अंकित किया गया है। खासकर इसका उद्देश्य बैगा बच्चों को जंगल में साथ-साथ रहने वाले जानवरों के स्वभाव और चलने के तरीकों को सिखाना है।

कहाय पंडो, काहे झूमर गाये।
भागवान सिंह पंडो रे ।।...2
काहिन के खीला खूटी,
काहिन के मुरली।

काहिन के हो गढ़ला,
ला उठावय।
भगवान सिंह पंडो रे ।
कहाय पंडो काहे झूमर गाये,
भगवान सिंह पंडो रे।
लोहान के खीला खूटी,
तामन के मुरली।
सोनल के गढ़ला,
ला उठावय।
भगवान सिंह पंडो रे।

शब्दार्थ– **कहाय** = कहो, **झूमर** = झूमने वाला करमा गीत, **काहिन** = किसका, **खीला-खूटी** = कील काँटा, **गढ़ला** = घट/ घड़ा, **उठावय** = बनायेगा, **भगवान पंडो** = एक बैगा का नाम।

भगवानसिंह नाम का एक बैगा पंडा था। वह वैद्य था। एक दिन बैगिन ने उससे पूछा– भगवानसिंह तुम आज इतने क्यों झूम रहे हो। मस्त हो। खुशी में हो। क्या बात है? तब भगवानसिंह कहता है– मैं अपने मन का राजा हूँ। इसलिए गुनगुना रहा हूँ। झूम रहा हूँ। खुश हो रहा हूँ। मैं वैद्य भी हूँ। अब देखना भगवानसिंह पंडो बहुत दूर-दूर वैद्यकी करने जायेगा। मुझे बहुत लोग बुलायेंगे। तुम देखते ही रह जाओगी।

बैगिन ने फिर पूछा– तुम अपनी वैद्यकी सामग्री कील-खूँटी, मुरली और घड़ा किस चीज से बनाओगे। भगवानसिंह पंडो ने कहा– लोहे के कील-काँटे खूँटी, ताम्बे की मुरली और सोने का घड़ा बनवाऊँगा। भगवानसिंह पंडा की चढ़-बढ़कर आत्म प्रशंसा में बैगा लड़की के प्रति प्रेम जताना ही झलकता है। बैगा लड़की भगवानसिंह पंडा की बातों में आ जाती है और उसके प्रेम में पड़ जाती है।

सात समुद्र सोला धार समुंदर बोहये,
धंधा गढ़मा हवेली सूनाये। सहिंच च याय।
सात समुद्र सोला धार समुन्दर बोहये,
धंधा गढ़ मा हवेली सूनाये। सहिंच त याय।
कोने लगावय नार बेल लयतो पोहचय अमरबेल,
जीवत रानी झिंगरा बोलय।
धोतिक बिरछा खाँधे जाय,
रानीक चुटकी रे दाऊ समुन्दर बोहाये,
धन्धा गढ़ मा हवेली सूनाये।
राजा लगावय नारबेल, नयतो पोहचय अमरबेल,
धोतीक बिरछा खाँधे जाय,
जीवत रानी झिंगरा बोलय।
रानी क चुकटी रे दाऊ समुन्दर बोहये,
धन्धा गढ़ मा हवेली सूनाये।

शब्दार्थ– **धन्धागढ़** = एक गाँव का नाम, **सूनाये** = सुनसान, **सहिंच** = सही, सत्य, **झिंगरा** = धीरे-धीरे, **चुटकी** = बिछिया, **बोहये** = बहना, गिर जाना।

इधर सातों समुद्रों में लहरें उठ रही है। सातों की अंतर धाराएँ रूकने का नाम नहीं ले रही हैं। इधर धन्धागढ़ की हवेली सूनी पड़ी है। यह बात बिल्कुल सही लगती है। किसने यह काँदे (कंद) की बेल लगाई है। इसकी जगह अमरबेल क्यों लगाई। कंद की बेल तो नष्ट हो जाती है, लेकिन अमरबेल कभी नहीं मरती। शरीर नश्वर है। आत्मा अमर है। यह बात सत्य लगती है। हवेली में रहने वाली रानी जीवित होते हुए भी धीमी आवाज में बोल रही है। राजा ने यह नारकन्द की बेल को लगाया। नार बेल हरी-भरी हो गई है। उसी को देखने रानी कंधे पर साड़ी रखकर गई। नारबेल समुद्र के तट पर है। रानी समुद्र की तरफ पीठ करके बेल को

देखने में मगन हो गई। उसी समय समुद्र की लहर उठी। लहर की हिलोर के कारण रानी गिर पड़ी। लेकिन लहर के वापस जाने पर रानी अचकचा कर उठ खड़ी हो गई। उनका ध्यान अपने पैरों की ऊँगलियों पर गया तो उसने देखा कि पैर की ऊँगली में बिछिया नहीं है। रानी अनहोनी की आशंका से भर उठी और उदास होकर अनिश्चित जीवन के भाव लेकर घर लौटी। रानी जीवित होकर भी बहुत धीमे स्वर में बोलने लगी।

एला खूँ देव, बेला खूँ देव,
खूँदेव खोपा राहुर गे भौजी मोरे।
चल भौजी बसा ती ला,
घूमन गे भौजी मारे।
ढेला चढ़ी दखेंव,
पत्थरा चढ़ी देखेंव गे भौजी मोरे।
नहि त दिखय पेजोली,
हमार गे भौजी मोरे।
चल भौजी बसती ला
घूमन गे भौजी मोरे।
खूँटा चढ़ी देखेंव,
रूसवा चढ़ी देखेंव
गे भौजी मोरे।
नहि त दिखय पेजोली,
हमार गे भौजी मोरे।
चल भौजी बसती ला
घूमन गे भौजी मोरे।

शब्दार्थ- **बसती** = बस्ती/ गाँव, **ढेला** = टीला, **पेजाली** = रोटी लाने वाले, **रूसवा** = पेड़।

एक बैगा ने बेवर खेती बोई। उसमें अनेक प्रकार के बीज उग आये।

उसने अपने लड़के को बेवर खेती में उगी फसल की रखवाली के लिये भेजा। लेकिन उसके लिये रोटी नहीं भेजी। उसे बहुत भूख लगी। वह घर से किसी के रोटी लाने की बाट जोहने लगा। वह भूख के कारण बेचैन हो उठा। उससे कभी मिट्टी के टीले पर चढ़कर देखा, कभी बड़े पत्थर पर चढ़कर देखा। कभी पेड़ के सूखे ठूँठ पर चढ़कर देखा, कभी झाड़ पर चढ़कर देखा, तब भी उसके लिये कोई खाना लेकर आता नहीं दिखा। उसी समय उसकी भाभी बेवर में सूखी लकड़ियाँ बिनने आते दिखी। वह कूदते-फाँदते उसके नजदीक पहुँचा और भाभी से बोला- मैं यहाँ भूखे मर रहा हूँ। मेरे लिये अभी तक कोई खाना नहीं लाया। अब मैं नहीं रहूँगा। भाभी चलो, मेरे साथ वापस चलो। मैं यह बात घूम-घूमकर सारे गाँव में बताऊँगा।

भाभी देवर के भूख के गुस्से को पहचान गई और बिना लकड़ी लिये चुपचाप देवर के साथ घर चली गई। घर पहुँचकर भाभी ने देवर को प्रेम से भोजन करवाया। यह गीत बेवर खेती बोते समय गाया जाता है।

हिन मिर्गा बड़ा सोभराये।
तीन सिंग तीरन मा हीरा झलकाये।।
रामदही सहिंच याय
हिन मिर्गा बड़ा सोभराये।
तीन सिंग तीरन मा हीरा झलकाये।।
कौन मिर्गा सोये रहाय,
कौन मिर्गा जागे।
कौन मिर्गा तीर छटकाये,
तीन सिंग तीरन मा हीरा झलकाये।।
बड़े मिर्गा सोये रहाय,
छोट मिर्गा जागे।

माझला मिर्गा तीर छटकाये,
तीन सिंग तीरन मा हीरा झलकाये।।

शब्दार्थ- **हिन** = यह, **सोभराये** = शोभा दे रहा है, **रामदहि** = पत्नी का नाम, **छटकाये** = चलाये, **माझला** = बीच वाला।

एक बैगा ने जंगल में सुन्दर तीन मुर्गा-मुर्गी को देखा। मुर्गी बहुत चमकदार थी। उसका रंग सोने जैसा था। वह पूरे जंगल की शोभा लग रही थी। वे हीरे की तरह चमक रहे थे। बैगा अपनी पत्नी रामदहि बैगिन से कह रहा था। मैं तो उस मुर्गा- मुर्गी को देखता ही रह गया। बैगा पूछता है- अच्छा बताओ कौन सा मुर्गा सो रहा था, कौन सा मुर्गा जाग रहा था। और कौन सा मुर्गा तीर चला रहा था। बैगिन ने उत्तर दिया- बड़ा सो रहा था, छोटा मुर्गा जागरूक था और तीसरा बीच वाला मुर्गा सन्नद्ध होकर तीर चला रहा था। उसने तीर मार कर आम गिराया। मुर्गा-मुर्गी के बहाने बैगा अपने काम भाव को प्रतीक में व्यक्त करता है। यह गीत प्रायः जंगल में हाँका लगाते समय गाया जाता है। इस करमा की प्रवृत्ति पहेली (धन्धा) की है।

कोन कोती ऊगाय, कोन कोती बूड़य,
एक नवा चाँद रे।
कोन कोती होयला बिहाने,
कहाय, ए नवा चाँद रे।
कोन कोती होयेला बिहाने।
दिन उगती ऊगय, दिन बूड़ती बूड़य,
ए नवा चाँद रे।
चौदिशि मा होयेला बिहाने,
कहाय ए नवा चाँद रे।
चौदिश मा होयेला बिहाने।
काहे के चौदिश मा होयेला बिहान,

कहाय, एक नवा चाँद रे।
चन्दन काट पिढ़ोली, छोलाये,
कहाय, ए नवा चाँद रे।
चन्दन काट पिढ़ोली छोलाये।
काहे के चन्दन काट पिढ़ोली छोलाय,
कहाय, ए नवा चाँद रे।
बूढ़ा नाग बैठे दरबारे,
कहाय ए नवा चाँद रे।
बूढ़ा नाग बैठे दार बारे।
काहे के बूढ़ा नाग बैठे दरबारे,
कहाय, ऐ नवा चाँद रे।
चौदिश मा ग्याने सुनाये,
कहाय, एक नवा चाँद रे।
चौदिश मा ग्याने सुहाये।

शब्दार्थ- **कोन-कोती** = किस तरफ से, **बूड़य** = डूबना, **बिहाने** = सुबह, **चौदिश** = चारों दिशा, **पिढ़ोली** = पीढ़ा, **ग्याने** = ज्ञान।

एक बैगा ने अपनी बैगिन से पूछा- यह सूर्य और चाँद किस तरफ से उगते और किस तरफ डूबते हैं। फिर किस तरफ से सुबह होती है और किस तरफ शाम होती है। बैगिन कहती हैं- रे बुद्दू! इतना भी नहीं जानता। पूर्व दिशा से सूर्य उगता है और पश्चिम दिशा में डूबता है। पूर्व से ही सुबह होती है और पश्चिम में शाम होती है। फिर बैगा ने पूछा- अच्छा बता, चारों दिशाओं में प्रकाश कैसे होता है? बैगिन ने कहा- सूर्य ही चारों दिशाओं में प्रकाश भरता है और रात को चन्द्रमा अपनी चाँदनी से ही उजाला करता है। वह भी सूर्य से ही चमकता है। अच्छा बताओ - चन्दन काटकर उसका

पीढ़ा क्यों बनाया जाता है? बैगिन ने इसका उत्तर दिया– चंदन पर बूढ़ा साँप लिपटा रहता है। बैठता है। इसी प्रकार चंदन के पीढ़े पर आदमी बैठता है।

फिर बैगा पूछता है– चन्दन पर बूढ़ा नाग बैठकर क्या करता है? बैगिन ने कहा– बूढ़ा नाग चंदन पर बैठकर चारों दिशाओं में ज्ञान देता है। चंदन ही नाग को शीतलता प्रदान करता है। ऐसे ही चन्दन के पीढ़े पर बैठकर सयाने (बूढ़े) लोग ज्ञान की बातें करते हैं और लोग उनके आसपास जुड़े रहते हैं।

काहय चलोत चला हंसा, राजा दरबारे चलो रे भाये।
सहिच याय चलोत चलो हंसा, राजा दरबार चलो रे भाये।
कौन जाथय आरय, और कौन जाथय पारय–पार ।
जाथय ककई खोंच राजा, दरबारे चलो रे भाये।
रानी जाथय आरय आर ललू जाथय पारयपार ।
राजा जाथय ककई खोंच, राजा दरबारे चलो रे भाये।

शब्दार्थ– **हंसा** = मनुष्य बैगा, **सहिच** = सही, सत्य, **जाथय** = जाना, **आरय** = उधर छोर से, **पारयपार** = दूर–दूर से, **ककई** = कंघी, **खींच** = खोसकर, **ललू** = बैगा नाम।

एक बैगा राजा के बुलावे पर राजदरबार में जा रहा था। दूसरे बैगा की पत्नी ने उसे सजधज के साथ जाते हुए देखा तो पत्नी ने उस बैगा को कहा– चलो हम भी राजदरबार में चलकर देखें। क्या होता है? राजा कैसा होता है। उस बैगा ने पूछा– अच्छा। राजदरबार में कौन–कौन और कैसे जा रहे हैं? तब बैगिन ने कहा– रानी जा रही है, गाँव के उस छोर से और उनका मुनीम जिसका नाम ललू है, वह गाँव से दूर–दूर से ही निकल के जा रहा है। बैगा राजा पूरे ठाठ–बाट के साथ सिर पर कंघी (कलंगी) खोंसे इधर से ही राज दरबार में जा रहा है। हम राजा को जाते हुए यहीं देख लेंगे। हमारा राजदरबार से क्या काम है?

सरसेती

का मान सरसेती, तोरे जनामन करमा भाये,
एहे का मान लये अवतारे करमा भाये।
कनठन सरसेती तोर जनामन करमा भाये,
एहे जीभियान लाये अवतारे करमा भाये।
माहोरिन सरसेती तोरे जनामन करमा भाये,
ऐहे करम डाँण मलाये अवतारे करमा भाये।

शब्दार्थ– **का मान** = किस कारण, **जनामन** = जन्म, **एहे** = ये, **भाये** = हुआ, **कनठन** = कण्ठ, **जीभियान** = जीभ पर, **अवतारे** = उतरूँ, **करम डाँण** = करमवृक्ष की डाली, **माहोरिन** = महारानी।

यह करमा गीत नाचने के लिये जब बैगा लोग आँगन में निकलते हैं, तब गाया जाता है। यह सुमिरण करमा है। इसमें सरस्वती की जन्म कथा गाई गई है। हे सरस्वती माता! तुम्हारा इस जग में बहुत मान–सम्मान है। हम भी तुम्हारा वंदन करते हैं। सुमिरण करते हैं। हे माता! तुमने इस धरती पर किस तरह जन्म लिया। तुम्हारा अवतरण किस प्रकार हुआ। यह बताओ। सरस्वती कहती हैं– मेरा जन्म माँदर से हुआ है। मेरा अवतरण तुम्हारे नाचने के आँगन में गड़ी करम वृक्ष की डाली के आसपास हुआ है। तब करमा गाने वाले पूछते हैं– तुम हमारे करम वृक्ष के नाचने के आँगन में भली पधारी हो। पर तुमको इस 'खरना' (नाचने के स्थान) में कौन गायेगा, तुम कहाँ बैठोगी। तब सरस्वती कहती हैं– अब मैं तुम्हारी जीभ पर उतरूँगी और कण्ठ में बिराजूँगी। जीभ पर खेलूँगी और गाने वाले, कंठ से गायेंगे। फिर बैगा–बैगिन समूह में रात भर करमा नृत्य गायन करते हैं।

बैगा काहिन काट नागर दाऊ,
काहिन काट डाँडी रे।
काहिन काट जुवाड़ी बनाये,

एहो राम काहिन काट जुवाड़ी बनाये।
हर्रा काट नागर बाई,
बीजा काट डाँडी रे।
ऐहो राम दौहन काट जुवाड़ी बनाये।

शब्दार्थ- **काहिन** = किस, **नागर** = हल, **जुवाड़ी** = जुआ, **हर्रा** = एक पेड़, **बीजा** = एक पेड़, **दौहन (देहमन)** = सागौन से मिलता जुलता पेड़।

बैगिन ने बैगा से पूछा- यह कौनसी लकड़ी को काटकर तुम हल बनाते हो। बैगा कहता है- हर्रा पेड़ की लकड़ी काटकर हल बनाता हूँ। कौन सी लकड़ी से तुम हल की डाँडी बनाते हो। बीजा पेड़ की लकड़ी काटकर हल की डाँडी बनाता हूँ। कौन सी लकड़ी से तुम हल का जुआ बनाते हो। देहमन (सागौन से मिलता-जुलता) पेड़ की लकड़ी से जुआ या जुवारी बनाता हूँ। हल के लिये ये तीनों प्रकार की लकड़ी बहुत उपयुक्त होती है। हमारे बाप-दादा परम्परा से इसी लकड़ी का उपयोग करते आये हैं। बैगिन को यह सुनकर अच्छा लगा।

लंका पर लंका बड़े ससुरार।
मैं तो कैसे जाँव अकेले।
सहिंच याय लंका पर लंका,
मा बड़े ससुरार।
मैं तो कैसे जाँव अकेले।।
ओली मा धरैंव ठठरी,
कलेवा पाछू दाहर,
झाँक देखवें आथय, का नहीं,
मैं तो कैसे जाँव अकेले।।
ना तो मोर आगू दीखय
ना तो मोर पाछू।
ना तो दीखय रे दाऊ,

संगय के रेंगय,
मैं तो कैसे जाँव अकेले।।

शब्दार्थ- **लंका पर** = बहुत दूर, **ओली** = कपड़े में, **कलेवा** = नाश्ता, **ठठरी** = चने के आटे से बनी नमकीन वस्तु खुरमा, **दाहर** = रास्ते के लिये, **संगय** = साथ, **रेंगय** = जाना/चलना।

एक बैगिन लड़की अपने दूरस्थ ससुराल से मायके आती है। बहुत दिनों तक रहने के पश्चात् उसकी माँ ने बोला- बेटी! अब तुम अपने ससुराल जाओ। शायद दामादजी भूल गये हैं या उनकी नींद लग गई है। इस पर लड़की माँ से कहती है- मैं किस तरह अकेली जाऊँ। माँ कहती है- बेटी मैं तेरे रास्ते में खाने के लिये ठठरी-खुरमा, कपड़े में बाँध देती हूँ और तुम ससुराल रवाना हो जाओ। तुम्हारे पीछे यदि दामादजी आयेंगे तो उनको पीछे से रवाना कर देंगे। उनको देख लेंगे कि वे आते हैं या नहीं।

इस पर लड़की कहती है- मेरा ससुराल लंका पर है यानी बहुत दूर है। मैं किसके साथ जाऊँगी। ओ माँ! तुमने ठठरी -खुरमा तो बाँध दिये। मैं उनका बेसब्री से रास्ता देख रही हूँ। उचक-उचककर इधर-उधर आगे-पीछे इस रास्ते, उस रास्ते को देख रही हूँ। वे अभी तक मुझे लेने नहीं आये हैं। ऐसा कहकर लड़की अपने पति की मुड़-मुडकर प्रतीक्षा करने लगी।

नवाखानी

माँदोरी-माँदोरी नाय जोती
देवन मा चढ़ाबो बाल मोती रे।...2
आ गुरू के सूपा बाँधेंव
आ गुरान के तूमा।
पीपर के चूल्हे रिन बाँधेंव
सेम्हड़ के रकासिन,

देवन मा चढ़ाबो बाल मोती रे।...2
मेड़ो के मड़ैया बाँधेंव,
घाट के घटैया।
गली के भुतावड़ी बाँधेंव,
पनघट के पनिहारिन
देवन मा चढ़ाबो बाल मोती रे।...2
आ रे हाँ माँदोरी-माँदोरी,
नारा जोती देवन मा चढ़ाबो बाल मोती रे।...2

शब्दार्थ- **माँदोरी** = माँदर, **नाग जोती** = नाग की मणि की तरह/ माँदर की रस्सी, **बाल मोती** = अनाज के बीज/ बीज रूप मोती, **गुरू** = तंत्र-मंत्र के ज्ञाता, **चुलहेरिन** = चुड़ैल/भूत, राक्षस, **सेम्हड़** = सेमर, **रकासिन** = राक्षस, **मेड़ो** = मेढ़, **मेड़ैया** = मेढ़ पर रहने वाला, **घाट** = पहाड़/ उतार-चढ़ाव, **घटैया** = घाट पर रहने वाला, **भुतावड़ी** = भूत-प्रेत, **लौकी** = तूमा, **नवाखानी** = एक बैगा पर्व।

यह नवाखानी पर्व का गीत है। जब भादव के महीने में प्रारंभिक फसल मक्का, ककड़ी, फुट (बोदेल), भाजी (पिहटी) आदि आ जाती है, तब हर बैगा नवाखानी का पर्व मनाता है। नवाखानी एक तरह से नई फसल की पूजा का पर्व है। इस पूजा के बिना कोई आदिवासी फसल को चखता तक नहीं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस दिन से आदिवासी करमा नृत्य गायन प्रारंभ करते हैं। इसीलिए यह करमा गीत माँदर को सम्बोधित है।

माँदर! तुम आज नाग की मणि की तरह चमक रही हो। आज से तुम्हारा बजना देवों के आव्हान और नये अनाज के भोग के साथ प्रारंभ हो रहा है। आज हम सब बैगा मिलकर सबसे पहले नयी फसल की बालियों (अनाज-फलादि) को तुम्हें चढ़ा रहे हैं। भोग अर्पित कर रहे हैं। इसके बाद ही हम अनाज को पकाकर खायेंगे। भोग में नई फसल माहुल के पत्ते पर मक्का, ककड़ी, फुट, बालियों के साथ दाल-चावल और बोतल दारू रखी

है। हम तुम्हें पकी हुई उड़द की दाल, भात और बालियों से निकले बीजों (बाल-मोती) का भोग लगाते हैं और दारू चुहाते हैं।

उसी समय बुजुर्ग लोग एक साथ कहते हैं- देखो! हमारे आजा, दादा तुम हमारे पूर्वज देवी-देवता हो। आज हम तुम्हें नवाखानी की चढ़ौत्तरी कर रहे हैं। अब तुम आगे जाते समय और पीछे आते समय हमारी देखभाल और रखवाली करना। यदि किसी के साथ कोई बात ऐसी-वैसी हो जाये तो हमारे परिवार की रक्षा करना। बाहरी बाधाओं से बचाना। हमारे गुरूजनों पर कृपा करना। उनके तंत्र-मंत्र विद्या को बचाये रखना। क्योंकि वे ही गुरू (दौगुन गुरू तंत्र-मंत्र के ज्ञाता) बाहरी बाधाओं, भूत-प्रेत-चुड़ैल आदि को सूपा मंत्रित कर वश में करते हैं। उन्हें तुम में उतार लेते हैं। पीपल में रहने वाले भूत-चुड़ैल, राक्षस को वश में करते हैं। ये किसी को लग जायें तो उसे दूर करते हैं। सेम्हल में रहने वाले प्रेत को बाँधते हैं। खेत के मेढ़ों पर रहने वाले मेड़िया को काबू करते हैं। रास्ते में पड़ने वाली पराशक्तियों 'वटैयाओं' को परास्त करते हैं। पहाड़ों के उतार-चढ़ाव में निवास करने वाली बुरी आत्माओं को भगाते हैं। गली-चौराहों के भूत-प्रेतों को भगाते हैं। कुएँ में रहने वाली पनिहारिन-चुड़ैलों को ठिकाने लगाते हैं। इन सबके ऊपर सभी देवी-देवताओं को हम बाल मोती (नये अनाज रूपी) चढ़ाते हैं और आनंद के साथ करमा गीत गाकर नृत्य करते हैं। माँदर बजाते हैं। इसी दिन से हम करमा गीत गाना, नृत्य, माँदर बजाना शुरू करते हैं। हम इसी तरह जीवन में सुख के साथ निष्कंटक निरंतर नाचते-गाते रहें।

पर्वत रे पहाड़ जंगल बेंड़ा भैगय राम,
मैके के राज दुलुमा भैगय रे।
काहय पर्वत रे पहाड़ जंगल बेंडा भैगय राम,
मैके के राज दुलुमा भैगय रे।
ना तो मोर दाई दिखय, ना तो मोर भाई,

ना तो दिखय रे दाऊ, लाखा परिवार,
मैके के राज दुलुमा भैयग रे।

शब्दार्थ- भै गय = हो गये, **बेंड़ा** = घना, **मैके** = मायका, **राज दुलुमा** = देखना भी दुर्लभ, **लाखा** = पूरा, **दाऊ** = पिता।

यह करमा दसगात्र (मृत्यु संस्कार) के समय गाया जाता है। घने जंगल, पहाड़ के समीप एक बैगा गाँव था। उस गाँव में दूसरे गाँव की एक बैगा लड़की ब्याही गई। लड़की कहती है- मेरे माता-पिता ने मुझे बहुत दूर घने जंगल-पहाड़ के बीच में ब्याह दिया। अब मैं अपने मायके किस प्रकार जाऊँ। मुझे मेरा मायका देखना दुर्लभ हो गया है। यहाँ मुझे न माँ देखने को मिलती, न भाई और न पिता। सारा परिवार देखना मुश्किल हो गया है। ससुराल और मायके के बीच में बहुत घना जंगल और पहाड़ मेरा रास्ता रोककर खड़े हैं। ऐसा करमा गाते-गाते रोते हुए वह लड़की ससुराल में झुर रही है।

नामे नंगारा नाव राजा दसराते।
एहे नामे नंगारा नाव राजा दसराते।।
काहय माँझ आँगन खरेना छोलावै गे दसराते।
एहे माँझ आँगन खरेना छोलावै गे दसराते।
काहय माँझ आँगन खम्हा गड़ावै गे दसराते।
एहे माँझ आँगन खम्हा गड़ावै गे दसराते।
काहय कारी गाय के गोबारी लिपावै गे दसराते।
एहे कारी गाय क गोबारी लिपावै गे दसराते।
काहय चार खूटक चौंका पुरावै गे दसराते।
एहे कारी गाय क खूटक चौंका पुरावै गे दसराते।
काहय कारी पीरी चाँवुर मड़ावै गे दसराते।
एहे काहय कारी पीरी चाँवुर मड़ावै गे दसराते।

काहय चार खूटक देवता बजावै गे दसराते।
एहे काहय चार खूटक देवता बुलावै गे दसराते।
काहय धूपदीप अगरबत्ती जलावै गे दसराते।
एहे अच्छी-अच्छी छोकरी बुलावै गे दसराते।
काहय अच्छी-अच्छी छोकरी बुलावै गे दसराते।
काहय अच्छी-अच्छी माँदोरी हेड़वै गे दसराते।
काहय रात सागर झुमारी खेलावै गे दसराते।
एहे काहय रात सागर झुमारी खेलावै गे दसराते।

शब्दार्थ- नाव = नाम, **दसरते** = दशरथ, **माँझ** = में, **खरेना** = अखाड़ा/ मैदान/ मंच, **छोलावै** = बनाये, **चारे खूटक** = चार दिशा, **चाँवुर** = चावल, **रात सागर** = पूरी रात, **झुमारी** = झूमर करमा (करमा का एक प्रकार)।

इस करमा गीत को एक गाँव से दूसरे गाँव जाते समय आया जाता है। गाँव के दशरथ नामके राजा बैगा ने अपने घर के आँगन में करमा नाचने के लिये 'खरेना' (खलिहान) मैदान अखाड़ा या मंच तैयार करवाया। अखाड़े के बीचोबीच एक खंभा गड़वाया। खंभे के चारों ओर चबूतरा बनवाया। उसे काली गाय के गोबर से लिपवाया। उस पर चौक पूरे। काले-पीले चावल चढ़ाकर उसकी पूजा की। धूपदीप-अगरबत्ती लगाई। सारे देवी-देवताओं का सुमिरण कर आमंत्रित किया। अच्छे करमा गाने वाले और नाचने वाले बुलाये। नये-नये माँदर निकाले। फिर सारी रात करमा नाच और गान हुआ। नाचने वाले राजा दशरथ से पूछते हैं- राजाजी तुमने किस कारण से नाचने का अखाड़ा बनाया। अखाड़े में खंभा क्यों गाड़ा? चबूतरा क्यों बनवाया। उसे गाय के गोबर से क्यों लिपवाया? उसके चारों तरफ चौक क्यों पुरवाये। उसकी चावल, धूप दीप, अगरबत्ती जलाकर पूजा क्यों करवायी।

चारों दिशाओं के देवी-देवताओं को क्यों आमंत्रित किया? अच्छे-अच्छे गाने और नाचने वाले लड़के-लड़कियों को क्यों बुलाया। नई-नई

माँदरें क्यों निकाली। रात-रात भर करमा गाना और नाचना क्यों किया? इस पर राजा दशरथ कहता है- करमा जगाने के लिये मैंने यह सब किया। आओ! मेरे आँगन में करमा गीत और नृत्य को जगायें। आनंद मनाये और खूब नाचे-गायें। नाचने-गाने के बिना जीवन अधूरा है।

रामे गढ़ जयधा भाये, राम गढ़ जयधा भाये।
रामे गढ़ जयधा भाये, राम गढ़ जयधा भाये।।
रामपुरी मा राम बिराजय, चितरकोट भगवान।...2
लंका मा बिराजय हनुमाने, रामेगढ़ जयधा भाये।।
कौन घाटे राम जाथय, कौन घाट भगवान।...2
कौन घाट मा जाथय हनुमान, रामे गढ़ जयधा भाये। 1
राम घाट मा राम जाथय, चितरकोट भगवान।...2
लंका घाटे जाथय हनुमाने, रामे गढ़ जयधा भाये।।

शब्दार्थ- **जयधा** = अयोध्या, **रामपुरी** = अयोध्या, **चितरकोट** = चित्रकूट, **बिराजय** = शोभा देते हैं, **जाथय** = जाते हैं, रमण करते हैं।

राम की भूमि जयधापुर (अयोध्यापुरी) है। राम ने इसी भूमि पर जन्म लिया है। राम अयोध्यापुरी की शोभा है और वनवास में चित्रकूट में रहे तो भगवान कहलाने लगे। लंका को जलाने वाले हनुमान की जगह तो लंका में ही है। चित्रकूट में मंदाकिनी के किस घाट पर राम रमण करते हैं। किस घाट पर भगवान राम विराजते हैं और किस घाट पर हनुमान शोभायमान होते हैं।

चित्रकूट में राम मंदाकिनी के राम घाट पर रमण करते हैं और कामदगिरि पर्वत पर भगवान राम विराजमान होते हैं। हनुमान की वास्तविक जगह लंका में ही है, जहाँ उन्होंने माता सीता का पता लगाया था। चित्रकूट तो हनुमान कभी गये ही नहीं। फिर भी राम-सीता के हृदय में हनुमान की जगह पहले से ही थी।

मोर आशे सबो दिना आय।
खोजे दखिना छाया नयतो मिलय रे।।...2
जीवत हूँ दाऊ, अैधुरा मिलाहूँ
मरी हरी जाहूँ दुलुमे सनेसार। खोज दखिना...

शब्दार्थ- **मोर** = मेरे, **आशे** = है, **खोजे दखिना** = खोज के देखने पर, **नय तो** = नहीं तो, **अैधुरा** = तब तक, **मरी हरी** = मर जाने पर, **सनेसार** = संसार, **दुलुमे** = दुर्लभ।

बूढ़े बैगा- बैगिन दारू पीकर भावुकतावश यह करमा गाते हैं। बूढ़ी बैगिन कहती है- मेरी यह करमा गाने वाली आवाज तुम सदा नहीं सुन पाओगे। किसी दिन मैं जीवित नहीं रहूँगी। तुम मेरी सूरत की छाया तक नहीं देख पाओगे। जब तक जीवित हूँ, तब तक इस दुनिया में मिलूँगी, मर जाऊँगी तो फिर कभी मुझे इस संसार में नहीं देख पाओगे। इस करमा गीत को बूढ़ी बैगिन बार-बार अपनी काँपती आवाज में दुहराकर बूढ़े पति को मनुष्य देह की नश्वरता को बता रही है और अपने अटूट प्रेम को भी जता रही है।

हाय मय तो फिरतथौं अकेला।
किरोदा लय के फिरतथौं अकेला रे।
अरे हाँ मय तो फिरतथौं अकेला।
किरोदा लय के फिरतथौं अकेला रे।
दाई छोंड़व भाई छोंड़ौं-छोंड़ौं रे कबिला।
आ कोरा के बारो छोंड़ौं फिरतथौं अकेला।।
किरोदा लय के फिरतथौं अकेला।।
खावत के तो थाली छोंड़ौं, पीवत के लोटा।
चलत के तो जोड़ी छोंड़ौं, फिरतथौं अकेला।।
किरोदा लय के फिरतथौं अकेला रे।।

हाय मय तो फिरतथौं अकेला।

किरोदा लायके फिरतथौं अकेला रे।।

शब्दार्थ- **हाय** = करुणा का स्वर, **फिरतथौं** = फिरती हूँ, **किरोदा** = दु:ख, **लय** = लेकर, **कोरा** = खोला/ गोद, **खावत** = खाने की, **जोड़ी** = साथी/ पति।

एक बैगा महिला के माता-पिता परिवार सब मृत्यु को प्राप्त हो गये। यहाँ तक कि उसकी गोद का बच्चा खत्म हो गया। इतने दु:ख से वह महिला प्राय: विक्षिप्त सी हो गई। वह घर छोड़कर गली-गली रोते फिरती है। वह कहती है- मैं तो मारी-मारी पागल सी अकेली गली-गली जंगल-जंगल घूमती हूँ। मेरा कोई नहीं है। दु:ख ही दु:ख है। मैंने माता-पिता, भाई, पति सारा परिवार गवाँ दिया। यहाँ तक कि मेरी गोद का बालक भी चला गया। दु:ख (किरोदा) में अकेली घूमती हूँ। भोजन की थाली और पानी पीने का लोटा तक मेरा छिन गया। मेरे पति-पत्नी की जोड़ी टूट गई। ऐसी भिखारिन होकर अब सारी दुनिया में फिरती हूँ। मेरा सब कुछ लुट गया। मैं अकेली घूमती हूँ।

दादर मा बसय नवा गाँव,
गाँव रे बड़ा नीक लागय रे ।। 2
नय दीखय रूख राम नय दीखय गाँव
नय दीखय संग सहेली, केखर संगा जाँव।
गाँव रे बड़ा नीक लागय रे।।
अरे हाँ दादर मा बसय नवा गाँव,
गाँव रे बड़ा नीक लागय रे।।

शब्दार्थ- **दादर** = पठार/ टीले का समतल, **नीक** = अच्छा, **नय** = नहीं, **दीखय** = दिखता है, **रूख** = पेड़, **संगा** = साथ, **बसय** = बसा।

इस करमा में पठार पर बसे एक सुन्दर बैगा गाँव का वर्णन किया गया है। गाँव का नाम नवा गाँव है। एक नवविवाहित इस सुन्दर छोटे से गाँव

को देखकर उसकी बसाहट पर मुग्ध हो जाती है। उसने पहली बार इतना सुन्दर गाँव देखा। कहती है- मुझे ऊँचे टीले पर बसा यह नवागाँव बहुत सुन्दर लगता है। मेरी आँखों को भा गया है। उसने उसे चारों ओर देखा। उसने सोचा। गाँव सुन्दर तो है, लेकिन इसमें पेड़ एक भी नहीं है। इसके साथ ही उसको याद आया कि यहाँ मेरी कोई सहेली भी नहीं है। अब मैं किसके साथ इधर-उधर जाऊँगी और खेलूँगी। इस गीत में चुपके से नवविवाहिता को ससुराल का एहसास कराया गया। इसी तरह धीरे-धीरे नई बहू के मायके का मोह जाता रहेगा।

गावे गाना ला झैं रो दाई,
झैं रो रे दादा मोर।
अब तो बेटी निकली गयसे।
हँसी-खुशी से बिदा दईदे।
खाना ला खावय, खावता भराले।
आवा जाही करहूँ, जीवता भराले।
सन भाँजे सुतरी उलाटे भाँजे डोर।
आया-दाया राखी रहबे, माया ला झना टोर।
झैं रो दाई झैं रो रे दादा मोर।
अब तो बेटी निकली गयसे,
हँसी -खुशी बिदा दईदे।

शब्दार्थ- **आवा जाही** = आना-जाना, **जीवता भराले** = जिन्दगी भर, **सन** = सन की रस्सी, **भाँजे** = बनाना, **सुतरी** = रस्सी, **उलाटे-भाँजे** = उलझती है, **माया दाया** = माया-ममता, **टोर** = तोड़ना, **सन भाँजे सुतरी उलाटे भाँजे** = माया ममता के लिये बिल्कुल मौलिक अभिप्राय है।

विदा होती बेटी रोते हुए कहती है- हे माँ! तुम मत रोओ। हे पिता! तुम भी मत रोओ। अब तो तुम्हारी बेटी ससुराल जा रही है। तुम्हारी बेटी अब पराई हो गई है। आज से तुम्हारा घर-द्वार छोड़ रही है। अब मुझे हँसी

–खुशी विदाई दे दो। खाना–पीना चलता रहेगा। जिन्दगी में आना–जाना लगा रहेगा। जिस प्रकार सन की रस्सी भाँजते समय ढेरे (रस्सी बनाने का यंत्र) पर रस्सी उलझती और सुलझती है। उसी प्रकार माँ तुम मुझसे ममता बनाये रखना। इस माया–ममता को तुम कभी खण्डित मत करना। यही डोर हम सबको एक दूसरे से बाँधे रखेगी। तुम अब अपनी बेटी को खुशी–खुशी विदा दे दो।

केखर अँगेना दाऊ वारिस पीपर रे।
पीपरिया बीनी–बीनी खाये। एहो राम....
पीपरिला बीनी खाये।
काहिंक पीपरिया बीनी–बीनी खाय रे।
मरित गयन सटाका पियसे रे...
पनेघाट–पनेघाट रसेता बताये रे ....
बंदर चुवक पानी पीके आये।
काहिंक बंदर चुवक पानी पीके आवय रे...
बंदरा छूही के छूही घाटे। एहो राम...
बंदरा छूही के छूही घाटे।।

शब्दार्थ– **केखर** = किसके, **अंगेना** = आँगन, **वारिस** = फलां है, **बीनी** = बीनकर, **मरित** = मर गये, **सटाकर** = खूब, **पनेघाट** = पनघट, **रसेता** = रास्ता, **चूवक** = पीते हैं, **छूहो घाटे** = बंदरों के द्वारा/ कीचड़ मचाया घाट।

बैगा के आँगन में एक पीपल का वृक्ष था। पीपल पका था यानी पीपल पर छोटे–छोटे फल लग आये थे। वे फल पककर जमीन पर गिरे थे। एक दिन एक दूसरा बैगा उसके यहाँ बैठने आया। उसने पीपल का जमीन पर गिरा हुआ फल उठाकर खा लिया। मित्र से मिलकर वह अपने घर पहुँचा। उसे बहुत जोर की प्यास लगी थी। इसलिए उसने बैगिन से पीने का पानी माँगा। तब बैगिन ने पूछा– तुम क्या खाकर आ गये हो?

बैगा ने जवाब दिया– मैं पीपल का फल खाकर आया हूँ। बैगिन बोली– तुमने पीपल का फल कहाँ से पाया? बैगा बोला– मैं कोदू बैगा के घर गया था, वहाँ फलों को उठाकर मैं खा गया। अब तेरा गला सूख रहा है। बहुत प्यास लगी है। प्यास के मारे मर रहा हूँ। तुम मुझे पानी का स्थान बता दो, पनिहारा कहाँ है? तब बैगिन बोली –जाओ! नदी में जहाँ बंदर पानी पीते हैं। बैगा कहता है– वहाँ जाकर मैं कहाँ पानी पीऊँगा। वहाँ का पानी पीने लायक नहीं है। वहाँ के पानी में बन्दरों ने पूरा कीचड़ मचा दिया है। पीपल का फल खाने लायक नहीं होता।

पोसे चिरैया उड़ी जाय
मैना फेर पोस ले।
काह पोस चिरैया उड़ी जाय,
मैना फेर पोस ले।
कोने सा पोसै सालो रे सुआना,
कोने सा पोसे भेंगराज।
मैना फेर पोस ले।।
रानी सा पोसै साल्हा रे सुआना,
राजा पोसै भेंगराज।
मैना फेर पोस ले।।

शब्दार्थ– **पोसे** = पाली हुई, **फेर** = फिर या दूसरी, **साल्हो** = अन्य पक्षी/ कौआ जैसा श्याम रंग, **भेंजराज** = एक पक्षी।

पाली पोसी हुई कोई चिड़िया (पक्षी) यदि उड़ जाय तो दूसरा पक्षी पाला पोसा जा सकता है। चाहे मैना हो या तोता हो। किसने साल्हो सुआ (तोता) पाला है और किसने भेंगराज पक्षी पाला है। रानी तोता –मैना पालती है और राजा भेंगराज पक्षी पालता है। एक पक्षी उड़ जाय तो दूसरा

पाला जा सकता है, लेकिन घर में पली-बड़ी बेटी जब ससुराल उड़ जाती है, तो उसकी जगह दूसरी चिड़िया (पक्षी) नहीं पाली जा सकती।

कोने कोड़ावय ताले, पताल कुवा
बंधो सागर की हरियार पानी गा।
हाँ, कोने कोड़ावय राई सागरे। हाय गोई
हाय रे कोने कोड़ावय राई सागरे।
रानी कोड़ावय ताले पलाल कुवा,
बंधो सागर की हरियार पानी गा।
हाँ, राजा कोड़ावय राई सागरे। हाय गोई
हाय रे राजा कोड़ावय राई सागरे।
कैसाना दीखय ताले पताल कुवा,
बंधो सागर की हरियार पानी गा।
हाँ, कैसाना दीखय राई सागरे। हाय गोई
हाय रे कैसाना दीखय राई सागरे।
अंधकूप दीखय ताले पताल कुवा
बंधो सागर की हरियार पानी गा।
हाँ, झिकमिका दीखय राई, सागरे। हाय गोई
हाय रे झिकमिका दीखय राई सागरे।

शब्दार्थ- **कोड़ावय** = खुदवाये, **बंधो सागर** = बाँध सागर, **राई सागर** = सुन्दर तालाब, **हरियार** = हरियालो, **कैसाना** = कैसे, **दीखय** = दिखता है, **ताले** = तालाब, **झिकमिका** = झिलमिल।

कौन तालाब खुदवाता है और कौन मीठे पानी के गहरे कुएँ बनवाता है। कौन बड़े-बड़े बाँध बँधवाता है। इतना सुन्दर यह बाँध सागर किसने बनवाया।

रानी ने तालाब और गहरे कुएँ खुदवाये। प्रजा के लिये बनवाये। राजा

ने बाँध सागर बनवाये, जिससे सिंचाई की जाती है। इससे धरती हरी-भरी रहती है। तालाब, कुएँ और बाँध कैसे दिखाई देते हैं। बाँध सागर की छटा कैसे दिखती है।

तालाब, कुएँ और बाँध तो बँधे-बँधे से दिखाई देते हैं और बाँध सागर का पानी अथाह भरा हुआ विशाल झिलमिल करता दिखाई देता है।

काकेना मोर पैयारी होय गय,
जीव के काले ककना मोरे।
सहिंच याह ककेना मोर पैयारी,
होय गय जीव के काले, ककना मोरे।।
पैयारी पेहरा के पानी भरे जावं,
छपाली मा बाघ रहाय।
उठै ललकारे ककना मोरे।
सहिंच याह ककेना मोर पैयारी,
होय गय जीव के काले, ककना मोरे।।
ककेना पेहरा के पानी भरे जावं
छपाली मा बाघ रहाय।
उठे ललकारे देखे ककेना मोर पैयारी,
होय गय जीव के काले, ककना मोरे।।

शब्दार्थ- **ककना** = हाथ का गहना, **पैयारी** = पयरी/ पैर का गहना, **जोय के काले** = जान का खतरा, **सहिंच** = सच, **छपाली** = किनारे, **बाघ** = शेर, **ललकारे** - दहाड़े।

एक बैगिन चाँदी के नये गहने हाथ में ककना (कंगन) और पैर की पयरी पहनकर नदी पर पानी भरने गई। नदी तट पर पहुँचकर उसने देखा- एक शेर नदी में पानी पी रहा है। शेर की निगाह भी पनिहारिन पर पड़ी। बैगिन वहीं ठिठक गई। उसी समय शेर ने दहाड़ देकर ललकारा। बैगिन डर के मारे जान छुड़ाकर वापस घर की तरफ भागी। घबराते हुए घर वालों को कहा- आज मेरी जान मुसीबत से बच गई। नहीं तो शेर मुझे खा जाता। सास

बोली- क्यों खा जाता? बहू ने कहा- अरे सासजी! ये चाँदी के नये गहना ककना और पयरी मेरी जान के दुश्मन बन गये। इनको नहीं पहनकर जाती तो अच्छा था। ककना और पयरी के घुँघरूओं की झनकार सुनकर शेर ने मुझे ललकारा। ये गहना जान का खतरा है। सासुजी! अब मैं इनको पहनकर पानी भरने नहीं जाऊँगी।

चीटिक सैना हवाय दाला भारी,
लिखना मा नहीं आये। अरे हाँ..
चीटिक सैना हवाय दाला भारी,
खिलना मा नहीं आये।
कहाँ ले आवय कागदा पोथी
कहाँ ले आवय लिखन दारे।
लिखना मा नहीं आये। अरे हाँ..
चीटिक सैना हवाय दाला भारी,
लिखना मा नहीं आये।
जबलपुर ले आवय कागदा पोथी।
जिला डिण्डौरी ले आवय लिखनदारे।
लिखना मा नहीं आये। अरे हाँ..
कोन लेन तोर कागद बाँचय,
कोन तोरे पोथी।
कोन तोरे कलमे चलावय,
लिखना मा नहीं आये। अरे हाँ..
चीटिक सैना हवाय दाला भारी,
लिखना मा नहीं आये।
राजा तोरे कागद बाँचय
रानी तोरे पोथी।

ललू तोरे कलमे चलावयं
लिखना मा नहीं आयें। अरे हाँ..
चीटिक सैना हवाय दाला भारी
लिखना मा नहीं आये।

शब्दार्थ- **चीटिक** = चींटी, **सैना** = सेना, **दाला** = दल, **लिखना मा** = लिखने में, **लिखनदारे** = लिखने वाले, **कलामे** = कलम, **ललू** = दीवान का नाम।

यहाँ चीटियों की सेना ही सेना है। ऐसा लगता है चीटियों का दल पूरी सेना बनाकर चलती है। चीटियों का एक सामाजिक जीवन है। जब वे चलती हैं तो एक के पीछे एक पंक्ति (लाईन) बनाकर चलती हैं। उनके जीवन की व्याख्या मिलना मुश्किल है, चीटी के कौशल का वर्णन करना मुश्किल है। बहुत छोटा जीव होते हुए भी वह बहुत बड़ा उद्यम करता है। जिसे कलम से लिखा नहीं जा सकता है। यदि कोई लिखना भी चाहे तो कहाँ से कागज और कहाँ से पोथी पुस्तक मिलेगी। कहाँ से लिखने वाले आयेंगे। चीटी की सेना बहुत बड़ी है।

उत्तर मिलता है- जबलपुर से कागज पोथी आयेगी और डिंडोरी से पढ़े लिखे लोग लिखने वाले आयेंगे। चीटी की सेना बड़ी है। तुम्हारे कागज पत्र और पोथी कौन पढ़ेगा और कौन कलम चलायेगा। चीटी की सेना बहुत बड़ी है।

उत्तर मिलता है - राजा तुम्हारे कागज पत्र पढ़ेंगे और रानी पोथी बाँचेगी। ललू नाम का दीवान कलम चलायेगा यानी लिखेगा। चीटी की सेना बहुत बड़ी है।

चीटी के बहाने बैगा गीत में बैगा समाज के जीवन और कर्म कौशल के गुण गाये गये हैं, क्योंकि बैगा जीवन भी चीटियों की तरह नियम अनुशासनबद्ध है। उनमें अक्षर शिक्षा की इच्छा को भी जाहिर किया गया है।

साँझक बेरा मादी झैय जाबी,
बियाड़ीक बेर।
गूसा लागे। अरे हाँ,
साँझल बेरा मादी झैय जाबी
बियाड़ीक बेर।।
गूसा लागे।।
राँधेय दाड़ भात,
घीवंय लरखाय।
खात घनी मादी झैय जाबी
बियाड़ीक बेर।।
गूसा लागे।।

शब्दार्थ- **साँझक** = शाम के, **बेरा** = समय, **मादी** = बैठने, **लरखाय** = डाला है, **घनी** = समय, **राँधेला** = बनाया, **बियाड़ीक** = खाने के समय/ बियारी के समय, **गूसा** = गुस्सा।

शाम के समय किसी के यहाँ बैठने नहीं जाना चाहिए। ऐसे ही किसी के यहाँ खाने के समय भी नहीं जाना चाहिए। क्योंकि सामने वाले व्यक्ति का आप पर गुस्सा उतर सकता है। वह आप पर गुस्सा हो सकता है। मैंने तुम्हारे लिये गरमागरम दाल-भात बनाये हैं। उसमें घी भी डाला है। खा लेना। मनुष्य को अवसर देखकर ही किसी के घर जाना चाहिए।

गलिया मा ठिगाली मचाये
बस्ती मा बात काहे बेगराये। अरे हाँ.....
गलिया मा ठिगाली मचाये
बस्ती मा बात काहे बेगराये।
कोन टोला टूरी जाथेय,
कोन टोला ठिगाली मचाये
बस्ती मा बात काहे बेगराये।

खालहे टोला टूरी जाथेय
ऊपर टोला टूरा।
बीच गली मा ठिगाली मचाये
बस्ती मा बात काहे बेगराये।

शब्दार्थ- **गलिया** = रास्ते, **बस्ती** = गाँव, **ठिगाली** = मजाक, **बेगराये** = फैलाये, **खालहे** = नीचे।

एक लड़का ने लड़की से मजाक किया और स्वयं बस्ती में जाकर यह बात किसी को बता दिया। इस तरह बात फैल गई। लड़की कहती है- ऐ लड़के! तूने रास्ते में मुझसे मजाक किया और बस्ती में जाकर तूने किसी दूसरे को बता दिया। यह तूने अच्छा नहीं किया। बस्ती में तूने बात क्यों फैलाई? अब लड़की किस रास्ते से जाती है और लड़का किस रास्ते से निकलता है। अब लड़की गाँव के नीचे वाले रास्ते (टोला-नीचे की बस्ती का रास्ता) जाती है और लड़का ऊपर वाले रास्ते से जाता है। दोनों की अब बातचीत नहीं होती। बदनामी के डर से दोनों के रास्ते बदल गये है।

झैं तो रोबी झैं तो पसेतानी
पीपरापान, झैं तो रोबी रे। अरे हाँ....
झैं तो रोबी झैं तो पसेतानी
पीपरा पान झैं तो रोबी रे।
कोन तोला गाली देथैय,
कोन तोला बोली।
कोन तोला घरै ले निकाल,
पीपरापान, झै तो रोबी रे।
सास तोला गारी देथैय
ससुर तोला बोली।
घर ख धनी हाथ पकड़के

घरै ले निकाल।

पीपरपान, झैं तो रोबी रे।

शब्दार्थ- **रोबी** = रो ओ, **पसेतानी** = पछताना, **गारी** = गाली, **बोली** = ताने, **घरैले** = घर से, **घरख धनी** = पति, **देथैय** = देते है।

हे पीपल के पत्ते! तू मत रो और तू मत पछता। तुझे किसने गाली दी है और किसने तुझे बात बोली है या ताने दिये। तुझे घर से कौन निकाल रहा है। क्या सास तुझे गाली देती है। या ससुर ने कुछ बात कह दी है। या तुम्हारे घर वाले ने हाथ पकड़कर घर से निकाला है।

(गीत में पीपल पत्ते के बहाने बात कही गई। वाचिक और लिखित साहित्य में यह बात कहने की एक विधा ही है।)

देवयानी

दरसन कारे हमहूँ जाबो,
खुदूर मा दरसन करे।
कौन देवला हूम दथैंय।
कौन देवला धूप।
कोन देवला नारयर चढ़ावयं,
खुदूर मा दरसन करे।।
धरती ला हूम देंवय।
ठाकुर देव ला धूप।
महेरान ला नरयर चढ़ावयं
खुदूर मा दरसन करे।

शब्दार्थ- **दरसन कारे** = दर्शन के लिये, **खुदूर** = पेड़ के नीचे महरानी देवी का स्थान, **नारयर** = नारियल, **महेरान** = महरानी मेहरलिन देवी, **हूम** = होम-धूप।

महारानी देवी के चौतरे पर एक बैगा ने ज्वारे बोये थे। एक बैगिन

कहती है- चलो। हम महरानी देवी के चौतरे (खुदूर) पर उगे जवारों को देखकर आते हैं। उनके दर्शन करके आते हैं। पीपल के पेड़ में महरलिन देवी का वास है। उसी पेड़ के नीचे देवी का ओटला बना है। बैगिन पूछती है- वहाँ किस देव को होम धूप लगती है। किस देवता को नारियल चढ़ाया जाता है। बैगा बोला- अरे! तू नहीं जानती हो। किसे होम धूप और किसे नारियल अगरबत्ती लगाई जाती है। बैगिन ने तपाक से कहा- यदि मैं जानती तो तुमसे क्यों पूछती?

मेहमान

पहुना आये ला बड़ा दूर के ।
देखे ला जाबो जनाचार जुर के रे।।
कौन भौजी भात राँधय,
कौन भौजी पेज,
कौन भौजी राँधय,
चन्ना के दारे दर के।।
देखे ला जाबो जनाचार जुर के रे।।
बड़े भौजी भात राँधय,
छोट भौजी पेज,
मझली राँधय चन्ना दार के।।
देखे ला जाबो जनाचार जुर के रे ।।

शब्दार्थ- **पहुना** = मेहमान, **जाबो** = जायेंगे, **जनाचार जुरके** = चार व्यक्ति मिलकर, **भौजी** = भाभी, **राँधय** = बनाना, **पेज** = बैगाओं का मुख्य भोज्य पदार्थ-जिसमें बाँसी भात को पानी में घोला जाता है।

एक गाँव में किसी घर में सम्बन्ध करने के लिये मेहमान आये। यह खबर पूरे गाँव में फैल गई। लोग आपस में बातें करते हैं। चलो हम सब मिलकर मेहमानों को देख आयें। जिस घर में मेहमान आये, घर के लोग

उनके लिये क्या-क्या भोजन बनायेंगे। आओ, यह भी चलकर देख आयें। किस भाभी ने भात बनाया है, किस भाभी ने पेज बनाया है। और कौन सी भाभी मेहमानों के लिये चने की दाल पीसकर पूरणपोली बनायेगी।

बड़ी भाभी भात राँधेगी। छोटी भाभी पेज बनायेगी और मझली भाभी चने की दाल को पीसकर मीठा भोजन तैयार करेगी। ये तीनों मिलकर मेहमानों के लिये अच्छा सुस्वादु भोजन और पकवान बनायेगी। आओ चलो हम मेहमानों को मिलकर आयें।

मेहमान

बैठेला दै दे सींगन मचिया तुम तो
बाई राज वारे, हम तो परदेसी भाये।
केखर नाने खटिया,
केखर नाने मचिया,
केखर नाने पलंग बिछे है,
तुम तो बाई राजवारे हम तो परदेसी आये।
ललूक नाने खटिया,
रानी के नाने मचिया,
राजा क नाने पलंगे बिछे है,
तुम तो बाई राजवारे हम तो परदेसी आय।।

शब्दार्थ- **बैठलो** = बैठने के लिये, **सींगन मचिया** = सुंदर माची/ आसन, **राजवारे** = राजा, **केखर** = किसके, **नाने** = लिए, **ललू** = एक नाम।

मेहमान कहते हैं- अरे बाई! हमको बैठने के लिये फूल मचिया दे दो। ऐ बाई! तुम घर के राजा हो। हम लोग तो परदेशी हैं। किसके लिये यह खटिया बिछी है। किसके लिये माची (छोटा आसन) रखा है और किसके लिये पलंग बिछे हैं। ललू के बैठने के लिये खटिया डली है। रानी के बैठने

के लिये सुंदर माची रखी है और राजा के बैठने के लिये आरामदेह पलंग बिछाया है। तुम लोग गाँव के राजा हो। हम परदेशी हैं। परदेशियों के साथ तुम्हारे गाँव में कैसा व्यवहार होना चाहिए- यह तो आप लोग अच्छी तरह से जानते हो। गाँव वालों ने परदेशियों की परम्परानुसार खूब अच्छी आवभगत की।

वर्षा

पानी झिकोर मारे, पानी झिकोर मोर।
सुर-सुर-सुर पवन चलय,
खड़-खड़ पतेरा झड़ै।
आषाढ़क महीना गरवादक पानी,
पानी झिकोर मारे।
काहय पानी झिकोर।।...2

शब्दार्थ- **झिकोरे** = झोंके, **सुर-सुर-सुर** = हवा चलने की ध्वनि, **खड़-खड़** = खड़-खड़ की आवाज, **पतेरा** = पत्ते, **झड़े** = गिरते, **गरवादक** = तेज बारिश, **काहय** = क्यों।

आषाढ़ के महीने में हवा के साथ झकोर देने वाली बरसात हो रही है। सुर-सुर-सुर ठण्डी-ठण्डी हवा चलने लगी है। हवा के झोंकों के कारण पेड़ों के सूखे पत्ते झड़ने लगे हैं। डाल से टूटकर गिरने लगे हैं। उनके गिरने से खड़-खड़ की आवाजें आ रही हैं। धीरे-धीरे आषाढ़ में अधिक वर्षा होने लगी है। तेज बारिश के कारण नदी-नालों में बाढ़ आ गई है। उसी को देखकर लड़के-लड़की का मन करमा गाने को हो रहा है।

रन बेनीक

रनबेनिक बन मा, रनबेनिक बन मा रे।
साज काटैंव, सड़ई काटेंव,
दनतर के गोला।

सालेह ऊपर दीवा बड़ई,
दय दै टिकोरा।।
रनबेनिक बन मा, रनबेनिक बन मा रे।।

शब्दार्थ- **रनबेनी** = एक जंगल का नाम/ साज/सरई, **सालेह** = वृक्ष, **दनतर** = मोटे तने वाला, **गोला** = गोल, **दीवार** = दीये, **टिकोरा** = चोट करना।

रनबेनी नाम का एक घना जंगल था। उसमें साजा, सरई और सालेह के घने पेड़ थे। पूरा जंगल इन पेड़ों से भरा था। एक दिन बैगा और बैगिन रनबेनी जंगल में गये। उन्होंने चारों ओर उस घने जंगल को निहारा। जंगल देखकर बैगा एक बड़े गोल तने वाले साजा, सरई और सालेह के पेड़ को कुल्हाड़ी लेकर काटने लगा। उसने साजा के तने पर कुल्हाड़ी का वार किया, फिर सरई पर किया और बाद में सालेह वृक्ष पर कुल्हाड़ी का वार करने लगा। इतने में बैगा और बैगिन ने देखा कि साजा, सरई और सालेह पेड़ के पत्तों में सोने के दीये जल रहे हैं। उसी समय बैगा ने कुल्हाड़ी उठाकर एक पेड़ पर लगाई। कुल्हाड़ी के वार से सारा जंगल गूँज उठा। बैगा-बैगिन यह देखकर और सुनकर काँप गये। तब से बैगा आदिवासियों ने अनावश्यक रूप से जंगल के पेड़ काटना बंद कर दिये। केवल मंडप के साजन के लिये सालेह वृक्ष की एक डाल ही काटते हैं। यह गीत जंगल जाते समय गाया जाता है।

गंगा मेला

धोतिक छोरे मोहिलान बेला,
चल देख आबो गंगाजी क मेला रे ....
कौन धारय आना पैसा।
कौन धारय चार आना।।
कौन धारय एक रूपया।
खाईत लाईन केला।।

चल देख आबो गंगाजी क मेला रे ....
दादा धारय आना पैसा।
बहू धारय चार आना।।
बाबा धारय एक रूपया।
खाईत लाईन केला।।
चल देख आबो गंगाजी क मेला रे...

शब्दार्थ- **धोतिक** = धोती, साड़ी, **मोहिलान** = एक बेल का पत्ता, **आबो** = आयें, **गंगाजी क** = गंगाईन मड़ई मेला, **धारय** = रखे, **खाईत** = खायेंगे, **लाईन** = खरीदकर, **दादा** = भाई, **बहू** = भाभी, **बाबा** = पिता।

बेटी कहती है- हे माँ! तुम्हारी साड़ी के पल्लू पर सुन्दर महलोन के पत्ते की बेल छपी है। तुम इस साड़ी में बहुत सुन्दर लग रही हो। तुमने नई साड़ी पहनी है। चलो, मैं भी नई साड़ी पहनकर गंगाईन माता के मेले यानी गंगाईन मेले को देखने चलें। मड़ई मेले को देखने चलें। मड़ई मेला पास ही के गाँव में लगा है। आगे बेटी कहती है- माँ, मेला देखने तो हम जा रहे है, पर रूपया पैसा कौन रखेगा? कौन एक पैसा, कौन चार आना और कौन एक रूपया रखेगा। जिससे हम मेले में केले खरीद कर खायेंगे। चलें, मड़ई मेला देख आयें। इस पर माँ कहती है- तेरे भाई रखेंगे आना- पैसे। तेरी भाभी रखेगी चार आना यानी पच्चीस पैसे। तेरे पिता सबसे अधिक पैसा एक रूपया रखेंगे। वही तुझे केले खरीद कर खिलायेंगे। चलो-चलें, हम मड़ई मेला देख आये।

अध्याय -6
ददरिया गीत

उमरिया-डुमरिया-डुमर वारे,
खेत तै फाँदे नागर।
मैं लानेंव पेज,
आबे नगरिया गाबो ददरिया।
संझा के बेरा,
संगय जाबो,
संगय जाबो घर मा।
पानी तो आवय,
औदासै कटार।
तोला देखे ला दाऊ,
तरासै परान। धीरे गाय ले...
पकी सड़क मा,
फोड़ेला गिट्टी।
तोर नाने बाई, भेजाहूँ चिठ्ठी। धीरे गायले....

शब्दार्थ- **उमरिया-डुमरिया** = उमर-डूमर पेड़, **फाँदे** = जोते, **नागर** = हल, **लानेंव** = लाऊँगी, **आबे** = आओगे, **गाबो** = गायेंगे, **नगरिया** = हल चलाने वाला, **संझा** = शाम, **बेर** = समय, **औदासे करार** = मिट्टी का टीला, **तरासै** = तरसे, **परान** = प्राण, **नाने बाई** = छोटी बहन।

रोपा लगाने और धान की निंदाई के समय यह ददरिया गाया जाता है। खेत में एक तरफ बैगा लड़कियाँ और एक तरफ बैगा लड़के होते हैं। गीत में सवाल और जवाब होते हैं। लड़की- ऐ नागर यानी हल चलाने वाले लड़के! तुम उमर और डूमर के पेड़ वाले खेत में हल जोतोगे। मैं तुम्हारे लिये पेज और खाना लेकर आऊँगी। इसके बाद हम तुम शाम को जब हल चलाकर घर चलेंगे, तब मिलकर ददरिया गायेंगे। वर्षा के पानी से गाँव के आसपास के जंगल के मिट्टी के टीले टूट-टूटकर गिरते हैं। ऐसी स्थिति में तुझसे मिलने का मन करता है। तुझे देखने का मेरा मन करता है। तेरे गाँव के पास जो पक्की सड़क बन रही है। उसमें काम करने वाली तुम्हारी छोटी बहन के हाथों चिट्ठी भेजी है। तुम चिट्ठी पढ़कर जल्दी से मिलने आ जाना, मैं इन्तजार करूँगी।

मड़ई

लड़का - *फोड़तो बहिरा कोने, झोंकय रे जवाँ रोय।*
ददरिया जोहिया कोने, झोंकन रे जवाँ रोय।
लड़की - *फोड़तो बहिरा हम जो, झोंकन रे जवाँ रोय।*
ददरिया जोहिरा हम जो झोंकन रे जवाँ रोय।

शब्दार्थ - **फोड़तो** = निकलो, **बहिरा** = धुन/ बेहर, **झोंकय** = गाई है, **जवाँ रोय** = लड़का-लड़की सम्बोधन, **जोहिरा** = गायेगा।

लड़का- ऐ लड़की! मैंने जो ददरिया की धुन सुनाई है। गाई है। उसको तुम गा सकती हो। दुहरा सकती हो। लड़की कहती है- ऐ लड़के! तुम्हारे गाये हुए गाने को ददरिया धुन को दुहरा सकती हूँ। मैंने बचपन से ददरिया गाया है।

लड़का - *खोलतो कोतियार, तोर जाति ला बताय दे।*
फाहिना गोतियार तोर जाति ला बताय दे।

लड़की – *खोलतो कोतियार मोर जातिला बतायेंव।*
अमदरिया गोतियार मोर जाति ला बतायेंव।

शब्दार्थ- **खोल तो** = बता दो, **कोतियार** = कौन सी, **काहिन** = कौन सा, **गोतियार** = जाति गोत्र, **जातिला** = जाति का, **अमदरिया** = एक बैगा गोत्र का नाम।

लड़का कहता है- अरे लड़की! तुम्हारी जाति गोत्र क्या है। जरा बताओ तो। लड़की कहती है- अरे लड़के! मेरी जाति बैगा है और मेरा गोत्र अमदरिया है।

बैगाओं में समगोत्री विवाह नहीं होते। इसलिए गीत में लड़का-लड़की से सबसे पहले लड़की का गोत्र जानना चाहता हूँ। गोत्र अलग हुआ तो फिर विवाह करने में कोई बाधा नहीं होती।

जोड़नी

जावय बाजा रे लेव तो दोहनी।
लड़की – *तमै होबो रे जवाँ रोय।*
भाई तो बहनी, तैमे हो बो रे जवाँ रोय।
लड़का – *छीचेला जावय पकड़ेला बामी।*
तोर दाई मोर लागय खुदइके मामी।
तोर दाई मोर लागय खुदयके मामी।।

शब्दार्थ- **जावय** = जाना, **बजारे** = बाजार में, **छीचेला** = बामी, **खुदयके** = खुद के, **तोर** = तेरी।

लड़की कहती है- ऐ लड़के! तुम बाजार में ही आए हो। तुम्हारे घर में भाई-बहन तो होंगे ही।

लड़का कहता है – ऐ लड़की! उथले पानी में मछली पकड़ने जाते हैं। तुम्हारी माँ मेरी मामी यानी सास लगती है। तुम्हारी माँ मेरे पिता की बहन है, इसलिए तुम्हारा हमारा रिश्ता सबसे पहले हो सकता है।

(बैगा समाज में भाई-बहन के बच्चों में विवाह होने की प्राथमिक परम्परा है।)

लड़का – *लेव तो भला गेंस*
लय चल बो रे जवाँ रोय।
हमारे भला देश,
लय चलबो रे जबाँ रोय।।
लड़की – *लेवतो भला गेंस,*
कैसे जाबो रे जवाँ रोय।
तुम्हारा भला देस,
कैसे जाबो रे जबाँ रोय।।

शब्दार्थ- **गेस** = गैस बत्ती, **लयचलबो** = ले चलूँगा, **जवाँ रोय** = जवान लड़का और लड़की सम्बोधन, **भला** = किस प्रकार, **देश** = गाँव।

लड़का कहता है- ऐ लड़की! जरा यह गैसबत्ती संभाल ले। मैं तुझे अपने देश यानी गाँव ले चलूँगा। इस पर लड़की कहती है- ऐ लड़के! तू ही तेरी गैसबत्ती को संभाल। मैं कैसे बिना जान पहचान के तेरे साथ गाँव चल सकती हूँ। मुझे तो मेरे देश (गाँव) जाना है। बैगा लड़का-लड़की हाट बाजार में मिलते हैं और लड़का खरीदी गई गैस बत्ती के बहाने लड़की से बोलने की कोशिश करता है, लेकिन लड़की उत्तर देती जरूर है, वह लड़के के प्रणय निवेदन को नजर अंदाज कर देती है।

लड़का – *गली के पत्थर, पटाकी लेतैंव,*
मोर गाँव के जो होते।
झटाकी लतैंव मोर गाँवे, के जो होते
लड़की – *गली के पत्थर पटाकी लतैंव*
तोला सरम नय तो लागय।

हटाकी लेतैंव,
तोला सरम नय तो लागय।।

शब्दार्थ- पटाकी = पटक लेना, **मोर** = मेरा, **झटकी** = झपटकर, **लेतैंव** = लेता, **हटाकी** = बैठा लेता।

लड़का-लड़की से कहता है- यदि तू गली के रास्ते का पत्थर होती तो मैं उसे उठवाकर मेरे घर के आँगन में पटकवा लेता। यदि तू मेरे गाँव की लड़की होती तो तुझे पकड़कर मेरे घर में ले जाता। तू तो पराये गाँव की निकली। लड़की कहती है- मुझे गली के रास्ते का पत्थर कहते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। तू कहता है- यदि तू गाँव की लड़की होती तो पकड़कर घर में बैठा लेता। यह कहते हुए तुझे बिल्कुल शर्म नहीं आती। तू एकदम बेशर्म लड़का निकला। जा तेरी- मेरी दोस्ती नहीं हो सकती। एक बैगा लड़की की खुद्दारी को व्यक्त किया गया है।

लड़का - *नै खातेंव मछड़ी नहि तो खातेंव भात।*
बसीतो जातेंव रात, तोर माया के मारे।।
लड़की - *खायलेबी मछली, खाई तो लेबी भात।*
का होहि रे जवाँराया, बासी तो जाबी।।
रात का होहि रे जवाँराया।

शब्दार्थ - नै = नहीं, **खातेंव** = खाऊँगा, **मछड़ी** = मछली, **बसीतो** = रह जाता, **तोर** = तेरी, **माया** = प्यार, **मारे** = कारण, **जवाँराय** = लड़का, **बासी** = बसना/ रहना, **जाबी** = जायेंगे।

लड़का कहता है- न मैं मछली खाऊँगा और न भात। लेकिन मैं तेरे प्यार के खातिर तुम्हारे घर रात रूक जाऊँगा। लड़की जबाव देती है- अरे! मछली भी खा लेना और भात भी खा लेना। हमारे यहाँ किसी चीज की कमी नहीं है। यदि तुम हमारे यहाँ रात भी रूक जाओगे तो क्या होगा? लड़की के प्रश्न पर लड़का उत्साहित हो जाता है और कहता है- तुझे मैं

ब्याहकर घर ले जाऊँगा। चलो, हम ददरिया गाते-गाते आज रात भाग चलते हैं। ऐसी स्थिति में लड़की-लड़के के साथ भाग जाती है। जिस गाँव में रिश्तेदार के यहाँ जाकर वे छिपते हैं। लड़की लड़के को हल्दी छींट देती है। तब वह लड़का-लड़की उस गाँव की पंचायत के लड़का-लड़की हो जाते हैं। इस गाँव की पंचायत के मुखिया दोनों के माता-पिता को सूचना देते हैं। यदि वे नहीं आते तो उस गाँव के लोग मंडप लगाकर भाँवर डाल देते हैं। यह प्रथा है।

लड़का - *नवा है बलगी नवावय रे गुलेल,*
दाई बाबान के रहत ले।
कर लेबो खुलेल,
दाई बाबान के रहत ले।
लड़की - *कच्चा रे बाँसे नवावय रे गुलेल,*
जीवत भर ले रे जवाँराय।
करबो जो रे खुलेल,
जीवत भर ले रे जवाँराय।

शब्दार्थ- **मवा** = नया, **बलगी** = बाँस, **गुलेल** = पत्थर का निशाना लगाने का अस्त्र, **दाई बाबान** = माता पिता, **खुलेल** = खेल/ गुलेल और खुलेल की तुक मौलिक है- इसके बहाने लड़के-लड़की का नेह निमंत्रण है।

लड़का कहता है- नये बाँस की गुलेल बनायेंगे। जब तक माता-पिता हैं, तब तक खेल लें। लड़की कहती है- कच्चे बाँस की गुलेल बना लो। जब तक बचपन की जिन्दगी है, तब तक स्वच्छन्दता से खेल लें।

लड़की - *हर्रा मुखारी कूचरा करी ले,*
तोर नय माजो नय याह।
दूसरा करले तोर मानय,
माजो नययाह।

लड़का – *जावय बाजारे लेवतो पोला,*
ताना राहय जावय।
नय छोड़व तोला ताना,
रहाय ताना जावय।

शब्दार्थ– **हर्रा** = एक पेड़, **मुखारी** = दतौन, **कूचरा** = दतौन कूचा/ दतौन को एक तरफ से दाँतों से चबाकर ब्रुशनुमा बनाते हैं, **नय** = नहीं, **माजो** = मजा/ पसंद, **मानय** = मन नहीं माने तो, **पोला** = एक पुरुष गहना/ पोला और तोला की तुक ददरिया को वजनदार बनाती है।

लड़की कहती है– हर्रा पेड़ की डाली की दातून का कूचा बना लो। यदि मैं तुम्हें पसंद नहीं आ रही हूँ तो दूसरा विवाह कर लो। लड़का कहता है– मैं हाट– बाजार जाकर कान में पहनने का पोला गहना लाता हूँ। मेरी जान भले ही चली जाय, पर मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा।

लड़का – *मारतो छेड़ी मेंजो खोजेव रे जवाँरोय।*
ददरिया चेरी मैं जो खोजंव रे जवाँरोय।
लड़की – *मारतो छेड़ी तैं आगू ले, काबर खोजे।*
ददरिया चेरी तैं आगू ले, काबर खोज।

लड़का कहता है– बकरी को मार दिया है, फिर भी उसे मजा नहीं आ रहा है। मैं मजा खोज रहा हूँ। पर, मिल नहीं रहा है। कोई ददरिया गाने वाली साथी मिल जाय तो मजा आ जाय। लड़की कहती है– तूने बकरी की व्यर्थ में जान ले ली। तू किसलिये खोज रहा है, गाने वाली। मैं तेरे सम्मुख तेरी बकरी बन के खड़ी हूँ। तेरे ददरिया का जवाब गा दूँगी। तुझे मजा आ जायेगा।

लड़का – *लेवले बेगेरा घर मा जाय के रे जवाँ रोय।*
होय तो होय झगेड़ा घर मा जाय के रे जवाँ रोय।
लड़की – *लेव तो बेगेरा भाई बहानी के लरकाय।*

नै होवन झगेड़ा भाई बहानी के लरकाय।

लड़का कहता है– तुम लोग घर में जाकर पति के साथ झगड़ा करोगे। क्योंकि तुमने जो बैगानी कपड़ा (बुगरा) खरीदा है, वह उनको पसंद आयेगा या नहीं। लड़की कहती है– हम लोग घर में अपने पति से कभी नहीं झगड़ते, क्योंकि हम भाई–बहन के लड़का–लड़की हैं। हमारा रिश्ता पक्का है।

(बैगाओं में भाई–बहन के बच्चों के बीच विवाह होने की प्राथमिक परम्परा है)

अध्याय –7

अन्य गीत

झरपट

झैंलो–झैलो बारी के मुनगा उखाटी।
झैंय जाय रे बारी के मुनगा उखारी।।
झैंय जाय रे।।
बारी के मुनगा उखारी, झैंय जायरे।
मोर दगा छैयला बिछड़ी झैंय जारे।
मोर दगा छैयला बिछड़ी, झैंय जारे।

शब्दार्थ– **बारी** = बाड़ी, **मुनगा** = एक पेड़, **उखाटी** = सूखना, **झैंय** = नहीं, **मोर** = मेरा, **दगा छैयला** = दगा देने वाला।

लड़की कहती है– ऐ बाड़ी के मुनगे के पेड़! तू सूख मत जाना। मुझे धोखा देने वाला लड़का मुझसे बिछुड़ न जाय। इसलिए तू सदैव हरा रहना। मैं धोखा नहीं खाऊँगी।

चल नोनी चल दादा रहड़,
डोभे जाबो रे।
चल नोनी चल दादा रहड़,
डोभे जाबो रे।
ओली मा रहड़ धरेंव,
खाँदे मा खनता।

गँडरी मा बासी धरेंव,
तूमा पानी।
चल नोनी दादा रहड़,
डोभे जाबो रे।।
अक कियाँरी रहड़ डोभेव
दुई कियाँरी बेदरा।
तीन कियाँरी लोढ़ा डोभेव,
चार कियाँरी रवाँस।
चल नोनी दादा रहड़
डोभे जाबो रे।।
चल नोनी दादा रहड़
डोभे जाबो रे।
पाँच कियाँरी उड़ीद डोभेव,
छह कियाँरी जुवार।
सात कियाँरी ककड़ी डोभेव,
आठ कियाँरी डेंगरा।
चल नोनी चल दादा रहड़,
डोभे जाबो रे।
चल नोनी चल दादा रहड़,
डोभे जाबो रे।

शब्दार्थ – **नोनी** = लड़की, **डोभे** = बोने, **जाबो** = चलें, **रहड़** = अरहर, **ओली** = खोला, **खनता** = कुदाली, **गँडरी** = बाँस की टोकनी, **बासी** = भात बासी, **कियाँसी** = क्यारी, **लोड़ा** = मक्का, **खाँस** = बरबटी, **डेंगरा** = फूट/ बेवर खेती में एक साथ बीज बोये जाते हैं/ लेकिन उनकी क्यारियाँ अलग–अलग होती हैं।

एक गाँव के बैगा और बैगिन अपनी बेवर खेत में अनाज बोने जाने की तैयारी करते हैं। बैगिन ने लुगड़े की ओली (पल्लू) में अरहर आदि

अनाज रखे और बैगा ने कंधे पर लोहे की कुदाली रखी, जिसकी मूठ लकड़ी की है। बैगिन ने सिर पर बाँस की टोकनी रखी, जिसमें बेवर में पैदा हुई कुटकी का बना भात रखा। अरहर की दाल रखी, एक लौकी तूमा में पीने का पानी रखा। जिसे बगल में लटकाया। बैगिन कहती है- चलो नोनी बाबू! बेवर में राहर (अरहर) आदि अनाज बोने चले।

एक क्यारी में राहर लगायेंगे। दूसरी क्यारी में बेदरा लगायेंगे। तीसरी में मक्का लगायेंगे। चौथी क्यारी में बरबटी डालेंगे। चलो, नोनी बाबू बेवर बोने चलें।

पाँचवी क्यारी में उड़द डालेंगे। छठी क्यारी में जुवार बोयेंगे। सातवीं क्यारी में ककड़ी के बीज डालेंगे। आठवीं क्यारी में फूट आदि के बीज बोयेंगे।

चलो, नोनी बाबू बेवर खेती में बीज बोने चलें।

झेलो झेलो पड़सा पानक छानी छायेंव।
टपक टैया चूहरे, पड़ासा पानी छायेंव।
टपक टैया चूहरे, पड़ासा पानी छायेंव।
छायेंव टपक टेया चूहरे।
इहा कर ठंगही डौकी,
थबक थैया रेंगय रे।
इहा कर ठंगही डौकी,
थबक थैया रेंगय रे।।

शब्दार्थ - **पड़सा पानक** = पलाश के पत्ते, **चूहरे** = पानी चूना, **टपक टैया** = पानी टपकने की आवाज, **ठंगही** = कुँवारी ठिगनी मोटी, **डौकी** = लड़की, **थबक थैया** = चलने का ढंग।

बड़ी मेहनत से मैंने अपनी झोपड़ी की छत पर (टेसू) पलाश के पत्तों को छाया है, फिर भी छत टप-टप चू रही है। पानी के टपकने की आवाज

'टपक टैया' सबका ध्यान अलग खींच रही है। पानी के टपकने की आवाज ठीक उस तरह की लगती है, जैसे कुँवारी मोटी लड़की के चलने का ढंग होता है। कुँवारी मोटी लड़की 'थबक थैया' चलती है। 'टपक टैया' और 'थबक थैया' एक जैसी आवाज है।

बोझा बोझा कनई आनेव
झीक रूधेंव बाड़ी रे।
बोझा बोझा कनई आनेव
झीक रूधेंव बाड़ी रे।
बोझा बोझा कनई आनेव
झीक रूधवे बाड़ी रे।
जरई तोर रूधेना।
कड़ाकय मोर बंधेना रे।।

शब्दार्थ - **बोझा** = बोझ, **कनई** = बाँस, **आनेव** = लाया, **बाड़ी** = बाढ़, **रूँधेव** = बाँधना/गाडना।

तू जो बाँस का टट्टर बाँधने का बोझा लाया है। तूने बहुत मेहनत से बाँस के ठठ को बाँध तो दिया है, लेकिन तेज हवा के चलते बाँस की टट्टर कड़क रहा है, आवाज कर रहा है। इधर-उधर हिलडुल रहा है। शायद तुमने बाँसों की रूँधाई और बँधाई अच्छी नहीं की है। फिर भी तेरे बँधे बाँस गिर नहीं रहे हैं। इस कारण यह मान सकते हैं कि तुम्हारे द्वारा बाँधे गये बँधन ठीक नहीं हुए हैं।

रीना

री रीना रीना रीहान रीना।
री रीना रीना रीहान रीना।
चलो री बारो धमानी टोरे।

चलो री बारो धमानी टोरे
चलो री बारो .... ।
धमानी टोरत मोर चुटकी गिर गय।
धमानी टोरत मोर चुटकी गिर गय।
धमानी टोरत ..... ।
चलो री साँगो मोर चुटकी खोजन।
चलो री साँगो मोर चुटकी खोजन।
तोर चुटकी गैहे गोड़ीला भीतर।
चुटकी गैहे गोड़ीला भीतर।
चुटकी गैहे .... ।
गोड़ीला भीतर मोर छैलक नाचय।
गोड़ीला भीतर मोर छैलक नाचय ।
गोड़ीला भीतर .... ।

शब्दार्थ- **बारो** = बच्चे, **धमानी** = धामन का झाड़, **टोरत** = तोड़ते, **चुटकी** = बिछिया, **साँगो** = मामा की लड़की, **गैहे** = चले गये, **गोड़ीला** = गौरेला गाँव, **छैलक** = स्वामी।

दीपावली के समय रीना गया जाता है। एक बैगा लड़की छोटे बच्चों से कहती है- चलो रे, धामन पक गया है। उसे तोड़कर लायेंगे और खायेंगे। जब वह लड़की बच्चों के साथ धामन तोड़ रही थी, उसी समय उसके पैर की ऊँगली की चुटकी यानी बिछिया गिर गई। वह उसे ढूँढते-ढूँढते परेशान हो गई। वह लड़की घर वापस आ गई। सब सहेलियों को उसने कहा- चलो सहेलियों! मेरे पैर की ऊँगलियों की चुटकी कहीं गिर गई है, उसे ढूँढकर लाते हैं। सब सहेलियाँ उससे कहती हैं- तेरी चुटकी (बिछिया) गौरेला गाँव के भीतर पहुँच गई है। हम कहाँ ढूँढने जायें। गौरेला गाँव तेरा ससुराल है, वहाँ तेरा छैला पति नाच रहा है, तेरी राह रेख रहा है। तू चुटकी ढूँढने अकेली जा। हम तेरे साथ नहीं जा सकते।

झरपट

री रीना रे मोर बोलय चिरैया।
कि री रीना रे मोर बोलय चिरैया।
आगि नहीं बारस नोनी,
आलकुँवारी बाल कुँवारी,पीठ मा लोरय बेनी।
आखी मा काजर, माथे मा सेंदूर।
झमाकय पनेहारिन।
री रीना रे मोर बोलय चिरेया।
कि री रीना रे मोर बोलय चिरैया।।
पानी नहीं जावस नोनी।
आल कुँवार, बाल कुँवारी।
पीठ मा लोरय बेनी।
आखी मा काजर,
माथे मा सेंदूर।
झमाकय पनेहारिन।
कि री रीना रीनारे मोर बोलय चिरैया।।
बरतन नहीं माजस नोनी।
आल कुँवारी बाल कुँवारी।
पीठ मा लोरय बेनी,
आँखी मा काजर
माथे मा सेंदूर।
झमाकय पनेहारिन।
कि री रीना रीना रे मोर बोलय चिरैया।।

शब्दार्थ- **चिरैया** = चिड़िया/ तोता, **बारस** = जलाये, **आल-बाल** = पूरी तरह से, **जावस** = जाती है, **नोनी** = लड़की, **पीठ मा** = पीठ पर, **लोटय** = लटकती, **बेनी** = चोटी, **झमाकय** = चमकती है, **पनेहारिन** = पनहारिन।

मेरे पिंजरे का तोता बोल रहा है। तुमने अभी तक आग नहीं जलाई है। उधर देखो, वह किशोर लड़की सजकर अल्हड़ता से पीठ पर लम्बी चोटी लटकाये, आँखों में काजल, माथे में सिंदूर डाले, चमकते-चमकते लपक-झपक पनघट पर पानी भरने जा रही है। वह श्रृंगार मगन लड़की अपने यौवन के सौन्दर्य को पनघट के रास्ते में बिखेरती जा रही है। उसे घर के किसी काम की परवाह नहीं है। वह तो केवल श्रृंगार करती है। लड़कियों का कुँवारापन कुछ इसी तरह का होता है।

रीना

री रीना यो रीहन रीना,
री री ना यो रीना रे राय
कि री री नायो रीना रे राय।
दाई आवय पोहनीन बनके
लूटा माज पानी दैयंव।
रोई-रोई भेंट करैंव।
चंदन काट के पीढ़ा दैयेव।
सिग चऊँर के भात राँधेव।
राहिर के दाड़।
दाई के झुलानी मा,
झूलय मोर हीरा।
कि, दाई ओ झूलानी झूलय मोर हीरा।
बाबा आवय पोहना बनके,
लोटा माज पानी दैयंव।
रोई-रोई भेंट करैंव।
चन्दन काट के पीढ़ा दैयेंव।
सिग चाऊँर के भात राँधव।

राहिर के दाड़।
दाई ओ झुलानी मा
झूलय मोर हीरा।

शब्दार्थ- **पोहनीन** = मेहमान, **लूटा** = लोटा, **माज** = साफ, **रोई-रोई** = रो रोकर, **भेंट** = मिलना, **काट** = काष्ठ, **पीढ़ा** = आसन्दी, **सिग चाऊर** = बिना टूटे चावल, **राहिर** = अरहर, **झुलानी** = झूला, **हीरा** = पुत्र, **बाबा** = पिता।

एक बैगा लड़के का नाम रामसिंह राय था। उसकी पत्नी का नाम रामबाई था। बहू सास से कहती है- सासु माँ! हमारे घर मेहमान आये हैं। उनको मैंने लोटा माँजकर हाथ-पैर मुँह-धोने और पीने को पानी दिया है। उनसे जोहार भेंट कर ली। उनको बैठने के लिये मैंने चंदन की लकड़ी का पीढ़ा (आसन) दिया। उनके भोजन के लिये बिना टूटे हुए चावल का भात बनाया। राहर की दाल बनाई। हे सासू माँ! उधर मेरी गोद का हीरा बालक पलने में सोता रहा। उसने घर के कामों में जरा भी तकलीफ नहीं दी। वह झूले में मस्त सोया रहा। सासू माँ! क्या कहूँ मेहमान तो मेरे पिता ही आये हैं। वे मेरा काम और बच्चे को देखकर प्रसन्न हुए।

री रीना रे बाँसना, भीरी आमा चूहै लोरे।
बाँसना भीरी आमा चूहे लोरे।
कौन लगावै आमा अमली,
कौन लगावै केरा-करा रे।
बीरो छानियाँ मा,
लोरय ओखर डार-डारा रे।
बीरो छानियाँ मा
लोरय ओखर डार ....।
राजा लगावै आमा अमली,
रानी लगावै केरा केरा रे।

बीरो छानियाँ मा
लोरय ओखर डार-डार रे।
बीरो छानियाँ मा
लोरय ओखर डार .... ।

शब्दार्थ- **बाँसना** = बाँस के, **भीरी** = झुण्ड/ झुरमुट, **चूहै** = चूना, **लोरे** = झुकना, **बीरो** = भाई, **डार** = डालियाँ, **छानियाँ** = छत।

अरे! बाँस के झुरमट में आम और इमली का रस चू रहा है। किसने लगाया आम और किसने लगायी इमली? किसने लगाया केला। उसकी डाल छत के ऊपर झुक रही है। राजा ने आम लगाया है, इमली लगाई है और रानी ने केले के पेड़ लगाये हैं। हे भाई! इमली और केले की डालियाँ अपने घर की छत पर झूम रही हैं।

री रीना रीना आमा नंदिया,
आमा नंदिया,
झनाका फूल छाये रहो रे,
फूला बगिया।
आँगरिके बीछियाला आजत राहवं,
माजत राहवं,
होहि गैसे झेल।
आमा नंदिया, आमा नंदिया
झनाका फूल छाये रहो रे,
फूला बगिया।
दबारि के पायल ला आँजत राहवं,
माँजत राहवं,
होहि गैसे झेल।
आमा नंदिया, आमा नंदिया

झनाका फूल छाये रहो रे
फूला बगिया।।

शब्दार्थ- **आमा नंदिया** = नदी किनारे आम, **झनाका** = खूब, **छाये** = फूले, **आँगरिके** = अँगुली के, **बिछियाला** = बिछिया को, **आजत-माँजत** = धोना/ साफ करना, **गैसे** = हो गई, **झेल** = देर, **दबारि के** = पैर की।

नदी के किनारे आम का पेड़ है। उस पर बौर लद गये हैं। आम के पेड़ पर बौर ही बौर दिखाई देते हैं। जैसे आम एक फूलबगिया हो गया है। इस बार बहुत फलेगा। उस नदी में मैं अपने पैरों की बिछिया धोती हूँ। साफ करती हूँ। उसी नदी के जल में पैरों की पायल को भी मल-मल कर धोती हूँ। बिंदिया और पायल धोने-माँजने में मुझे बहुत देर हो गई है। मुझे घर जल्दी जाना है।

बिलमा

सुर सुरा सुरा सुर पवन चलतु है मोरे अछेरा
सरागा उड़ी जाय।
जा देखी आबे, मोरे अछेरा,
सरागा उड़ी जाय।
हुथीले आवय मामा बेटा
मोरे अछेरा सकेल खोंची देय।
जा देखी आबे, मोरे अछेरा
सरागा खोंची जाय।

शब्दार्थ- **सुर-सुर** = हवा चलने की आवाज, **अछेरा** = आँचल, **सरागा** = स्वर्ग, **हुथीले** = उधर से, **सकेल** = समेटना, **खोंची** = खोंसना।

सुर-सुर हवा चल रही है। उसी समय मेरा पहना हुआ बगेरा एवं साड़ी का पल्ला उड़ रहा है। जरा देखो तो ऐसा लग रहा है कि मेरा आँचल (पल्लू) स्वर्ग में उड़ा जा रहा है। उधर से मेरा मामा का बेटा (पति)

निकला। मैंने उससे कहा– देखो, मेरा आँचल स्वर्ग में उड़ा जा रहा है। हवा के वेग से आकाश में लहरा है। मेरे पास आकर जरा उसे समेट कर मेरी कमर में खोंस दो। (प्रियतम ऐसा ही करते हैं और अपनी पत्नी को उसे आँधी –तूफान से बचा लेते हैं। आँचल के बहाने प्रणय निवेदन भी है।)

अैलहे डोंगरिया, पैलहे डोंगरिया,
माँझे रे चन्ना के खेत, जा देखी आबे।
माँझे रे चन्ना के खेत।
हूथीले आवय मामा के बेटा
एको बिरूवा, झीक लै जाय।
जा देखी आबे, एको बिरुवा झीक लै जाय।
मामा के बेटा ला पहुँचना पातेव
छतिया मा जमातैव दुई लात।
जा देखी आबे, छतिया मा जमातेंव हुई लात।

शब्दार्थ– **अैलहे** = इधर, **पैलहे** = उधर/ उस पार, **माँझे** = बीच में, **हूथीले** = उधर से, **विरुषा** = पेड़, **झींक** = उखाड़ना, **पातेव** = पायेगा, **छतिया** = छाती, **मा** = पर, **जमातैंव** = मारूँगी।

बैगिन कहती है– चलो। हम चने का खेत देखकर आते हैं। जिसके एक तरफ जंगल है, दूसरी तरफ पहाड़ है। बीच में खेत है। उधर से मामा का बेटा आयेगा, तो चने के पौधे उखाड़कर खाने लगेगा तो उसकी छाती में एक लात जमा दूँगी। क्योंकि चने की फसल बड़ी मुश्किल से अच्छी आई है और वह मुफ्त में चने उखाड़कर ले जायेगा। ऐसा मैं होने नहीं दूँगी।

ओरी सीचाई ले झोड़ी, सीचाई ले।
सीचय वा, झिला–मिला धार।।
जा देखी आबे,
सीचय वा झिला मिला धार।।

एको मा पाये झींगा कुतरिया,
एको मा वा काछू नहीं आय।
जा देखी आबे
एको मा वा, काछू नहीं आय।

शब्दार्थ– **ओ री** = अरे, **सीचाई** = उलीचना, **झोड़ी** = नदी नाला, **झिलमिला** = झिलमिल, **कुतरिया** = कतरी/ मछली, **काछू नहीं** = कुछ नहीं, **आबे** = आये।

मछली पकड़ने के लिये चाहे नदी का पानी सींच लो। चाहे नाले का सींच लो। अथवा नदी की बहती झिलमिलाती धारा को रोक लो। कितना ही पानी उलीच लो। एक भी झींगा या कतरी मछली नहीं मिलती। आजकल पानी में मछलियों का टोटा हो गया है। एक मछली तक हाथ नहीं लगती। मूढ़ (बाँस की डसिया) खाली की खाली रह जाती है।

अनक पछोरेंव, झनक पछोरेंव
रस के राँधेव खीर रे, हारी रे हाय.... ।
रसके राँधेंव खीरे रे,
नचैया टूरनला
नीवत बला
एवं वा कैसे
रोवय पछीत रे।
वा कैसे रोवय
पछीत रे।
वाह रे वाह रे हाय... ।

शब्दार्थ– **अनक** = चावल बिनना, **झलक** = पछोरना, **रस के** = अन्न के, **नचैया** = नाचने वाली, **टूरनला** = लड़कियों को।

मैंने अच्छी तरह चाँवलों को सूपे में रखकर बीना। उन्हें पछोरकर मीठी मधुर स्वादिष्ट खीर बनाई। उसमें शहद मिलाया। नाचने वाली लड़कियों

को विशेष रूप से आमंत्रित किया है। तुम लोग घर के पीछे जाकर क्यों रो रही हो? तुम्हें रोने की जरूरत नहीं है। मैंने तुम्हारे लिए खीर बनाई है। खाओ और खूब नाचो। रोने की आवश्यकता नहीं है।

हरी के हाय,
चन्ना ला दैय के,
घोड़ला खूटेंव
कौदिला दैय के
भैंस रे ...
हरी रे हाय .... ।
काँदिला दैय के
भैंस रे ।
माचीला दैय के,
समधी ला जोड़ेंव,
बेटीला देय के,
दमाद रे।
हरी रे हाय,
बेटी ला दैय के
दमाद रे ।
वाह रे वाहरे हाय.... ।

शब्दार्थ- **चन्ना** = चना, **खूँटेंव** = खूँटे पर, **काँदिया** = हरा घास या चारा, **माची** = आसन।

अरे! चने का चबीना देकर घोड़े को खूँटे पर बाँधना चाहिए और काँदी वानी विशेष प्रकार की हरी घास देकर भैंस को खूँटे पर बाँधना चाहिए। इससे घोड़े से अच्छा काम और भैंस से अच्छा दूध पाया जा सकता है। समधन को विशेष आसन (माची) देकर सम्मान पाया जा सकता है। इसी प्रकार दामाद को अपनी बेटी देकर दामाद का पवित्र रिश्ता पाया जाता है। बेटी को देकर दामाद पाया जा सकता है।

डगमग-डगमग सड़ई के रूखवा,
धजा गाड़े आकाश रे।
हरी रे हाय....
धजा गाड़े आकाश रे।
सीता मैया चढ़के देखय,
राम चले बनवास,
अरे हाँ, राम चले बनेवास रे।
वाह रे बाह रे हाय।

हवा चल रही है। सरई का पेड़ हिल-डुल रहा है। हवा के झोंकों से इधर-उधर झुक रहा है। नम रहा है। इसे देखकर बैगा बिलमा गीत गाता है- डगमग-डगमग इधर-उधर सरई का वृक्ष हवा से हिल रहा है। सरई पेड़ की फुनगी पर धजा यानी ध्वज बँधा हुआ है। वह भी हवा में तेजी से फरफरा रहा है। आकाश में उड़ता दिखाई दे रहा है। ध्वज लहरा रहा है। उसी सरई पर चढ़कर सीता (बैगा स्त्री) अपने राम (पति) के आने की राह देख रही है। हवा का संकट गहराया है। बैगा स्त्री जंगल में अकेली है। उसके बैगा पति की बेसब्री से राह देख रही है। (राम वनवास में संभवतया सीता को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा हो, हो सकता है, इसलिए गीत में सीता का उल्लेख आया है।)

हरी रे हाय,
फाटक बने है तोर लकेना रे।
कुदेना, फाटक बने है लकेना रे कुदेना रे।
अरे भला केरा बने रखवारे रे।
अरे भला केरा बने रखवार रे।।
ओना बरोबर, तोर चोला झलक,

थैय, लैजा जादू मार।
अैयना बरोबर तोर चोला झलक,
थैय लय जा जादू मार।
वाह रे वाहरे हाय।

शब्दार्थ- **फाटक** = दरवाजा, **लकेना** = आने-जाने के लिये, **कुदेना** = कूदने के लिये, **केरा** = केला।

दरवाजा आने-जाने के लिये बनाया जाता है। दरवाजे को फलांग कर जाया और आया जाता है। आँगन के द्वार पर लगे केले के पेड़ इसके पहरेदार होते हैं। साक्षी होते हैं। दर्पण की तरह तेरा सुन्दर चेहरा है। तेरी देह भी सुन्दर और जवान है। तुम्हें देखकर कोई भी आकर्षित हो सकता है। कई युवा तुम्हारी झलक पाने के लिये लालायित रहते हैं। तुम्हारी सुन्दरता की चारों ओर चर्चा है। एक दिन कोई भी युवा तुम पर जादू चलाकर अपने साथ ले जायेगा। बिलमा समूह विवाह गीत हैं।

अकादमी द्वारा प्रकाशित अनुषंग पुस्तिकाएँ

बघेलखण्ड के लोकगीत
बघेलखण्ड में परम्परागत रूप से गाये जाने वाले गीत
संकलन-लखन प्रतापसिंह 'उरगेश' मूल्य-35/-

भरथरी
छत्तीसगढ़ी लोक गाथा भरथरी पर केन्द्रित
संकलन-नंद किशोर तिवारी, मूल्य-50/-

गणगौर
निमाड़ी आनुष्ठानिक पर्व गणगौर के परम्परागत गीत
संकलन-बसंत निरगुणे/रमेश चन्द्र तोमर, मूल्य-50/-

मालवा के लोकगीत
मालवा अंचल में विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले परम्परागत गीत
संकलन-चन्द्रशेखर दुबे, मूल्य-50/-

बुन्देलखण्ड के संस्कार गीत
बुन्देली संस्कार, विधि-विधान पर केन्द्रित गीत
संकलन-सुधीर तिवारी/माधव शुक्ल 'मनोज', मूल्य-50/-

कहे जन सिंगा
निमाड़ी संत सिंगाजी और उनके निर्गुण भजन
संकलन-डॉ. श्रीराम परिहार, मूल्य-50/-

बसन्त गीत
मौखिक साहित्य के भोजपुरी बसंत गीत
संकलन-कर्मेन्दु शिशिर, मूल्य-50/-

ईसुरी
बुन्देली के अद्वितीय कवि ईसुरी और उनकी फागें
संकलन-लोकेन्द्र सिंह नागर, मूल्य-50/-

कुमाऊँनी लोकगीत
कुमाऊँ की लोक परम्परा के गीत
संकलन-डॉ. देवसिंह पोखरिया, मूल्य-50/-

कहनात
बुन्देली लोकोत्तियाँ और कहावतें
संकलन-रमेश दत्त दुबे, मूल्य-50/-

कृष्ण लीला गीत
ब्रज की लोक परम्परा के श्रीकृष्ण भक्ति गीत
संकलन-रामनारायण अग्रवाल, मूल्य-50/-

आंचलिक प्रेमगीत
मध्यप्रदेश के जनपदीय प्रेमपरक गीत
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-50/-

जनजातीय प्रेमगीत
मध्यप्रदेश जनजातीय प्रेमपरक गीत
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-50/-

पूर्वांचल के लोकगीत
अवधी और भोजपुरी संस्कार गीत
संकलन-बी.एल. द्विवेदी, मूल्य-50/-

निमाड़ी लोक गीत
निमाड़ी लोक जीवन सम्बन्धी गीत
संकलन-रामनारायण उपाध्याय, मूल्य-50/-

मालवा की लोक कथाएँ
मालवा अंचल में परम्परागत रूप से प्रचलित लोककथाएँ
संकलन-प्रहलाद चंद्र जोशी, मूल्य-50/-

बुन्देली का फाग साहित्य
बुन्देली फागें तथा मूर्धन्य फागकार
संकलन-श्याम सुन्दर बादल, मूल्य-50/-

मध्यप्रदेश का लोकनाट्य माच
मध्यप्रदेश के मालवा अंचल की लोकनाट्य परम्परा
संकलन-डॉ. शिवकुमार मधुर, मूल्य-50/-

पाबूजी की पड़
राजस्थानी चरित नायक और लोक देवता पाबूजी की शौर्य गाथा
संकलन-डॉ. महेन्द्र भानावत, मूल्य-50/-

ख्याल अलीबख्श
प्रसिद्ध कवि, गायक तथा कृष्ण भक्त अलीबख्श और उनका ख्याल
संकलन-रेवती रमण शर्मा, मूल्य-50/-

बिहार के संस्कार गीत
जन्म से मृत्यु तक के अवसरों पर गाये जाने वाले गीत
संकलन-विन्ध्यवासिनी देवी, मूल्य-50/-

बसन्त के रंग
बुन्देली लोक कवि ईसुरी की फागों का चयन
संकलन-रमेश गुप्त, मूल्य-50/-

वृक्ष पुराण
लोक परम्परा में वृक्षों का महत्त्व
संकलन-महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य-50/-

तँवरधारी संस्कार गीत
चम्बल क्षेत्र के संस्कार गीतों पर केन्द्रित
संकलन-भगवान सहाय शर्मा, मूल्य-50/-

गोंड जनजातीय गीत
गोंड जनजातीय विविध अवसरों के गीतों पर केन्द्रित
संकलन-रूपसिंह कुशराम, मूल्य-50/-

मालवी कथाएँ
मालवा की प्रचलित लोक कथाएँ
संकलन-डॉ. एच.एस. गुगालिया, मूल्य-50/-

बुन्देली वैवाहिक गीत
बुन्देली वैवाहिक गीतों पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. सुधा गुप्ता, मूल्य-50/-

कुमाऊँनी गाथा राजूला मालूशाही
कुमाउँनी गाथा पर केन्द्रित
संकलन- डॉ. देव सिंह पोखरिया, मूल्य-50/-

कोरकू संस्कार गीत
कोरकू जनजातीय संस्कार गीतों पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

भीली लोक कथाएँ
भील समुदाय में प्रचलित कथाएँ
संकलन- गोविन्द गेहलोत, मूल्य-50/-

निमाड़ी गाथा रायसल
निमाड़ी गाथा पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

ढोलाकुँवर
कोरकू जनजातीय गाथा
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

काल दर्शन
भारतीय काल परम्परा पर केन्द्रित
संकलन-महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य-50/-

भील जनजातीय गीत
भील जनजाति के संस्कार गीतों पर केन्द्रित
संकलन-गोविन्द गेहलोत/महेश चन्द्र शांडिल्य, मूल्य-50/-

बुन्देली गीत
बुन्देलखण्ड अंचल में प्रचलित संस्कार गीत
संकलन-पुष्पा खरे, प्रवीण खरे, मूल्य-50/-

भीली कथाएँ
भील जनजाति का कथा साहित्य
संकलन-डॉ. एच.एस. गुगालिया, मूल्य-50/-

संस्कृति सलिला नर्मदा
नर्मदा के तटों पर केन्द्रित निबन्ध
संकलन-डॉ. श्रीराम परिहार, मूल्य-50/-

बारेला
जनजातीय जीवन और साहित्य पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. गुलनाज़ तँवर, मूल्य-50/-

सौंर
बुन्देलखण्ड में निवासरत जनजाति का सांस्कृतिक अध्ययन
संकलन-डॉ. ओमप्रकाश चौबे, मूल्य-50/-

कहावत कथांजलि
बुन्देली कहावतों पर आधारित कथाएँ
संकलन-रमेश गुप्त, मूल्य-50/-

भीली गीत एवं कहावतें
भील जनजातीय की वाचिकता
संकलन-डॉ. बद्री मालवीय, मूल्य-50/-

पाण्डवों की भारत गाथा
राजस्थानी आख्यान पण्डुन के कड़े
संकलन-डॉ. महेन्द्र भानावत, मूल्य-50/-

कोरकू गीत
कोरकू जनजाति के गीत
संकलन-स्व. श्री राधेश्याम शांडिल्य, मूल्य-50/-

भीली लोक माताएँ
भील जनजाति की मातृकाएँ की वाचिकता
संकलन-डॉ. पूरन सहगल, मूल्य-50/-

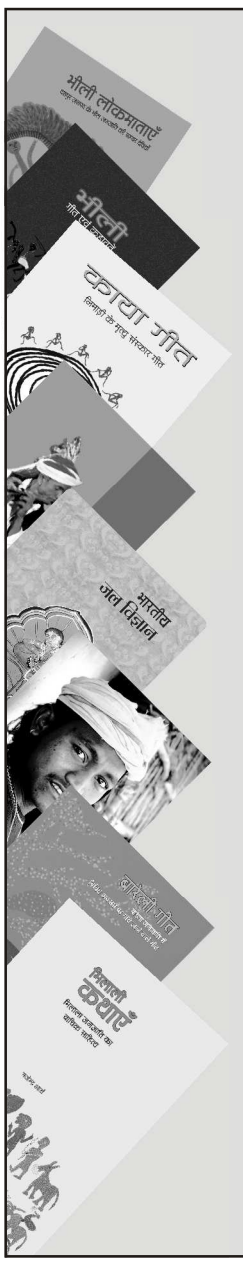

भीली गीत एवं लोकोक्तियाँ
भील जनजाति की वाचिकता
संकलन-मंगला गरवाल, मूल्य-50/-

काया गीत
मध्यप्रदेश के निमाड़ के मृत्यु गीत
संकलन-रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी', मूल्य-50/-

कोरकू जीवन राग
पर्व-उत्सव और त्योहार के गीत
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

भारतीय जल विज्ञान
पुरातल जल विज्ञान पर भारतीय लोक चिन्तकों के विचार
संकलन-महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य-50/-

बैगा गीत
बैगा जनजाति के प्रचलित पारम्परिक गीत
संकलन-अर्जुनसिंह धुर्वे, मूल्य-50/-

बारेली गीत
बारेला जनजाति के विविध अवसरों के गीत
संकलन-लक्ष्मीनारायण तिवारी/ सदाशिव कौतुक, मूल्य-50/-

भिलाली कथाएँ
भिलाला जनजाति का वाचिक साहित्य
संकलन-गजेन्द्र आर्य, मूल्य-50/-

गणगौर गीत
भील जनजाति के उत्सव सम्बन्धी गीत
संकलन-भानुशंकर गेहलोत, मूल्य-50/-

भोजपुरी-उड़िया लोकोक्तियाँ
संकलन-प्रो. हरिश्चन्द्र मिश्र, मूल्य-50/-

पँवारी गीत
पवारी का वाचिक साहित्य
संकलन-गोपीनाथ कालभोर, मूल्य-50/-

कोरो आना
कोरकू जनजाति की कथाएँ
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-